

ब्रजराज-काव्य-माधुरी

रचयिता
महाराणा जयानमिह

१ पाठक
महन्द्र मानावत एम ए

प्रस्तावना-लेखक
डॉ० मोतीलाल मेनारिया, एम ए, पी-एच डी

साहित्य सस्थान
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

प्रकाशक
साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर (राज०)



प्रथम बार
सन् १९६६



मूल्य
घाठ रुपये



मुद्रक
राजस्थान राज्य मन्त्रालय मुद्रणालय जि
जयपुर

विषय-सूची

१	प्रस्तावना	
२	भूमिका	
३	विनय माधुरी	१
४	शृङ्गार माधुरी	२१
५	पद्म माधुरी	१
६	परिगिट सख्या १	२०
७	परिगिट सख्या २	६५
८	परिगिट सख्या ३	१२६
९	मनुस्मृतिका	१३२
		१५०
		१५७

प्रकाशक

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर (राज)



प्रथम बार
सन् १९६६



मूल्य
आठ रुपये



मुद्रक
राजस्थान राज्य मन्त्रालय म ग्यालय नि
उदयपुर

विषय-सूची

१	प्रस्तावना	१
२	भूमिका	
३	विनय माधुरी	२१
४	शृङ्गार माधुरी	१
५	पद्म माधुरी	२३
६	परिनिष्ठ सख्या १	६१
७	परिनिष्ठ सख्या २	१२६
८	परिनिष्ठ सख्या ३	१२०
९	अनुक्रमणिका	१२०
		३००



समर्पणा

भारतीय संस्कृति, भारतीय कला एव भारतीय साहित्य

के

अन्यतम उनायक

वीर-कुल भूषण

महाराणा राजसिंह

को

सादर समर्पित

प्रस्तावना

भूतपूर्व मराठा राज्य न केवल गौरव-पराक्रम का अद्वितीय धर्म, मस्तिष्क, साहित्य और कला का भी केंद्र रहा। इतना ही नहीं, इस खण्ड के अनेक नरेशों व उनके मन्त्रियों ने स्वयं साहित्य-रचना कर भारतीय वाङ्मय को श्रीमत्पत्र बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(१) महाराणा कुंभा—य महाराणा माकल के पुत्र थे। इनकी माता का नाम सोमामदेवा था। इन्होंने स० १४६० म म० १५२४ तक राज्य किया। ये बड़े प्रतापी राजा हुए। इन्होंने अपने वाहुजल में मराठ जैसे छोटे राज्य का एक महान राज्य बना दिया। ये शिवशास्त्र के अनुयायी तथा शिव कायों के प्रेमी थे। मराठा में छोट-बड़े ८४ शिव हैं। इनमें ३२ शिव कुंभाजी के बनवाये हुए हैं। इनके अतिरिक्त महान मंदिर जनालय आदि भी कई बनवाये। चितौड़-स्थित कीर्तिमन के निमाता यही थे। यह स्वयं भारतवर्ष में अपने देश का एक ही है। स० १४८७ में कुंभाजी ने माहूर के मुसलमान महमूदाशाह शिवजी का प्रथम चार पगल्ल किया था। कहा जाता है कि यह कीर्तिमान उमका शाहजारी में बनवाया गया था।

महाराणा कुंभा बहामुजा प्रतिभा के नरेश थे। वे क्षीर मन्तरी राजनानिष और विद्यानुरागी थे। वे श्रुति, मामाया, उरनिषद व्याकरण आदि विभिन्न विषयों का इनको भारी ज्ञान था। वे मस्तिष्क भाषा के उद्भूत विज्ञान, नाट्यशास्त्र के अनुयायी और प्रतिभावान् कवि थे। वे गद्य और पद्य दोनों विद्वान् थे। इन्होंने सगीत विषयक एक ग्रन्थ बनायी—सातवराज और नृदप्रबंध। इन ग्रन्थों के अन्तर्गत सगीतसौभाग्य नामक एक और ग्रन्थ का

उल्लेख स्व० डा० गीरीशकर-हीराचंद आभा तथा हरविलास सारडा ने अपने ग्रंथ में किया है। परंतु यह संगीतराज से भिन्न कोई दूसरी रचना नहीं है। वस्तुतः संगीतराज ही का दूसरा नाम संगीतमीमांसा है, जैसा कि डॉ० आम्बेडकर ने अपने कैटेलागस कैटेलागरम् में संकेत किया है (पृष्ठ ६८६)। इन्होंने कवि बाण कृत चंडीशतक की वृत्ति और जयदेव कृत गीतगोविन्द पर रसिकप्रिया नाम की टीका लिखी थी। चंडीशतक की वृत्ति की एक हस्तलिखित प्रति का पता हाल ही में लगा है। यह प्रति जैन भवन ग्रंथालय कलकत्ता में सुरक्षित है। यह स० १६७५ में लिखी गई थी। इसका लेखक खरतरगच्छीय जैन विद्वान् सकलकार्ति था। इसमें २४०० श्लोक हैं। गीतगोविन्द की रसिकप्रिया टीका निणयसागर प्रेम, बम्बई में प्रकाशित हो चुकी है। चित्ताड के कीर्तिस्नभ का प्रशस्ति में विदित होता है कि इन्होंने चार नाटक बनाए थे जिन में महाराष्ट्री एवं कर्णाटी के साथ २ मेवाड़ी भाषा का प्रयोग किया गया था। राजस्थानी का बाली में साहित्य-निर्माण का यह सबसे पहला ऐतिहासिक उल्लेख है —

यनाकारि सुरारिसगतिरसत्रस्यात्तिना नदिनी
 वृत्तिर्यादृतिचातुरीभिरतुला आगातगावित्क ।
 श्लोकार्णिकमदपाटमुमहाराष्ट्रादिके यादय—
 द्वाणीगुणमय चतुष्टयमय सप्ताटकाना यथात् ॥१५८॥

हरविलास सारडा के मतानुसार कुभाजी ने संगीतरत्नाकर की टीका लिखी थी। यह टीका अप्राप्य है। इसीलिए यह कहना कठिन है कि यह गान्धर्व के सगानरत्नाकर की टीका है अथवा इमा नाम के किसी अन्य ग्रंथ की टीका। अनेक भिन्न-भिन्न रागा तथा ताना के साथ गाए जानेवाली अनेक देवनाग्री की स्तुतियां भी बनाई थीं जो एकत्रिगमाहात्म्य में संगृहीत हैं। इन स्तुतियों में कुभाजी की ऊंची काव्य-प्रतिभा और असाधारण सौंदर्य-बुद्धि नभक्तों है।

कुभाजी सारे हुए गायक थे। यही वाद्यों के परम प्रवीण थे।

सकलकविनृपातीमीनिर्माणिक्यराशि—
 मधुररसितवीणावाद्यवैश्वर्यवित् ।

मनुकरकुवतीनाहारि रमाजी
जयति जयति कुमा भूगौर्या गुमाली ॥१६०॥

—कीर्तिस्वप्न का प्रशस्ति ।

महागणा कुमा स्वयं लिखन यं श्रीर अपन आश्रित विद्वाना म
लिखवान भी य, जिनका स्तनक यहाँ प्रच्छा मन्मान शाना ॥ चिनोड के
कातिस्वप्न की प्रशस्ति का मूल लखन श्रिय था । उमरा पूर्वोद्धि निष्कर
जब शत्रि मर गया तब कुमाजी ने उमरा पुत्र कवि महा म उमका
उत्तगद्ध निष्वाया श्रीर उम दा मनवान हाथा मोन की डही वाल दो
चेंबर श्रीर एक छत्र प्रदान कर सम्मानित किया । जैसा कि ऊपर कहा जा
चुका है कुमाजी निष्वायास्त्र क अनुरागी थे । इन्होंने जय श्रीर श्रवराजित क
मतानुमार कीर्तिस्वप्न की रचना का एक ग्रंथ बनाया । साथ ही अपने
आश्रित मूत्रधार महन स देवताभूति-प्रकरण प्रासादमहन राजवस्तन,
स्वप्नमहन वास्तुमहन, वास्तुमार वास्तुगाम्य श्रीर स्पावनार य आठ
ग्रंथ बनवाय । महन क भार्दनाया न वास्तुमजरो श्रीर महन के पुत्र
गाधिद न उदारधारणी कनानिधि एक द्वारदापिका नामक ग्रंथ की
रचना की ।

कुमाजी की मृत्यु बहुत ही दुःखद स्थिति में हुई । एक दिन जब य
कुमाजय में मामास्त्र क मंदिर क पास जलायय क किनारे बैठे थे तब
इनके नवन बह पुत्र उत्पत्ति न इनका अचानक कटार भौंक कर मार
झारा । यह घटना स० १५८५ में हुई ।

महागणा कुमाजी की रचना क कुछ उदाहरण यहाँ दिए जाते हैं —

—उद्दमाचष्टाप्रम्य महो माह्वर तुम ।
मप्रकागे प्रकागन मच्छगजोवराजय ॥१॥

या गीतानुगता धनस्त्रपरमा वाद्यावनद्धानना
नगायो कनताच्छरुगिपरा नृयप्रधानाऽय्यय ।
भाचत्मपरमेकगम्यमाहिमा विभ्राजत चागिनि
सगानाय निशाच शुद्धमृम तम्भ परम्भेनम ॥२॥

निमथ्यागमसागर परिलसाद्वानामथाद्रिणा
सगातामृतमुज्जहार जगतामत्यद्रुतान दम् ।
स्फूजमोहमहाहिदप्रजनतानारापनुत्यै नम-
स्तस्मै श्रीभरतायदियमुनय स्याच्चद्रचूडात्मने ॥३॥

यो वदादचतुरा वगाह्य चनुरा वक्त्रैश्चतुर्भिश्चतु-
वर्गाप्यथै चतुरश्रमुख्यरुचिर वर्णैश्चतुर्भियु तम् ।
विमानैकनिवतनायभरताचार्याय राणीचिता—
चाराह चतुरङ्गनृत्यमदिशत्तस्मै नमा ब्रह्मणे ॥४॥

श्रुत्यान्स्वविभूतिभिजगदिद यार्प्यैव नित्यस्थिता
दुःखा मूलनमूलहेतुरखिलस्वर्वासिवाद्यप्रिया
ब्रह्मानन्दरसातिगायिसुख्या ब्रह्मादिभि सस्तुता
विद्या वाचन नूतना विजयत सगीतरूपा गिवा ॥५॥

—सगातराज (पाण्यरत्नकाव)

(२) मीरासाह—इनका जन्म स १५५५ के लगभग कुडकी नामक गाव म हुआ । य महता क राठाह राव ट्पाजी क चतुथ पुत्र रत्नमिह का बटी थी । मीरा जब छान्गे था तय इनकी माता का देहात हो गया । एसनिय इनक दादा राव ट्पाजा न इह कुडकी मे अपने पास महता युवा लिया जहाँ इनका बापकाल यतीत हुआ । लगभग १६ वष की आयु म इनका विवाह मवाह क महाराणा सग्रामसिंह प्रथम (म० १५६६-१५८४) के पाटवी कुंवर भाजराज क माय भ्रा । परंतु विवाह क दातान वष बाद ही भोजराज को मृत्यु हो ग । इसमे इनका मन समार म उचट गया और य अरना अधिका समय नजन कानन, पूजापाठ एवं मंसग म व्यतात करन लगी । धोर २ इनक मंसग भ्रा की कीर्ति चारों ओर फैल ग और भक्त जन इनक स्तन करने क निये चित्तोह भ्रान लगे । उम समय इनक पवर विक्रमादित्य चित्तोह पर राज्य कर ल थे । मीरा का मातु-मभागम भ्रा उन्को पम लगी लाया । ओर व उन भानि-भानि क कप ले लगे । तग ओकर मीरा चित्तो म मन् चली ग । कुट्ट लिन व वली रही । बा म पुंकर मपुरा वृत्तवन भ्रा नाय-स्थाना म ली दु डारिका पचा । कहा जाना है कि वही म० १५८३ क भ्रामराम इनका स्थावमान हुआ ।

मीराबाई क रच पात्र ग्रथ बताया जात है— नरसीजी रा माहरा, गीतगोविंद की टीका सत्यभामाजी नु रसगू, रागसोरठ और गग गाविंद । परंतु वास्तव म य ग्रथ मीराबाई क बनाम हुए नहा हैं । मीरा न केवल पुटनर पद लिख हैं जिनकी संख्या २००-२५० क लगभग है ।

मीराबाई न राजस्थानी और ब्रजभाषा दोनों में कविता की है । इनके कुछ पद राजस्थानी म और कुछ ब्रजभाषा म हैं । कुछ में दाना का मल पाया जाना है ।

मीराबाई की रचना म कृष्ण भक्ति का प्राधान्य है । उसम भक्ति और शृंगार दोनों का सुंदर समन्वय हुआ है । मरल ता वह इतनी है कि अपन लोग भी उम यहुत आमाना स समझ लत है । अनुभूति की सचा, मुलभी हुई भाव व्यजना एव स्त्री-मुलभ कामलता इनकी कविता की इतर विशेषताए हैं । इनके दा पद यहाँ दिए जात हैं —

(१)

जावा द गुनानी कृष्ण म्हीर घर काम छे ॥
 ये हो सगर नर महर क ब्रज बरसान म्हीरो गाम छे ॥१॥
 जाना नही तो पूछ लीजा श्री राधा म्हीरा नाम छे ॥२॥
 मीरी क प्रभु गिरधर नागर नाम दीको बदनाम छे ॥३॥

(२)

पग घुँघरू बाँध मारी नाचो र ॥
 मैं ता मरे नारायण की आप ही हो गई दामी र ॥१॥
 लाग कहै मीरी भई बाधरा यान कहै कुन नामी र ॥२॥
 विष का प्य ना राणाजी भेज्या पीवन मीरी हाँगी र ॥३॥
 मीरी क प्रभु गिरधर नागर सहज मिन अविनामी रे ॥४॥

(३) महाराणा उदयसिंह—वर्तमान उदयपुर नगर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह ने म० १५६९-१६०८ तक राज्य किया था । ये महाराणा सदासिंह (प्रथम) राणा सांगा क पुत्र थे । इनके शासन समय म क्विली क तोशरा गावा हुआ । ये कविता करत थे । इनके रच दिगल भाषा क दो गान कवि गिरधरदास न अपन गियनाम-प्रकाश ग्रंथ म उद्धृत किए हैं । ये

गीत प्राचीन लिखित संग्रह-ग्रंथो म भी देखने म आत हैं । एक गीत यहा दिया जाता है —

(१)

कहै पतसाह पता दा कूँची
 धर पलटिया न कीजै धोड ।
 गढ़पत कहै हम गढ़ म्हारी,
 चूडाहरी न दे चीतीड ॥

(२)

गोळा नाळ चत्रग गाजे
 गहै मीर साधीर धणी ।
 जग्गा मुन नह द जीवता,
 ताजो लोचन प्रिया तणी ॥

(३)

भटका भाड आभडा भाडे
 रवियो दुरग वटे रिम राह ।
 ऊभे पते न चणियो अकबर
 पडिये पत चणियो पतसाह ॥

(४)

अकबर नू अह चाण राण नू
 मुगला मारण कियो मतो ।
 उन्पामिध राण मम भावै
 पनटो घर नस धणी पती ॥

(४) महाराणा प्रतापसिंह—य महाराणा उन्पामिह क ज्येष्ठ पुत्र थ ।
 इनका जन्म स० १५८७ में हुआ । प्राचीन बर्णिया आदि में इनकी माता का
 नाम जीवन्कुवर निखा मिनता ३ । वन्पानी क सानगर अन्वैराज
 [रणधीरोत] का बन्गी थी । स० १६०८ में जब य मवाह का महा पर येत तब

चित्तौड़ और मवाह के अधिक भाग पर मुगल सम्राट अकबर का आधिपत्य था। अकबर चाहता था कि मवाह पर उसका अधिकार बना रहे और राजस्थान के अन्य राजा महारानाओं की तरह प्रताप भी उसकी अधीनता स्वीकार करले। परन्तु प्रताप ने यह मजूर नहीं किया और आयुष्यन्त अकबर से सघष करत रहे। इस दीर्घकालीन सघष के कारण उनकी अनेक कष्ट भलने पड़े, वन वन भटकना पड़ा और कई बार बन्द मृत साकर जीवन निवाह करना पड़ा। परन्तु अपनी प्रतिभा, अपने धैर्य एवं धम को फिर भी न छोड़ा। इतना ही नहीं, चित्तौड़ माइनगर आदि दा-चार स्थाना को छोड़कर इन्होंने समूच मवाह को पुन अपने अधिकार में कर लिया। इनका देहांत स० १६५३ में ५५ वर्ष की आयु में हुआ।

य दिग्गज भाषा में कविता करत थे। इनके निम्नलिखित दोहे राजस्थान में बहुत प्रचलित हैं। ये दाहे इन्होंने बीकानेर के गठौड़ पृथ्वीराज को उनक लिख एक पत्र के उत्तर में लिखे थे —

तुरक बहामी मुन पती इणतन मू इरलिंग ।
 ऊगै जाही ऊगसी, प्राची बीच पनग ॥१॥
 गुसी हैत पीयन कमध, पटवी मू छा पाण ।
 पछटण है जेन पती कलमा सिर बवाण ॥२॥
 मांग मू ड सहसी सका मम जस जहर सवाण ।
 भड पीपल जीना भना वेण तुरक मू बाद ॥३॥

इन्होंने अपने षोड चेटक की स्मृति में एक ग़ाक काव्य [Elegy] भी बनाया था जिसमें १०० कवित्त (छप्पय) थे। इस काव्य की एक हस्त लिखित प्रति 'प्रतापचरित्र' के रचयिता स्व० बागूचंद बमरसिंह जी, साधारण, ने कुछ वर्ष पूर्व राजनगर के एक माली के पास दगी थी पर वह हस्तांत नहीं हो सकी।

(५) महाराणा जयसिंह—उनका जन्म स १६१६ में हुआ। ये महाराणा प्रताप के पुत्र और महाराणा उदयसिंह के पौत्र थे। इनका माता का नाम अन्नबट था। स० १६५३ में इनका राज्याभिषेक हुआ। अपने पिता की तरह ये भी बड़े स्वामिन्सानी बट-महिष्यु धार स्वान्त-स्व-श्रेणी पुण्य थे। इनने अपने पिता की नीति का अनुसरण किया और बराबर मुगल सत्ता से लोहा

लेन रह। अत में इनके पुत्र कणसिंह ने अपने सरदारों के आग्रह पर तत्कालीन मुगल सम्राट जहांगीर से सधि करली। इसमें इनको बड़ी ग्लानि हुई। इन्होंने राजकाज छोड़ दिया और एका तवास में रहने लगे। इनका देहांत म० १६७६ में हुआ। इनके साथ इनकी दस राणियां भी खवासे और नौ सहेलियां सती हुईं। उदयपुर में जिस स्थान पर इनका अग्नि संस्कार हुआ वहां इनकी छतरी अभी तक विद्यमान है।

महाराणा अमरसिंह कवि ही नहीं, कवि काव्यदो के पृष्ठपोषक भी थे। इनकी आत्मा में अमरविनाद नामक एक ग्रंथ रचा गया था। यह ग्रंथ मवाही वाली में है। इसमें हाथिया क विषय की अनेक बाने बताई गई हैं। इसके रचयिता का नाम धव्य तरि था। वह बालाचाम का पुत्र और जाति का ग्राह्य था।

इनकी कविता विनोप नहीं मिलती। बवल दा दोहे मिल है। ये दोहे इन्होंने मित्र अरदुरहीम खानखाना को लिख भेजे थे —

गौड कछाहा राठवड गासा जोग बरत ।
 कहजा खानाखान नै बनचर हुआ फिरत ॥१॥
 तबरा मूँ दिनी गद राठोडा बनयज्ज ।
 अमर पयपै खान नै वा त्तिन दासै अज्ज ॥२॥

इनके उत्तर में खानखाना ने महाराणा का निम्नांकित दाहा लिख भेजा जो राजस्थान में बहुत प्रचलित है —

धर रहसी रहसी धरम खप जाती गुरुमाण ।
 अमर विसमर ऊपरा राणा नहवा राण ॥

(६) महाराणा रावसिंह—इनका जन्म म० १६८६ में हुआ। ये महाराणा जगतसिंह (प्रथम) के पुत्र थे। इनका माता का नाम जनाण था। वह मन्त्रियां राठोड परिवार का थी। बाल्यात् औरगवत न जय जजिया पुन प्रचलित किया तब इन्होंने उसका धार विगद्य किया और उसकी इच्छा के विरुद्ध नाथपुर के महाराजा जमवतसिंह के बानव अज्ञोतसिंह का एव दबर्जिया का कर भक्षण का गवद न के सुमाया का मवात में आश्रय दिया। इनके बाल्यात् के कारणानि अज्ञोतसिंह का उगा और उनमें मवात पर

चंगल की। परन्तु यह लड़ाई उसके लिए महंगी पड़ी। महाराणा की समर पटना और सैन्य शक्ति के सामने गद्दी सेना के पाँव उतर ड गये और वह तीन तरफ़ हाँ गई। यह देखकर बादाशाह ने संधि का बात चला ड किंतु इसी बीच महाराणा का दहान हाँ गया जिससे संधि-बाना टूट ग। यह घटना म० १७७७ म हुई।

महाराणा राजसिंह स्वयं कवि और कविता के आश्रयता थे। उनके समय में संस्कृत का सुप्रसिद्ध राजप्रशस्ति महाकाव्य लिखा गया जो राजसमय की पाल पर पंचवीस गिताओं पर उल्लेख है। यह भारत में म मधुसूदन का गितावली तथा गिलाशा पर खुदे हुए ग्रंथों में सबसे बड़ा है। इसमें २४ मंग हैं और १०६ श्लोक। यह काव्य काल कल्पनाप्रसूत नहीं है। यह इतिहास और साहित्य दोनों दृष्टियों में महत्त्व का है। इसके अतिरिक्त राजरत्नाकर, राजविजय राजद्रव्य प्रभृति और भी कई ग्रंथ इनके आश्रय में लिखे गये थे। यह समस्त साहित्य उत्तरपुर के सरस्वती भंडार में सुरक्षित है। महाराणा का बनाया हुआ एक छापखाना यहाँ दिया जाता है —

कहा राम कहा लक्षण, नाम रहिया रामायण ।
 कहा कृष्ण बलरव प्रगट भागान पुरायण ॥
 वाग्मीक सुक ध्यास कथा कविता न करता ।
 बुण सत्प सेवता, ध्यान मन कवण धरता ॥
 जग भ्रमर नाम चाहा जिक, सुण मजीवण आग्ररा ।
 राजसी कह जग राण रो पूजा पाव कवीसरा ॥

(८) महाराणा जयसिंह—य महाराणा जयसिंह (द्वितीय) के पुत्र थे। स० १८१७ म मवाड की गद्दी पर बैठे। य बुद्ध काधी और तज स्वभाव के थे। इसलिये अपने सरदार उमरावा से भगडा कर बैठे। फतवालय मवाड गृह-बन्ध का घर बन गया और उमे बड़े प्रकार का हानियाँ उठानी पड़ी। महाराणा को गिकार का बन्धन पोक था। एक दिन य वनी के राव अजीत सिंह के साथ जंगल में सूँघर की गिकार करने गये। वहाँ अजीतसिंह ने यथायक इनकी छाना में दरली भोंककर इनका मार डाला। यह घटना स० १८२८ म २०।

के बनाप 'इक्ष्वकमन' के उनर म 'रसिक्चमन' लिखा जिसमें म दा
 ाहे यहा दिय जात है —

इत्क अश्वघा अजब है गजब चाट है पार ।
 तन का तिनके सम गिनै, मो ही पावै पार ॥
 मिर उतार लाहू छिरक, उमही की कर काच ।
 आसिक बपर परि रहै उमो काच के बोच ॥*

(८) महाराणा भीमसिंह—य महाराणा भरिसिंह (द्वितीय) के पुत्र
 थे। इनका जन्म स १८२४ म हुआ। इनकी माता का नाम मरदारकु वरि
 या। स १८४ म य मवाह की गयी पर बैठे। उस समय इनकी आयु बवल
 दस वर्ष की थी। हमलिय इनका माता का खर खर म गामन प्रघ हाने
 गया। इनक समय में मरठों का जार जुलम मवाह म बहुत बढ़ गया था।
 माय माय सिधिया हाकर तथा पिडारिया ने भी लूट पाट मचाना शुरू कर
 लिया था। इनक गिराह तिन दहाह प्रजा का लूट और गाव के गाव जलाकर
 चल जात थे। दखत हा दखन मवाह ऊजह सा हो गया, महाराणा क खजाने
 खाली हागय और लाग मवाह छोट कर ग्रामपाम के दूसरे राजाओं की गरण
 में चल गय। विबग हाकर महाराणा का अग्र जो सरकार म सहायता लेनी
 पडो। स १८७६ म दानों क बोच मत्रि हुए जिसकी दम गने थी। इस सधि
 क फलस्वरूप अग्र जो सरकार ने मवाह राज्य का रक्षा का भार अपन ऊपर
 लिया और बनल टाक का अपना प्रथम पारिटिकल एजेंट नियुक्त किया।
 बनल टाक बढ परिश्रमी काय कुगम एव नाति नियुग यक्ति थे। उन्होंने
 उपद्रवियों का मवाह स नामानिगान मिटा लिया। सिधिया का गक्ति दूट
 गई। हाकर दुरी तरह पराम्न हुआ। मरठों ने भागकर अपन प्राणा की
 रक्षा की और विगारियो क उन इधर उधर बिखर गय। मवाह क शुभ तिन
 घाय दख लाग फिर म दहाँ आ घाकर बसन गग और मवाह की ऊजह भूमि
 पुन हरी भरा हा। घाट ही समय में मवाह क ०० गाव घाह कम्ब फिर
 न घाबाह हाय घाह उदमनुर चित्तौ नया भेववाग में नजी म व्यापार
 हाने लगा। महाराणा भीमसिंह क राज्य-विकान की मंगे प्रमुख घटना है।

यही से मेवाड़ के इतिहास का गतिपथ प्रारंभ होता है। महाराणा का देहांत स १८८५ में हुआ।

महाराणा भीमसिंह बड़े दानी और दयानु राजा थे। ये कवि और इतिहास प्रेमी भी थे। इनके दरबार में कवियाँ और विद्वानों का खूब आदर होता था। लगभग स १८७३ में जब कवि पद्माकर उदयपुर में आये तब इन्होंने उनका स्वणपद और भूषणालि दक्ष मम्मालिन किया था। इनके आश्रय में निम्ने गये दो चारण कवियों का प्रथम मिलत है—(१) भीमविनास और (२) भीमप्रकाश। भीमविलास कवि विनासजी आडा की रचना है। भीमप्रकाश का प्रणयन कवि रामदान लाल ने किया था। इस ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति सूरजमल नागरमल पुस्तकालय कलकत्ता, में है। ये दोनों ग्रंथ डिगल भाषा में हैं और इतिहास की दृष्टि से परम उपयोगी हैं। इनके द्वारा महाराणा भीमसिंह के इतिवृत्त पर अच्छी प्रकाश पड़ता है। इनका साहित्यिक मूल्य भी यथेष्ट है। दोनों ही ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित हैं।

महाराणा भीमसिंह की कविता का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

बसिया छे जो नरबिसोर
मार मन बसिया नरबिसोर ॥८७॥
बिन तेने कल नाय परत है, नाय मुहावे बछु और।
दरदवत सफरा जू तलफन सुभत और न छोर ॥१॥
दिन नहि चैन रैन नहि निद्रा, कल न परत निस भोर।
भीम राण छन छन तन छोजत, वेग मिला जो दोर ॥२॥

(६) कुंवर अमरसिंह—ये महाराणा भीमसिंह के पाठवी कुंवर थे। इनका जन्म स १८५२ में और देहांत स १८७४ में हुआ था। जयानसिंह इनके छोटे भाई थे। अपने पिता और भाई के माहात्म्य में वे भी अच्छी कविता करना सीख गये। ये प्रायः कवित्त मवेया लिखत थे। उदाहरण—

पागुन नैन नचावत नाचन शानत तार न छारत मारियाँ।
बोन बजाय अशोर उद्यावन गावत भावन मारियाँ शारियाँ ॥
पाग गिलारि नय भय मागन नारि करी अज जावन मारियाँ।
मारियाँ मीठि क रग में मारियाँ काह पिछानी में मारियाँ तारियाँ ॥

(१०) महाराणा जगन्सिंह—य महाराणा भीमसिंह क पुत्र थे। इनका जन्म १८५७ में और देहांत स १८८५ में हुआ। य व्रजभाषा के बहुत अच्छे कवि थे। इनकी कविता सरल स्वाभाविक और कणमयुर है। कविता में य अपना नाम व्रजराज लिखा करत थे। इ होने सेय पद भी यथेष्ट मात्रा मिलत हैं। इनका पूरा प्रतिवृत्त श्री महेन्द्र भानावत ने इस ग्रंथ की भूमिका में दिया है। नमूने के तौर पर इनका एक पद नीचे दिया जाता है —

राग अडाणो

सजनो प्रीतम का बस कर ले ॥टका॥

बिन अपराध मान नहि करिये प्रीत रीत सा लर ले।
इहि विधि सौ रस बस ह्वै माहन सीख कहीं चित धर ले।
हुकम अधोन रहै नित हाजर भुज भय अ क हि भर ले।
श्यामजराज रिभाय सुहागन तन मन कातू हर ले ॥

(११) महाराणा सरूपसिंह—इनका जन्म सवत् १८७१ में हुआ था। य महाराणा सरनारसिंह के छोट भाई थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् सवत् १८९९ में मवाँ की गद्दी पर बैठे। इ होने से १९ वर्ष तक राज्य किया। य बुद्धिमान यावप्रिय और प्रबोधपटु राजा थे। इन्होंने मवाँ की गामन-व्यवस्था में अनेक सुधार किये और उसकी आर्थिक स्थिति का भी सुदृढ़ बनाया। मवाँ में सती प्रथा का अन्त इहीं के राजत्वकाल में हुआ। इनकी मृत्यु सवत् १९१८ में हुई।

महाराणा सरूपसिंह बहुत पत्र लिख नहीं थे पर व्यवहार कुशल थे। इनका वातचीत का लागो पर बहुत प्रभाव पड़ा था। इनकी आकृति भयंकर थी। इसलिये इनके सामने बानने की क्रिया की हिम्मत नहीं हाता थी। ये संगीत और साहित्य के प्रेमी थे। साथ ही कवि भी थे। इनका लिखा एक पद नीचे दिया जाता है—

नैरवी

श्री एकनिग मन्म की भाँकी।

निरपन का आमा नयना का ॥ १ एकनिगा ॥

मपर चित्र फुनिद्र लिपट रह्या
 चिन्त कुँडन लाचन छवि वाकी ॥१॥
 कठ गरल रथा श्राभूपित
 भरक बनक दल पहुष अदा की ॥२॥
 गिरजा गग गनेम नदीगत
 महित अनूप अनूप समा की ॥३॥
 छवि 'सरूप' बरनी न परतु है
 बुद्धि बय लगन लिय विघना की ॥४॥

(१२) महाराणा शम्भुसिंह—य महाराणा सम्पत्सिंह के अन्तक पुत्र थे।
 इनका जन्म सन्वत् १६०८ में हुआ था। सन्वत् १६१८ में उनकी गद्दी पर बैठे।
 उस समय इनकी आयु १० वर्ष की थी। इसलिए तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट
 मजर टलर की अध्यक्षता में रिजेन्सी कौंसिल की स्थापना का काम जिसकी
 देख रक में शासन प्रबंध होने लगा। बालिग होने पर सन्वत् १६२२ में उनकी
 शासन के पूरे अधिकार मिले। इनोंने अग्रजी पद्धति पर कानून की कचहरीयाँ
 स्थापित कीं। सबके बनने तथा मस्युत और अग्रजो भाषा की पाठशालाएँ
 एवं अस्पताल खुलने का उत्तम कार्य इनके समय में ही प्रारंभ हुआ। सन्वत्
 १६३१ में इनोंने अपनी सामारिक लीला समाप्त की।

महाराणा शम्भुसिंह सुधारप्रिय विद्यानुरागी और स्पष्टवक्ता थे। य
 हिन्दी-सम्युक्त क मुनाता थे और घोड़ी सी अग्रजो भी जानते थे। इनकी
 कविता करने का अच्छा अभ्यास था। य प्रायः पद और मवया निगमन थे।
 पदा में य अपना नाम 'रसिकमनही' लिखा करते थे। इनका रचनाएँ
 सरदारगढ़ के ठाकुर शाह अमरसिंहजी के संग्रह में उपलब्ध हैं।

महाराणा ने अपना कविता बहुत सीधी सीधी भाषा में लिखी है।
 इनका कविता मोठी, नावपुरा और मामिज है। इनके पदा में एक विचार
 प्रकार की मादकता है। अत्यन्त कम करने में आती है। इनके दाएँ और
 एक सवैया हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

*मरवाण्डू ठाकुर शाह के शिष्य हैं।

(१)

१ सा २८ ३१० ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ ॥
 मोरमुक्तामाला १२ १३ १४
 १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ ॥१॥
 २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥२॥
 रगिनमाता का भावना उभा ११
 १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥३॥

(२)

का कर रात्रि का यम म
 का रात्रि का यम म ॥१॥
 का ५ वावा का य यावा
 का ६ भावा पुमम ॥२॥
 रगिनमाता का भवत रमीवा
 रीन रत्ना स्त्री क क रम म ॥३॥
 का कर रात्रि जी यात यम म ॥

मवया

जावत दरगत है जितक त्रि शरशुद्धीर भव गिरघारी ।
 त्या प्रन्ना विभीषण र ११ क्या ११ करे उता वन भारी ॥
 लायक हा तुम जात्र के पुत्र तिसी त्रि रायत याद मुहारी ।
 है जिनक मन स्यामधमो उन सीम छपूट मुहृष्टि हमारो ॥

(१३) महाराणा सतिसिंह—य बागार महाराज शक्तिमित्र क पुत्र थे । इनका जन्म स १६१६ म हुआ । महाराणा शतिसिंह की मृत्यु क पश्चात् स १६२१ में य मवाड क राजसिंहासन पर आसीन हुए । य प्रगतिशील विचारों के राजा थे । इन्होंने अनेक लक्षोपयोगी कार्य किये और मवाड की शासन-व्यवस्था का सुधार जिसमें प्रजा का बहुत लाभ पहुँचा । इनकी मृत्यु स १६४१ म हुई ।

महाराणा सज्जनसिंह विद्यानुरागी और ज्ञान विज्ञान के उन्नायक थे ।

इनके निमंत्रण पर स्वामी दयानन्द और भारत-दु बाबू हरिश्चन्द्र उदयपुर में
 प्राये और रहें थे। विदाई के समय इन्होंने भारत-दु हरिश्चन्द्र को मिरोपाव
 और दस हजार रुपया प्रदान किया। इन्होंने कविराजा श्यामलदास से
 'वारविनाद' नामक इतिहास ग्रंथ लिखवाया और उस पर एक लाख रुपया
 खर्च किया। इन्होंने राजमहलो में सज्जनवाणी विनास' नामक एक
 पुस्तकालय स्थापित किया, जिसमें हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रंथों का अच्छा
 संग्रह था। यह पुस्तकालय स २००० तक रहा। तदनन्तर सरस्वती भंडार में
 मिला लिया गया। एकर अग्रथय में सज्जनप्रकाश, सज्जनविलास सज्जनविनोद
 इत्यादि कई ग्रंथों लिख गये जिनकी हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर के मरस्वती
 भंडार में सुरक्षित हैं।

महाराणा महदय कवि और काव्य ममण थे। प्रति सामवार का इनके
 महना में कविमम्मलन हुआ करता था, जिसमें ये स्वयं भाग लेते थे। ये
 अपनी कविताएँ सुनाने दूसरों का सुनते और संगीत थे। इनकी कविताओं
 का एक संग्रह 'रमिकविनाद' नाम से प्रकाशित हुआ है। उसमें में एक कविता
 पढ़ो उद्धृत की जाती है—

निवृत्त नित रहन चहुत मतवार ।

मनु श्रुनु में मधुकर मन माहित पण प्रसून पमार ।

चल चल त्रिविध समार चहुँ दिम ताप त्रिविध बू टारे ॥१॥

विपिन पहार अपार बनावैं किमुक सुम रतनारे ।

चेत्र चंद्रिका चाण चकोरन हिम पा हरप हमार ॥२॥

पाय प्रभात गुनाव कलिन क कान परत चटकार ।

वारि मकुन विधुरे पत्रन पर वारिज छवि विस्तार ॥३॥

कोकिल दान रगाल कुकुरे पुत्र पराग पमारै ।

रमिरमनेही यह श्रुनु राजा तुम राजन उजियारे ॥४॥

(१८) महाराज चतुर्गिह—महाराणा सधामसिंह (द्वितीय) के चार
 पुत्र थे— जगतसिंह, नाथसिंह बाघसिंह और शत्रुघ्नसिंह। जगत पुत्र होने में
 सधामसिंह के बाद जगतसिंह मवाट की गयी पर बठ और नैप तीन नाइया
 की कर्मण बागाद, करजानो एक नियरता जागीर में प्राप्त हुई और
 महाराज का उपाधि मिली। महाराज चतुर्गिह करजानो के स्वामी महाराज
 बाघसिंह में छत्तीसी पीढ़ी में हुए थे। इनका जन्म स० १६३२ में हुआ। इनके

घर म बन्धा अजाण बाछर ई नै कद सुमरागा ।
 दयादृष्टि मू दस अणोनै, कद योछा म लोगा ॥१॥
 माथे हाथ केर मोरा पै, कद बोछरटा का गा ।
 इ कपूत न कबदा नै जी गुण हो आप गणोगा ॥२॥
 मासा कजे कपूत चाकरी, तो मो नी बिसरागा ।
 या त्रिप गावा टगा करै पण, आप अमरफळ दोगा ॥३॥
 या साहा आही दोहे पण, ल कैंनास चदागा ।
 आनदी मकर गोदी म आप हीज मनागा ॥४॥

(२)

पढी पढी निरसै पढी कनी काम की चाह ।
 बहै घडी ता की सडी मुघि आवै की नाह ॥१॥
 नै धरणा म अत्रम तनु है हरिणी टग लोन ।
 बतरणी क तरण की नै करणी नदि कीन ॥२॥
 राम रावरे नाम म, यह अनाखी बान ।
 दा मून आगर तऊ आगर या न आन ॥३॥
 रहट करै परग्यो करै, पण करवा मे केर ।
 वा ता बाढ हरमा करै बा छता रा डेर ॥४॥
 चाव जतरी छानजै, चर भन हो बाढ ।
 मन्तर रा म्हारा कनी, करजै मती कमाढ ॥५॥

(१५) चडथरि—यह अचरीन क ठाकुर भवगीप बनरोमिहजी की पुता है । एकरा जन्म स० १९५३ म और विवाह स्व० महाराणा सुषान सिहजी के साथ स० १९६७ म हुआ । यह मरल स्वभाव का धमनिष्ठ महिजा है और अपना अधि र समय पूजा-पाठ एक धम चर्चा में व्यतीत करती है । हिन्दू धम क प्रति एकी बड़ा भाव्या है । इन्होंने पण्डितारी जता, एमर घाति की तज पर ६५ पाठ लिग है जिनका मद्रु 'श्रीमानागी रा गीन क श्री जी हनुर की नावना' के नाम म प्रकाशित हुआ है । य गीन मरागी बानी मे है । इनमें अम्बिका, आवरी माता, अर्कनिगजा आदि की गाभा क महिमा का वर्णन किया गया है । एनमें म बुद्ध क आभाजन रवाट भी भर गय है । य गात इनक हृष्य क स्वभाविह उद्धार है । इनमें स्वरमागुर्प रागा पया ज्ञाण है । तनुना गिन—

भूमिका मंत्रिया है। लेकिन एक शताब्दी भी इस ग्रंथ की कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ एक स्थान में पाई हैं तथा अजराज की छाप के कुछ फुटकर पद्य भी अथर उधर हस्तलिखित संग्रह अथवा मंत्रिपर मिलते हैं। परन्तु वे सब प्रशिष्ट हैं। इसलिए श्री भानावत ने उनको जान-बूझकर छान दिया है। यह उचित है हुआ है। क्योंकि प्रामाणिक सामग्री में सक्षिप्त सामग्री को मिनाना कभी अतिरिक्त सिद्ध नहीं होता। इसमें आगे जाकर अनेक उलझने वाली चीजें आती हैं जैसा कि मीराबाई व पत्रों व मन्त्रों में हुआ है। मीराबाई के पदों के अनेक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित हुए हैं। किन्तु उनमें यह भी पता नहीं लगता कि उनमें कौन से पद वास्तव में मीराबाई के हैं और कौन से नहीं हैं। यही हाल बिहारो-मनमई के दादा का भी हुआ है।

अजराज-बाध्य माधुरी में कुछ २२६ पद्य हैं जिनका तान भागा में विभक्त किया गया है—(१) विनय माधुरी (२) शृंगार माधुरी और (३) पद माधुरी। यह विभाजन श्री भानावत का अपना है। हस्तलिखित पाठियों में इस तरह का विभाजन नहीं मिलता। अथवा प्रारम्भ में भूमिका है जिसमें महाराणा जवानसिंह के व्यक्तिगत जीवन उनकी बाध्य-प्रतिभा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अंत में तीन परिशिष्ट हैं। इनमें इतिहास के साहित्य विषयक बहुत उपयोगी सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री भानावत द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें 'अजराज' की भाषा के मूल स्वरूप का सुरक्षित रखा गया है। उदाहरण के लिए अधिकरण कारक के परसंग का साजिश। एक विनय अजराज में मैं और में का प्रयोग किया है। वही-वही ता एक ही छन्द में हीना रूप अथवा में आता है। परन्तु श्री भानावत ने इनका ज्यों का त्यों रक्षण किया है। भाषा का एकसूत्री (uniform) बनाने के सोच में इनका कभी ध्यान नहीं है। इसमें अजराज की भाषा का समस्त स्वरूप निरक्षर आया है।

श्री महाराज भानावत ने अन्त में सबल साहित्यिक उद्यम किया है जिनकी संख्या २०० से ऊपर है। ये सभी विनय की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। परन्तु अद्यतन की शिष्टा में यह इनका प्रथम प्रयाग है और एक महत्त्वपूर्ण प्रयाग है। इनके इस सम्पादन काय में हमारे विभाग के श्री शृंगारदास गाम्भी ने इनकी बहुत सहायता की है। भूमिका के लिए सामग्री जुटाने में कवि परिवार विनयने में अतिनिष्ठ में परिशिष्ट

भजन एकलिंगनाथ रो

[तज जलारे म्हा राज रा डेरा निरखण आई हो]

सम्भूजी म्हें तो राज रा दरसण कर सुख पाऊ हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सभूनाथ दरसण करता पूरण भई सब आसा हो ॥सम्भूजी०॥ट॥

सम्भूजी राणी रायजी नै अमर अटल कर दीजो हा । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ पावडे पावडे साय आप ही कर दीजो हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी हीरा रो जलेरी (महाराणा) भोपालसिंग सा भट कराई हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ अदाता न अमर-अटल कर दीजो हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी हीरा रा नाग रो सोभा बरणी न जावे हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ बोलपत्तर आपरे सोस जटा मे साव हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी काना नै कुण्व वेसर रो छब भारी हा । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ ललवट टीकी भाल—च द ज्यु भलक हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी हीरा रा हाग (जापरे) हिरदा बीच हद सोवे हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ कठसरो रो साभा बरणी न जाव हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी ऊभा राणी राय जी मेवा करावे आपरो भारी हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सभूनाथ मेवाव्नाथ नै अमर अटल कर दीजो हो ॥सम्भूजी०॥

सम्भूजी ऊभी चाकर राजावत लुळ लुळ लागे आपर पांवा हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ चाकर रो चूडो चू दड अमर अटल करदी जो हो ॥सम्भूजी०॥

प्रस्तुत ग्रंथ महाराणा जवानसिंह उपनाम ब्रजराज की फुटकर रचनाया का संग्रह है। सरस्वती भण्डार उदयपुर क हस्तलिखित ग्रंथो के सूचापत्र म इसक लिए बृजराज पद्यावली नाम मिनता है। परंतु श्री महेन्द्र भानावत ने इसका ब्रजराज काय माधुरी नाम रखा है जा अधिक उपयुक्त और सायक है। इसका सम्पादन श्री भानावत ने मुख्यत चार हस्त लिखित प्रतिया के आधार पर किया है जिनका विवरण इ होने अपनी

भूमिका में लिया है। लेकिन इनके अलावा भी हम ग्रंथ का कुछ हस्तलिखित प्रतियां एक दखन में आइ हैं तथा 'ग्रजराज की छाप के कुछ पृष्ठ पर भी इधर उधर हस्तलिखित सग्रह प्रथम में बिखर मिलते हैं। परंतु वे सब प्रगल्भ हैं। हमलियां श्री भानावत ने उनको जान-बूझकर छोड़ दिया है। यह उचित ही हुआ है। क्योंकि प्रामाणिक सामग्री में सन्धि सामग्री का मिलाना कभी प्तिकर सिद्ध नहीं होता। हमने आगे जाकर अनेक उनभूने पैदा हो जाती हैं जैसा कि यागवाट्टी के पत्तों के सम्बन्ध में हुआ है। मीराबाई के पदों के अनेक सग्रह अद्यावधि प्रकाशित हुए हैं। किंतु उनमें यह भी पता नहीं लगता कि उनमें कौन से पद वास्तव में मीराबाई के हैं और कौन से नहीं हैं। यही हाथ बिहारा-मनमई के दाओं का भी हुआ है।

ग्रजराज-का० माधुरी में नून २२६ पद्य हैं जिनको तीन भागों में विभक्त किया गया है—(१) विनय माधुरी (२) शृंगार माधुरी और (३) पद माधुरी। यह विभाजन श्री भानावत का अपना है। हस्तलिखित पाठियों में हम तरङ्ग का विभाजन नहीं मिलता। ग्रंथ के प्रारम्भ में भूमिका है जिसमें महाराजा जवानसिंह के व्यक्तिगत जीवन उनकी काव्य प्रतिभा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अंत में तीन परिशिष्ट हैं। इनमें इतिहास के साहित्य विषयक बहुत उपयोगी सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री भानावत द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ को एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें ग्रजराज की भाषा के मूल स्वरूप का सुरक्षित रखा गया है। उदात्तता के लिए अधिशरण चारक के परसग का लीजिंग। हमके लिए 'ग्रजराज' में मैं और में का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं तो एक ही छंद में दो तीनों रूप रखने में आते हैं। परन्तु श्री भानावत ने इनका उद्योग नहीं किया है। भाषा का एकवचन (uniform) बनाने के लक्ष्य में हमने कहीं बदला नहीं है। इसमें 'ग्रजराज' की भाषा का असली स्वरूप निरंतर आता है।

श्री महेंद्र भानावत ने अभी तक केवल सांख्यिक तैयारी में जिनको संख्या २०० तक रखी है। संख्या २०० का प्रतिष्ठित पत्र-परिचालकों में प्रकाशित हुए हैं। परंतु ग्रंथ संग्रहण की दिशा में यह स्वरूप प्रथम प्रयास है, और एक सफल प्रयास है। इनके हम संग्रहण कार्य में हमने विभाग के श्री कृष्णराज गाम्भी ने इनका बहुत सहायता का है। स्वरूप के लिए माधुरी जुटाने में कवि परिषद निगमने में साहित्य में प्रतिष्ठित

तैयार करने में श्री भानावत को इनका परावर सहयोग रहा है। हमारे इस पुस्तक में जो भी अच्छाई है उनका श्रेय श्री ज्ञानचंद्र को भी उतना ही है जितना श्री भानावत का है। इसकी प्रेस कापा था नन्दिशार पल्लीवाल ने तैयार की है। अंत में धन्यवाद का पात्र है।

पुस्तक के परिशिष्ट में उद्धृत महाराणा अरविंद के चमत्कार हमें रावत श्री हिममतीसिंहजी साहित्यरत्न में प्राप्त हुआ है। रमिक चमत्कार साहित्य की एक छाती पर मार्मिक रचना है। यह अब तक अप्रकाशित थी। इसका दखन के लिए कविता प्रेमा पाठक बहुत साना यत्न थे। श्री हिममतीसिंहजी की सुकृपा में उनकी यह लालसा पूरी हुई है। रावतजी बड़े विद्यानुरागी इतिहासवत्ता और मजबूत कवि हैं। इनका पत्र लिखने की धुन है। इनका लिखा सतो पदमावता महाकाव्य हिंदी साहित्य की एक अनमोल कृति है। हम रावतजी के प्रति अपना हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

भूतपूर्व मेवाड़ राज्य का 'सरस्वती भण्डार' भारतवर्ष का प्राचीनतम पुस्तकालय है। इसमें संस्कृत हिंदी इंग्लिश आदि की पुस्तकों का एक छोटा पर अलभ्य संग्रह है। इस समय यह राजकीय राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जयपुर के अधीन है। प्रतिष्ठान के सचालक महादय ने हमें 'ब्रजराज का यमाधुरी' की हस्तलिखित प्रतियों के अध्ययन का मौका दिया जिसके लिए हमें उनका आभार है।

इस पुस्तक के प्रकाशन का समस्त धन्य धामान् महाराणा श्री भगवतीसिंहजी साहब ने प्रदान किया है। इस महती कृपा के लिए हमें उनका बहुत कृतज्ञ हैं। महाराणा साहब साहित्य इतिहास संगीत आदि विषयों के परम प्रेमी और पृष्ठपापक हैं। ध्याना है कि भविष्य में भी हमारी वसी प्रकार सहायता करते रहेंगे।

मोतीलाल मेनारिया

जयपुर

जयपुर राजस्थान

साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ

जयपुर (राजस्थान)



महाराणा जवानसिंह "व्रजराज"
[स० १८८५-९५]

भूमिका

कवि-परिचय

महाराणा जवानसिंह का जन्म म० १८५७ भाग १०१ गुवन तृतीया का हुआ^१। यह महाराणा भोमसिंह का पुत्र था। इनके बड़े भाई का नाम अमरसिंह था। उनका दत्त महाराणा का विद्यमानता में ही हो गया था^२। इसलिये महाराणा भोमसिंह की मृत्यु के बाद जवानसिंह मवाह की गद्दी पर बैठे। इनकी माता का नाम गुनावकुंवरि था^३। वह चावड़ा गाम्वा के जसवंतसिंह की बेटा थी^४। इतिहास प्रसिद्ध कमनकुंवर (जुगनकुमारी) इनकी बहिन थी।

म० १८८५ में इनका राज्याभिषेक हुआ^५। इस अवसर पर प्रगरजी सरकार का ओर में मवाह के तालान पालिटिकल एजेंट कप्तान काँट्रीका लेकर उन्मियत हुए, जिसका दस्तूर राज-दरबार के विधान आयोजन के साथ किया गया। इस टीके में हाथी, घोड़े तलवार डाल, मिरोपाव, मातिया की माना तथा सरपंच जैसी अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ थीं। महाराणा ने भा कप्तान काँट्रीको मनोचित सम्मान देकर बिदा किया^६।

महाराणा जवानसिंह शासन प्रबंध में अधिक कुशल नहीं थे। इसलिये इनके राजत्वकाल में मवाह राज्य की बहुत बड़े मध्य-मकट में गुजरना

- १ भाभा उन्मियत राज्य का इतिहास दूसरी खिन्, पृष्ठ ७२३
- २ कविशास्त्र द्वायमानगण बीरबिगो, विज्ञान भाग, पृष्ठ १७४५
- ३ मवाह के शासका का राजिनीं कीर कुंवरों का हार (हस्तलिखित) पृष्ठ ८
- ४ बहो पृष्ठ ८
- ५ भाभा उन्मियत राज्य का इतिहास, दूसरी खिन्, पृष्ठ ७२३
- ६ कविशास्त्र द्वायमानगण बीरबिगो विज्ञान भाग, पृष्ठ १७८३

पडा। एक और तो शासन—यय बन् गया और दूसरी और राज्य का आय मे भारी कमी हो गई। इसमें अंगरेजी सरकार के खिराज आदि के मात लाख रुपये चन् गये। उस समय महता रामसिंह प्रधान पद पर था जा महाराणा भीरुसिंह के समय से चला आ रहा था। शासन की यवस्था भली प्रकार न सभल सकने के कारण महाराणा जवानसिंह ने उसको प्रधान पद से हटा दिया और उसके स्थान पर महता शेरसिंह का नियुक्त किया।

शेरसिंह सच्चा और ईमानदार व्यक्ति था। परन्तु अथ-प्रबन्ध की दृष्टि से वह भी असफल रहा। इसलिये महाराणा ने महता रामसिंह का फिर से प्रधान बनाया। इस बार रामसिंह ने कप्तान काब की सहायता से ऋण का कुछ अंश अंगरेजी सरकार से माफ करवाया और जनता से दंड आदि के रूप में बहुत बड़ा राशि एकत्र कर लियासत को ऋण से मुक्त कराया। इस कार्य से रामसिंह को पर्याप्त यश मिला। इससे अनेक राजदरबारी लोग उसमें ईर्ष्या करने लगे। परन्तु कप्तान काब जब तक मेवाड़ में बना रहा वे लोग महता रामसिंह का कुछ न बिगाड़ सक। क्योंकि काब उसका प्रमुख पृष्ठपोषक था। किन्तु कप्तान काब के यहां से विलायत चल जाने पर महाराणा ने महता रामसिंह का हटा कर पुन शेरसिंह को उसकी जगह नियुक्त किया। इस प्रकार के परिवर्तन प्रायः होत रहे जिसमें महाराणा के शासन प्रबन्ध में स्थिरता नहीं आ पाई^७।

महाराणा ने अपने जीवन-काल में तान यात्राएँ कीं। इनकी पहली यात्रा प्रसिद्ध ताय गया का थी। इस यात्रा का उद्देश्य महाराणा का अपने पिता भीरुसिंह का श्राद्ध करना था। यह यात्रा सन् १८६० में हुई। माग में वृन्दावन अयोध्या मथुरा प्रयाग आदि स्थानों पर इनका बड़ा सम्मान हुआ। लखनऊ के नवाब नासिरुद्दौल हैदर तथा कोटा के महाराज रामसिंह ने इनकी बड़ी आभंगन की। इस यात्रा में अंगरेजी सरकार की आर से भी इनका अच्छा सम्कार हुआ। गया से लौटते समय महाराणा कुछ दिन रोवा ठहर। वहां महाराज जयसिंह देव ने अपने छोटे पुत्र लक्ष्मणसिंह की पुत्री अचरजकुंवरि इन्हें विवाह में दी^८। इनकी दूसरी यात्रा अजमेर की

७ भाभा उन्मुर रा व का इतिहास, दूसरी जि., पृष्ठ ७२५-७२७

८ मेवाड़ के राजाओं की राज्याया और कु वर का हाल (स्तनित) पृष्ठ ६

ची जा गवनर जनरल नाह विनियम बँटिक म मिलन के तिथ की गइ ।
अनिम माया आबू का म० १८६३ फाल्गुन शुक्ल एकादशी को पूरी हुई ।

मझाराणा जवानसिंह न उदयपुर म पीछोना ताताव क तट पर जल
निवास नामक महल और बाकी के मगर में महाकालिका का मंदिर
बनवाया । इतान टा-एक बाघ भी बनवाय । इनर अलावा इतान नीच
त्रिभूतान मन्त्रि का निवास करवाया—(१) जवानस्वम्पदर का मन्दि
(२) जगतगिगमणि का मन्दि तथा (३) जवानमूरजविहारी का मंदिर ।

(१) जवानस्वम्पदर का मंदिर

यह मंदिर राजमहल क मुख्य द्वार, बही पाल म बाएँ पचाम फीट
की दूरा पर गडक क मिनार पर है । इसका द्वार पश्चिम म मुखता है । यह
महादेव का मंदिर है । निज मंदिर क सामने की ताक में मझाराणा जवानसिंह
का मगमरमर की प्रतिमा है । उनकी गाँव में बाड और उनका बाघनी राणी
बैठी हुई है । निवलिङ्ग की पूजा क माघ-साथ महागंगा का इस प्रतिमा की
भा विधिवत् पूजा का जाती है । मभा महप में नदी की मूर्ति है । मही दाई
आर की दावार क कोन में एक प्रगलित लगी हुई है । इस क अनुमार महा
राणा जवानसिंह ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था । परंतु उनक अधिक
जीवित न १०० क कारण क इसकी प्रतिष्ठा नहीं करवा सक । उनक बाद
महागंगा मरदारसिंह मेवाड की मही पर बैठ । व भा बहुत कम समय तक
राज्य कर पाय । इसनिम उनके बाएँ मझाराणा स्वम्पसिंह ने म० १८००
वेणाम शुक्ल पष्ठा पुष्यवार का मकी प्रतिष्ठा करवादी ।

(२) जगतगिगमणि का मन्दि

यह मन्दि जवानस्वम्पदर क मंदिर क सामने है । इसका द्वार
पूरब की ओर है । यह मगमरमर का बना हुआ मन्दि है । इसकी बनावट
कमालपूर्ण और आकर्षक है । इसक बाहरी भाग पर नाच के चक्र गिगर
नक अनेक छोटी-बड़ी विभिन्न प्रकार का मूर्तिया उतारण । इन मूर्तिया में

६ कविश्याम सामन्तगण करबिन १ प्रथम भाग, पृष्ठ १३३

१० दण्ड करबिन ५२५ १ ।

विष्णु और शिव की प्रतिमाओं के अतिरिक्त हाथी घोड़े नतकिया योद्धा आदि मुख्य हैं। यह मंदिर पुष्टिभाग का है। इसमें राधा-कृष्ण की मूर्तिया प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिर में एक प्रशस्ति भी लगी हुई है जो दा शिलालेखों में पूरी हुई है। इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण महाराणी बाघेली द्वारा हरि-अर्पण किये गये निजी धन से महाराणा जवानसिंह ने करवाया था। इसकी प्रतिष्ठा महाराणा स्वरूपसिंह ने स० १६०४ वैशाख शुक्ल द्वादशी रविवार के दिन करवाई थी^{११}।

(३) जवानसूरजविहारी का मंदिर

यह मंदिर जगदीश चौक से गणगौर घाट जान वाला सड़क के बाईं ओर है। इस मंदिर पर नाना प्रकार की मूर्तिया खुदी हुई हैं। इस बाकड़े-बिहारी का मंदिर भी कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि महाराणा जवानसिंह ने इसे अपनी राणी सूरजकु वरि के लिये बनवाया था। इसमें राधा-कृष्ण की युगल-मूर्ति है एवं बाके बिहारी के रूप में श्री कृष्ण वासुरी बजाते हुए दिखाय गये हैं। जगतशिरोमणि के मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ इसकी प्रतिष्ठा भी महाराणा स्वरूपसिंह ने करवाई थी —

अस्मिन्नह्नि जगच्चिरोमणिरसौ सतुव हन्नामका
रिगत्मागरसेतुरद्भुनतरो मिष्टप्रभूता धर ।
तुय्योयत्र युवानसूरजविहारी चैव राधावर
सर्वेषामभिजि मुहूतसमये दि या प्रतिष्ठाह्यभूत् ॥

—जगतशिरोमणि के मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक ८८

उपरोक्त तीनों मंदिर शिखरबध हैं। ये इस समय राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग की देख रेख में हैं। इनकी प्रबध व्यवस्था अच्छी है।

महाराणा जवानसिंह का देहावसान स १८६५ भाद्रपद शुक्ल दशमी बहस्पतिवार का उदयपुर में हुआ^{१२}। स्वर्गीय मुंशी दबो प्रसाद ने इनकी मृत्यु का कारण बागार के महाराज सरदारसिंह द्वारा विष देना माना

है^{१३}। परन्तु कविराज श्यामलदाम का मत एक विपरीत है। उन्होंने महाराणा की मृत्यु का कारण मिर की षोडा बताई है^{१४}। कविराज श्यामलदाम के एक मत की पुष्टि स्व० डा० गौरीगणेश-हाराचंद घोषा ने भी की है^{१५}। इतने मान रागिया थीं। इनमें से महाराणी बड़ी भटियाणी और महाराणी बाधना एक साथ सती हुई^१। उज्जैन में जिन स्थान पर इन की गह-क्रिया हुई वहाँ एक छतरी अभी तक विद्यमान है।

महाराणा जवानसिंह बड़े हैममुख मृदुभाषा एवं उत्तम प्रकृति के नरेश थे। वे कविता और विद्वाना का अच्छा सम्मान करते थे। इनके समय में कवि यमनराम आसिया ने 'कीरतप्रदान' नामक ग्रंथ रचा जिसमें इनका जीवन-चरित वर्णित है। यह ग्रंथ टिगन भाषा में है और अभी तक अप्रकाशित है। इसकी एक हस्तलिखित प्रति कवि बलतराम के वंशजों के पास पण्डित गांधी में बचाव जानी है। इसका अन्वय महाराणा स्वयं भी उत्तम काव्य कवि थे। कविता में वे अपना नाम ब्रजराज निम्न थे।

ब्रजराज-काव्य माधुरी

महाराणा जवानसिंह ने प्रसिद्ध ग्रंथ का नहीं लिखा। कवन पुटकर कविता का है। कविता बनाने का आगण्ड इतना पर-रचना से किया था। इनका लिखा पत्रा पत्र यह है —

कसरियो कुंवर मिन्मान छ रगमीनी लाही ।
 प्रानकर सब साज बनाया अतर अरग अर पान छै ।
 गिरधर स्याम मुजान रमीनी नर महर का बान छै ।
 श्री ब्रजराज किमोर मनाहर प्राननर का प्रान छै^{१७} ।

यह पद सं० १८८२ फाल्गुन कृष्णा ४ रविवार का लिखा गया था।

१३ मुनी दशमेश्वर राजरामनाथ, पृष्ठ १८

१४ कविराज श्यामलदाम, कीरतप्रदान, लिखित भाग पृष्ठ १८०७

१५ डॉ० उज्जैन राज्य का इतिहास दूसरी खिन्ना पृष्ठ ७१०

१६ कविराज श्यामलदाम की कविता, लिखित भाग पृ १८०८

१७ ब्रजराज-काव्य माधुरी, पत्र माधुरी, पत्र ७

इसका वष का चैत्र कृष्णा २ गनिवार का इन्होंने दूबग पत्र लिखा जो इस प्रकार है —

राघजी म्हारा मन बस कानो हा
हो जी म्हारी प्रान रो प्यारा राघै ।

एव अनुपम मुन्तर अत हा जग रग भोतो हा ।

था रजराज मुजान सनहा रचन अधानी हो^{१८} ।

संवत् १८८८ वैशाख शुक्ल ७ शुक्रवार के दिन में महाराणा ने किशनजी आग्रा में कविप्रिया पत्रना आरंभ किया और ज्येष्ठ शुक्ल ६ सामवार में यह कवित्त दूब आदि दूबबद्ध रचना करने लग। उनकी लिखा पहला कवित्त निम्न ^३ —

कमल नरायन गरुरवज कृपानिधि,
माहन मुरारा चक्रारा मुधि काजियै ।
द्रापदी की राखी लाज गज का उवार लियो
सौही मरा दानानाय हाथ गहि चोजियै ॥
श्रुव की बताय ग्यान ध्यान में लगाय लीयो
कती बात कग अतो जग में पतोजियै ।
करनानिधान स्याम मुनियै अनाथबधु,
विरट पिटान मोकी भक्तिद दीजियै ॥^१

इसके बाद इन्होंने नाच लिखा दाहा बनाया और फिर तो ये बराबर दाहा कवित्त सदैव आदि लिखन लगे ।

स्वजन में अग मीन में राघ तर नैन ।
लागत हो मा मन विषे प्रगट करत है मैन ॥^{२०}

महाराणा कविता लिख लिख कर अपने पुराहित निवृत्तानजी, मानोचद

१८ "रजराज-का" माधुछ ९८ माधुछ, ९८ १

१९ का बिनय माधुछ ९८ १३

२० का शृंगर माधुरा ९८ १२

जो सामर मट्ट गुणनायजी, जागी नट्टी, नापूत्री मट्टमवादा, नदरामजी पाणेरी चंद्र श्वरजी गारवान माटजी दोन्ना, टाकुर जोरावरमिर्जी इत्यादि मुमाहिबों क द्वारा किंगनजा आग क पाग पहुँचवात ये जा इनको प्रति लिपिया तैयार करत थ ।^{२१}

भाषा

राजस्थान में 'गुद्ध राजभाषा का राजभाषा' और राजस्थानी में प्रभावित राजभाषा का 'निगल' कहत है। यजराज नन्द दाना प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया है। इनको 'सिन्ध मापुरी और 'शृंगार मापुरी' की भाषा राजभाषा है ७। सीधी-साली हान क साथ साथ कण मधुर भी है। हममें अनुप्रास का छटा मूल निवारण पहता है। इहान मनक न्यानों पर बालचान के टग का निभाया है। स्थलिय इनकी भाषा मवध भावानुगामिनो बन सकी है।

उदाहरण—

मान मा कय मजना मपने हिय में बहु मान न कीजे ।
नेमन मी मन मा मन मी वह न्य निहारत हो नित रीजे ॥
पर हि पर कहीं मन भावन या जग में जम वाम सु सीजे ।
पानम म्याम मृजान हि सौ भुज भेट वनी अघरा रम पीजे ॥^{२२}

और भी—

जा जिन तें सिद्धुं तुम याम नु ता जिन तें तन रोग नयो है ।
गान र पान बिमार दयो तिय आग्नि में जिय आय रयो है ॥
वानन नाहि म्या जन मी अति अग अनग मरार लयो है ।
वा चली न बिनद करो अब तुम्ह का यह नेट नयो है ॥^{२३}

२१ कन्नड काय भाषा। २। मरभरा मदाद, उम्बुर का हस्तलिखत
लि १७ ३६६ पृ १६-१७

२२ कन्नड-काय-भाषा शृंगार मापुरी पृ १६

३ क०, शृंगार मापुरी पृ ६०

इन के रत्नपदों का भाषा पिगल अर्थात् राजस्थानी मिश्रित व्रज-भाषा है। उस पर राजस्थानी का बहुत गहरा प्रभाव पाया जाता है। यथा—

(क) “अरज करा छै म्हारा मैल्हा आज्यो ।” २४

(ख) आवै छै आवै छै अलवेली ह सहेली हे गिरधर प्रीतम पामणा । २५

(ग) काइ मासू मान करौ मृगानेणी ।” २६

(घ) कामण कीधा छै जी नाजक नार । २७

(ङ) केसरियो कुवर मिभमान छै रगभीनी लाडो । २८

(च) काहि करा मनुहार म्हासू म्हेता थारा दल री जाणी । २९

इन पदा की भाषा पर कहीं कहीं पजाबी और खड़ी बोली का भी रंग देखने में आता है। उदाहरण—

(क) चरणा दो दासी साहीबा जनम जनम री आप किया की प्रीत निभाज्यो । ३

(ख) “अविद्या बहुत करता है हरो सौ नाहि डरता है । ३१

इन पदा में एक दो पद तो पूरे के पूरे गुजराती में हैं। इसमें ज्ञात होता है कि व्रजराज का गुजराती भाषा पर भी अच्छा अधिकार था।

उदाहरण—

गरबी

रूडी भली रलीयावणी जी रे

आली जमुनाये तीर सुहावणी जी रे । आला ।

२४ व्रजराज काव्य माधुरा पन्माधुरा पन् ६

२५ वही पन् माधुरा पन् २४

२६ वही पन् माधुरी पद ६७

२७ वही पन् माधुरा पद ६४

२८ वही पन् माधुरी पन् २

२९ वही पन् माधुरी पन् ८६

३० वही पन् माधुरी पन् ६

३१ वही पन् माधुरा पद ७

कसनजी नो या नित आवणो जो रे ।
 मधुरी सी मुरनी वजावणा जो र ।
 हिये साच घणू ने कलपो घणो जो र ।
 नैणे लाधा नथी व्रजना घणो जा रे ।
 रैन आधी रही नै चढा ढल्या जो र
 माने नदजी नो नद नथी मल्यो जो र ।
 मायो भूठी यथो चलमरयो जो र
 बभे णटला दुम्य नथी मह्या जो र ।
 मयो थाभे उपाय करया थकी जो रे
 साम आव नथी ता जावा मुकी जो र ।
 मया वार्ते करे वनी वजी जा र
 सरवे दुमना जान त्याथी भजी जा र ।
 वाने माये मुकट लकृटी वीप जो र
 वळे नटनो भम भला वीप जो रे ।
 भेन थो व्रजराज मु भावीयो जा र
 मानु रबे मटानिधि पावीयो जो र ।^{३२}

राजस्थानी पंजाबी आदि भ पाशा का मन होन क कारण व्रजराज
 के पना का भाषा कुछ उलटो हुइ कुछ ऊचह-गाबड दिगार्ई पडती है
 किनु फिर नी उनकी मयना और स्वर-मायुय म रिमी प्रकार का अंतर
 नही आया है । गद्य पदा की भाषा से जा मरमता और प्रवाह हाना
 चात्रिय यह इनम पूरा रूप से पाया जाता है । उदाहरण—

टाना रत्ता वीनी है रग भीनी राध करिके गुमान
 म्गारी आनी ॥८६॥

निस तिन प्रान रहे व्याकुन हो हरी तेने कछु दीनी है ।
 तरा दरस किये किनु सजनो छिन में अति छीनो है ।
 विप मनमाहन प मनभावन हकम अज्ञानी है ।
 था व्रजराज मु वर की हली तउ मन हर जाना है ॥^{३३}

३२ व्रजराज-वासर मापुछ, ९^० मापुछ ९^० ३२

३३ वही ९^० मापुछ ९^० ३३

इहोन अरबी फारसी के शब्दा का प्रचुर प्रयोग किया है परन्तु इनके कारण इनकी भाषा में कही दुर्लभता व अस्वाभाविकता नहीं आ पाई है। ये शब्द प्रायः वही हैं जिनका प्रयोग सूर बिहारो दब, पदमाकर आदि ब्रजभाषा के कवियों ने किया है और जो एक तरह में ब्रजभाषा के बन चुके हैं। जैसे लायक (अ) गरीबनिवाज (फा) गाफिल (अ) गुमान (फा) राह (फा) फोज (अरबी) निहाल (फा) अजब (अ) गजब (अ) खुमारी (अ) हजार (फा) कुरबान (अ) निसान (फा) महबब (अ) आमान (फा) तलफन (अ) दिल (फा) हाजर (अ) हजर (अ) महल (अ) आदि।

छन्द

ब्रजराज की कविता में छन्द का वैविध्य नहीं है। उन्होंने बहुप्रचलित केवल चार पाँच छन्दों का प्रयोग किया है। जैसे—घनाम्बरी छप्पय सबेया दाहा और सारठा। इनके अलावा इन्होंने गेय पद लिखे हैं। उक्त छन्दों पर इनका अच्छा अधिकार था। इसलिए इनमें यतिभंग आदि दोष बहुत कम देखने में आते हैं। कही कही पाद पूर्ति के लिए सु और जु का प्रयोग अवश्य दिखाई देता है। पर ऐसा बहुत कम स्थानों पर हुआ है। प्रायः इनका रचना में छन्द विधास का स्थान स्थान पर अच्छा मान्य देखने में आता है।

अलंकार

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है ब्रजराज ने अपनी रचना में सीधी सीधी भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए इनकी कविता में अलंकारों की भरमार नहीं है। अलंकारों का प्रयोग उन्होंने किया अवश्य है किन्तु ऐसे ही स्थानों पर जहाँ भाव का भली भाँति दृश्यगम कराने के लिए उनका प्रयोग अनिवार्य हो गया है। उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं—

शब्दालंकार

(क) प्रानपती चित आनन्त सी मनभावन क ग्रह आवन कीनी ।
भामिनि भोनन बीव खरी मुख मोन गहै बछु बोल न दीनी ॥^{३५}
—छकानुप्रास

(क) ' गज गेंगार मु मून म मालत कटक म अति कन कने रे ॥^{३५}

—वृत्त्यनुप्रास

(ग) घुमड घुमड घटा बरमत बूँ बूँ
उमकि चमकि राज वित्त की डरावै हैं ॥^{३६}

—पुनरुक्तिप्रकाश

अर्थलिवार

(क) गजन म निछुटा मु मीन म नपलता में
कज म विमान म कूरग जैम का है ॥^{३७}

—मालापमा

(ख) भीं चार चणाय कें द्विग जुग वान उगाय ।
तन मन मी माहन मखा तर परि है पाय ॥^{३८}

—एक

(ग) कान तुमा सौं राज वर बात विचार विचार ।
नार मारवै का मनी, है मान तरवार ॥^{३९}

—उत्पत्त

(घ) मनन पै रूद कज कर्गे अर ध्यानन पै नवि चद विचारी ।
भीहनम जुग गाय नरो अतकै नवि नागन वित्त न धारा ॥
भान पै केसर मीर करी निन पै चपना रचि कोटिन टापी ।
मुदर म्याम मुजान क ऊर मन मनापर मरनि वाग ॥^{४०}

—प्रनाद

३५ ब्रजराज चार मापरा शृंगार मापरा पद ३०

३६ क शृंगार मापरी पद ४

३७ कौ शृंगार मापरी पद १६

३८ कौ शृंगार मापरी पद १७

३९ कौ शृंगार मापरी पद १२

४० कौ शृंगार मापरी पद २२

(ड) मोहन कर मुरनी नहो क्यु इक बडी बलाय ।
या ब्रज को सब ब्रजबधू, मुनि धुनि अति अकुलाय ॥ ४१

—अप हृति

(च) खजन से अग मीन से, राखे तेर नैन ।
नागत हो मो मन बिपै प्रगट करत है मैन ॥ ४२

—चपलातिगयाक्ति

(छ) आरतवान अधीन ह्वै, ठाढे दुहु कर जोर ।
ब्रजनिध प्रीतम सौं अली, कयो बैठी मुख मोर ॥ ४३

—विशपाक्ति

(ज) खेलन के मिस लै गई कुजभवन में बाल ।
चकित भई नवना नई दखत ही नदलाल ॥ ४४

—पर्यायोक्ति का दूसरा भेद

(झ) स्याम को रिभावैगो तो आपदा मिटावै वहि
जैमा बीज बावैगो सु तैसो फल पावैगो ॥ ४५

—लोकाक्ति

विषय-वस्तु

ब्रजराज ने नात और शृगार रस की कविता लिखी है। इन दो रसों के अलावा अथ किसी रस का सन्निवेश उसमें नहीं हा पाया है। विषय-वस्तु की दृष्टि से इनकी रचना को स्थूल रूप में तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) विनय माधुरा (२) शृगार माधुरी और (३) पद माधुरी।

४१ ब्रजराज काय माधुरी शृगार माधुरा पद्य २५

४२ वही शृगार माधुरा पद्य १५

४३ वही शृगार माधुरी पद्य ५३

४४ वही शृगार माधुरा पद्य ३१

४५ वही विनय माधुरा पद्य ३३

विनय माधुरी

इसमें भक्तिरसक कुल ४३ छन्द हैं। इन छन्दों में गणेश, विदे, भविका राम कृष्ण, विष्णु आदि की स्तुति करने के साथ-साथ कवि ने समार की निम्सारता का वर्णन किया है और अपने उद्धार की माचना की है। इन छंदा में कुछ छन्द ऐसे भी हैं जिन में समार की नश्वरता बताने हुए कवि ने अपने मन की इत्तर-चित्तन के नियम प्ररित किया है। यथा—

बोन के घात पित्रा मुन बधव बोन के दाम मुनच्छन नारो ।
बोन का योग करारन का यह बोन की भूमि बहा अधिकारो ॥
बोन को राज तुरी गज मुद्गर अत समे रज जायगी सारी ।
चन अजो मन मूँ हरी भज क्यों तुव भूति रक्षी गिरधारी ॥४६

इसमें भगवान के दगावतारा से सबध रखनवालो उगारता तथा भक्तवत्सनता को पौराणिक अतकथाओं को भनक भिनती है। इसीनिये गज गोध, ग्राह अजामिन, द्रौपदी आदि के उद्धार विषयक कृताता की आवृत्ति हुई है—

गानम को नार ग्रीध ग्राह कीर गज कहां
अजामल आदि तार त्यो नी चित्त धरोगे ।
द्रौपदी को चीर मिर खँचत ही राग लयो
पद्म गुधारयो काज त्यो ही काज मरोगे ॥
ध्रुव का बनाय निज रूप यो भनव कियो
हर्षो प्रह्लाद दुख ज्यो ही अप हरीये ।
कान्ना जिहाज मशाराज जग मिरनाज
मैं हा अठराज त्यो ही भरा मुधि करोगे ॥४७

अपने आराध्य में प्रार्थना करने समय कवि ने उनकी जीवन-नीलाभा का भी यान किया है—

४६ अठराज गाय माधुरी विनय माधुरी पद २१
४७ ४८ विनय माधुरी पद ३२

कौसल कुमार राम दसरथ तात हू को
 वचन प्रमान कर साची करयो पन कौं ।
 चित्रकूट पचबटी जाय विमराम करयो
 दट दयो स्याम तहा सबै असुरन का ॥
 भूमि हा को भार सा उतार दया सीतापति
 अति ही सु चैन भयो जबै सतजन का ।
 दोन के दयाल ही के बिरद निभाय जिन
 मार दसकथ लक दोनी भभोपन कौ^{४८} ॥

विनय माधुरी म शात रम की प्रधानता है । इसम शात रस क
 प्राबल्य से किमी और रम के विक्राम का अवसर कवि का नहीं मिल सका है ।
 क्योंकि इसम कवि की आत्म निवेदन की भावना प्रबल है । यथा —
 बूड रह्यो भवसागर मे अवलबन और कछु न खरो जू ।
 मोह जजाल बिकार सबै तन की तुम स्याम सु पीर हरो जू ॥
 दोनदयाल दया करि कै अपनै ब्रद की सुधि ना बिसरो जू ।
 एक विसास रही मन आस जु श्री ब्रजराज सहाय करोजू ॥^{४९}

कवि ने इसम कि ही नये भावा की उद्भावना न कर परंपरागत
 भाव ही अपनाये हैं । जैसे—

क्रीडा सुथल मसान भूत सहचर सग सोहत ।
 चिता भसम अग लेप कठ रुडमाल विमोहत ॥
 भूपन अहि उर लसत बसत भ्रमुटी मधि पावक ।
 दिग अवर गल गरल सदा हर क्राध सभावक ॥
 सब असुभ अमगल रूप यह अगम निगम जग उचरत ।
 निज दाम आस पूरन तिनहि सभु महा मगल करत ॥^{५०}

उपरोक्त छंद महिम्न स्तोत्र और दयपराधनक्षमापनस्तोत्र क
 निम्नलिखित श्लोकों की छाया पर रचा गया है—

४८ ब्रजराज काय माधुरी विनय माधुरी पद्य ११

४९ व. विनय माधुरी, पद्य २६

५० व. विनय माधुरी पद्य ५

श्मशानेष्वश्रीः। स्मरन् विज्ञाया सहचरा
 चिताभस्मालेषु स्रगपि नृकराटी परिवर ।
 अमगल्य शील तव भवतु नामैवमखिल
 तयापि स्मृत्या वरः परम मगलमनि ॥

—महिम्न स्तात्र

चिताभस्मालपो मरुतमगन त्रिपटधरो
 जटाधारी कठे भुजगपतिहारी पशुपति ।
 वपुनी भूतनी भजति जगदीशैवपदवा
 भवाति त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥

—दत्तपराधनक्षमापनस्तात्र

शृ गार मातुरी

इसमें १०२ पद्य हैं। इसका मुख्य विषय शृ गार है। इसमें रूप
 गरिता मुग्धा अतिमातिका वृन्दटा, मण्डिता, श्रय ममोग श्रु म्पिता उत्तरा,
 प्रापितपतिवा कनहारिना मानवती आगनपतिवा, परकीया, मन्वाधीरा
 आदि नायिकाया का वर्णन है। इसका अन्तर्भाव इसमें श्रीकृष्णजन्मात्मव
 उद्धव गोपों-सयात् नगसिग यर्षा प्रतु, बसी आदि के वर्णन सबधी पद्य
 भी है। काव्य-रचना की दृष्टि में यह इस पुस्तक का सर्वोत्कृष्ट अंग है।
 ब्रजराज की यह रचना सिद्धा क रोतिज्ञानोत्त माहित्य में प्रभावित है।
 रोतिज्ञानोत्त कवियों को तरह ब्रजराज ने भी इसमें नायक-नायिका का
 निम्न प्राय काण धीर राया का अर्थनाया है।

नायिकाया का वर्णन करते समय ब्रजराज ने लज्ज-शाय का छोट
 कर उत्तरोक्त नायिकाया का करन उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जहाँ नहीं
 सिद्ध। अन्तर्भाव का जो वर्णन किया जा ने अन्तर्गत रमयजगो में किया है
 ब्रजराज ने उन जथा ता त्या अन्तर्भाव विद्या है धीर उदाहरण अन्तर्भाव
 है। यथा—

अपनी तन के रूप का, अति ही करत गुमान ।
रूपगविता नायका, ताहि कहत कवि जान ॥^{५१}

एक समे मनभावन छैल निहारत ही बस मोह भयो री ।
चदमुखी कहि कै बतरावत चाह करै कर जोर रह्यो री ॥
होँ सजनी अति ही सकुचावत पातम की नित नेह नयो री ।
रूप तुमाय सुजान अली त्रिय औरन की मुधि भूलि गयो री ॥^{५२}

खडिता नायिका को लेकर बिहारी देव मनिराम पद्माकर आदि
अनेक कवियां ने एक से एक बत्कर उदाहरण दिये हैं । दण्णकार ने इसका
लक्षण इस प्रकार दिया है—

पाश्वमेति प्रियो यस्या अयसभोगचिह्नित ।
सा खण्डितेति कथिता धोरैरीर्ष्याकपायिता ॥

पद्माकर ने खडिता नायिका पर उदाहरण देत हुए अयसभोग
चिह्नित नायक की अस्त-व्यस्त वेशभूषा म उमके हृदय पर गुण हीन हार का
हाना बताया है—

बिन गुन माल गोपाल उर, कयो पहिरी परभात ।
चकित चित्त चुप ह्वै रही निरखि अनोखी बात ॥^{५३}

प्रतीत होता है कि इसी सूक्त को लेकर ब्रजराज ने अपनी बात को
इस प्रकार कहा है—

आये घनश्याम मेरे भौन अति प्यार ही सो
भूपन विचित्र अग अग पै कहा करे ।
बिन गुन हार हिय बीच ही विराज रह्यो
सोस फल ही की फल भाल पे भली धरे ॥

५१ ब्रजराज काव्य-भाष्योरी शृ गार भाष्योरी, पद्य ३४

५२ वही शृ गार भाष्योरी पद्य ३३

५३ पद्माकर पद्मासुत प विवनायप्रसात् मिश्र द्वारा संपादित पृष्ठ ११६

बौन सा तिया की आम पूगे नदनाल तुम
 काह का दुगवी बात टारो अर ना टरे ।
 हरे हरे बोन के विलाकत ही सूधे रित
 रैन की गुमारो नैन बोन के लगी परे । २४

इस प्रसंग में एक सवैया और उद्धृत करत है—

काऊ नगी बरजे मतिराम रही तित ही जित ही मन भायो ।
 काहे को सोहे हजार कगी तुम तो बर है अपराध न टायो ॥
 सावन दजन दाजे हम दुष या ही क्या रसवान बढायो ।
 मान रहाई नही मन माहन । मानिनी हय मा मानै मनायो ॥ २५

मतिराम का यह उदाहरण मध्या अधोरा नायिका पर है । ब्रजराज ने
 पूनाधिक इसी उदाहरणो म मतिराम नायिका का निम्न उदाहरण प्रस्तुत
 किया है—

कोऊ नगी बरजे धनस्याम रही बिन ही जित ही रत माना ।
 काहे को सोहे हजार करो मग रैन जग मू रह न अछानी ॥
 एता अनात करो बिन ही अपनै बिन के सु नती मत छानी ।
 सावर रावर नेह की रीत दुरावा कला हम तो पहिचानी ॥ २६

कवि ने मानवती नायिका पर दम बवित सवेया लिखे है । इतने
 अधिक छंद अर्थ किमी नायिका पर इहाने नहा लिखे । इनके य छन्द अत्यन्त
 भावपूरा अत्यन्त सजीव और अपने रग-रङ्ग के अप्रतिम हैं । उदाहरण—

सोन सो बरहु सजनी मपने जिय में बछु मान न कीजे ।
 नेमन सो तन सो मन सो बह रूप निहारत ही निरा रोजे ॥

२४ ब्रजराज-नाम माधुरी शृंगार माधुरी १८४०

२५ मतिराम-सवैया रगर ४ पुट्ट २०१

२६ ब्रजराज-नाम माधुरी शृंगार माधुरी १८४१

वेग हि वेर कहा मनभावन या जग म जस वाम मु नाजे ।
पातम स्पाम मुजान नि सौ भुत भेट अलो अररा म पीजे ॥५७

मात्पत्ना सि साभित है गन गृ जन नार मु नाउ कठा गट ।
वेर हि वेग त्रै नाम मगी मुनि प्रान नि म अनि लाग रती रट ॥
मोहन ती छ ब नख गती चन मान कह्यो अत्र छाड मवै गट ।
वैन वजाय रिभागत छन मु ठाढ गुविंद किचदमुना तट ॥५८

विप्रतभ गृ गार क अतगन प्रापिन पतिका पर रीतिकालीन कविया
क अनेक उदाहरण मिलते हैं । इस विषय को नजर प्रजराज ने भी अत्युत्कृष्ट
कविता की है । यथा —

चन्द चद अगार सा नागत चन नही कहूँ साभ सवेरे ।
सज सगार सु सुन म मालत कटक मे अति फन करेरे ॥
बून गये सुधि प्रान पिया अब बीनि गये दिन हू वहरै ।
जा दिन स्पाम चलै परदेस सुत्स विदेस भयी सति मेरे ॥५९

आगतपतिका क वरण म गुम सूचक शकुन मूल आवार रहे हैं —

नित कोकिल मोर मु सोर करे पपिया अति पीत वनावत है ।
धन धूमि रह्यो जित हा नित ती चना चहुँधा चमकावत है ॥
फुरकै चख बाहु अरा सजना प्रजराज मुरप वतावत है ।
मनभावन आवन ते जु अली यह सावन तीज सुनावत है ॥६०

रीतिकालीन कवियों की परिपाटी क अनुसार प्रजराज ने भी नख
सिख वरण किया है । यद्यपि इनका यह वरण संक्षिप्त है तथापि वह बहुत
ही स्वाभाविक एवं चित्रोपम बन पडा है । एक उदाहरण लीजिये—

आनन पैं रद चद करा अर मोहन पैं वाह चाप विहारो ।
कसन का छिन्न पैं मनभावन भारत की अवली सब टारो ॥

५७ अजराज-नाम माधुरी शृ गार माधुरा पद्य ५६

५८ वटा शृ गार माधुरी पद्य ६३

५९ वटा शृ गार माधुरी पद्य ७

६० वटा शृ गार माधुरी पद्य ६१

सुपन घट्ट मीभि नै नन चान हिय जु मरान न धारी ।
 सुदर ३ अघमान मुता निय नैनन पै अा सजन दारी ॥^{११}

पावन श्रुतु वषण म कति न कुट्ट छट्ट २३ है । इनम प्रन्ति का मुदर
 वषण हूषा है उदापन २३ म । २३ —

वरत मोर अति मां पाठ धन वरसन जित तिन ।
 निज प्रनग मन श्रुत मन् नति २३ न विन ॥
 जह तह बावन पैर उर नदुर मु डगावन ।
 भावन २३ वट्टु भग गा नन तन दरमावन ॥
 य २३ समय उग मजि वन २३ तुम नजहु म्याम मूनि वाज २३ ।
 मुप पाय चाय वरमाय रम जाय मिन २३ अजराज अय ॥^{१२}

शृणु पी २३ गुग क सुमगु २३ स्वर म एव आकपरा वा । इम विषय
 पर भित्त भित्त किये न । न प्र भिय २३ म निगा है । अजराज मे भा गाापया
 का बागुरा क प्रा उतना डाह इम प्रकार दरमाया है —

माहुन के मुख साग री अतिम न भरा अति वया निन गाज ।
 थाहुन हू अजराज सरे व २३ भुनि ग २३ सिगरे २३ काज ॥
 दाननि बाव परी धुन २३ जय ते गुर सागत का २३ नाज ।
 वर २३ व २३ पुतार वह मुनि वैन व मुिया मन गाजे ॥^{१३}

शृणु क जीवन उरित म उदव गाभा-भवा का वि २३ मन्व २३ है ।
 इम विषय पर सूर घोर अघ वविवा न व २३ वट्टु लिगा है । मन्वा इसका
 वर्णन विषय न २३ गार क अगत हूषा ३ । अजराज न भी दया सुदर
 वगत विषा है । उदव क अज म पट्टेचन २३ गादिवा का विरगावस्था
 दानीय है—

उदव घाय गद अज मे मुनि गादिन के नन मे पु २३ लाया ।
 घानद भी २३ मगा मगरा २३ अति प्र म भग दधि घान उपायी ॥

११ अजराज का मापु २३ गार मापुरी पद ०

१२ व २३ अजराज मापु २३ पद ४

१३ व २३ अजराज मापु २३ पद ७

पृथ्वि हैं मन मोहन की सुधि बोलत हा द्विग नीर चलायो ।
पेखि सनेह सखा हरि के घनस्याम वियाग वछून सुनायो ॥६४

उद्धव गोपियो को जानोपदेश देने लगे । पर तु उनके कथन का एक अक्षर विरहिनियो के लिये वज्र का प्राघात बन गया । कितनी मार्मिक उक्ति है—

उद्धव तुम आये इहा करत जोग की बात ।
वरन वरन ऐमे लगै करत वज्र की घात ॥६५

पद माधुरी

इसमें विविध राग रागिनियो व तालो म गाये जाने वाले १४७ पद हैं । इन पदा को जिन रागा म बाधा गया है, उनके नाम ये हैं —
अडाणा आसावरी कल्याण काहडा काफी कालिगडा खम्माच ख्याल गरबी गोड मल्हार गोडो जगना जजवता भीभोटो, ठुमरो दवगघार घनामी नाणको परज पूरबी वमत बिनावल भरबी मल्हार मारु ललित लूनरयो सारग विहग विहग ठुमरो विहाग, पट, सारग सोरठ सोरठ खम्भायचा सारठ मल्हार हिनोरा इत्यादि ।

इन पदा म अत्रिकाश पद भक्ति और श्रृ गार विषयक हैं । इनमें प्राय उन्नी भावो की आवृत्ति हुई है जा विनय माधुरी व श्रृ गार माधुरी मे व्यक्त किए गए हैं । अत विषय वस्तु की दृष्टि से इनम कोई विशेष बात नहीं है । कि तु गेय पदो म जो सगमता तलन नता एव स्वर सगति होनी चाहिए वह इनम पूरा तरह पाई जाती है । उदाहरण —

राग मारु

यागे आळू आवे छै ह राध प्यारी ॥६६॥
जित जावे तिन तरौ सुमरण कैमो मात्नी डारी ।

६४ अजराराज काव्य माधुरी श्रृ गार माधुरी पृ ७

६५ व० श्रृ गार माधुरी पृ ११

कवहू आय मिनावे जदुपत चित हित मौ मह घारी ।

श्री ब्रजराज वसी छर उर में वा छव पै बलिहारी ॥९९

राजस्थान में मीराबाई महाराजा जयवर्तमिह विहार वृन्द, कुनपति मिश्र सामनाथ नागरीनाथ मूदन पद्मभार आदि अनेकानेक कवि हुए हैं जिन्होंने ब्रजभाषा-साहित्य में निरालम अथवा योगदान दिया है। ब्रजराज भी इसमें कवि-रत्नला की एक कड़ी हैं। यद्यपि इनकी रचना परिमाण में बहुत अधिक नहीं है पर जितनी भी है वह साहित्य का दृष्टि में उच्चकॉटि की ओर ही साहित्य का गौरव का अंगोत्थानी है।

महाराणा जवानमिह की कविनाम्ना का यह महत्त्व मैंने निम्नलिखित चार अन्वित प्रतियाँ के आधार पर बताया किया है। इनका सविष्ट परिचय यहाँ दिया जाता है —

A यह प्रति उदयपुर के मन्स्वती भण्डार में सुरक्षित है। यह इस प्रकाशक के हस्तलिखित प्रतियों के मुद्रित सूचीपत्र में मध्या २६६ पर है। इसमें ११८५८८ आकार के १८ पत्र हैं। यह प्रति मवेद ग के माटे बागज पर लिखी गई है। एक प्रत्येक पृष्ठ पर २१ २३ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ११ २६ तक अक्षर हैं। अक्षर बड़े बड़े और सुबाल्य हैं। इसके लिखने में प्रायः कान्ही श्यामी ने काम लिया गया है। कबिल बीर में कान्ही-की भाव-स्यही का उपयोग भी हुआ है। प्रति पुस्तकालय मजिस्ट्रेट है। जिला कपूर था है। इसके अंत में पुष्पिका-लय नहीं है। कबिल यह महाराणा जवानमिह के समय की ही लिखी हुई है। महाराणा कविनाम निरालम अथवा विगतजा धारा का दंत य धीर के उनको हमने अंकित करने में है। इस बात का स्पष्ट उल्लेख इस प्रति के पृष्ठ १२ पर हुआ है —

अथ समत १८८२ ग वैशाख शुद्ध ७ गुरे रै दिन माराज कवार श्री १०८ श्री श्री जवानमिहजा धारा कियता तोरा मू भगवा ११ समाहृत कीधो मा प्रथम अथ कविप्रिया पत्रा में कवित्त-दूता बणावा रा परा प्रारम्भ कीधो सो भास १ टा २ ती कविप्रिया हीज अथ महत्त पत्रा में जेठ मु ६ सोमे रा शिन मू कवित्त-दूता बणावा ताता जो दन मू श्री बणावा

सो बसना नें हुकम हुवो के किमन जो ये दूहा कवित्त माहरा बणाया त्रिप-
लाज्यो श्री हजूर सू पोथो त्यार कराय बगसो जी में श्री हजूर का बणाया
दू कवित्त मवेया छपे आद रयाल और सरबत्र छद सो त्रिपम्या ॥ प्रथम
जठ सुद ६ साम रे दिन महाराज कवार था जवानसिंघ जो दूहो कवित्त
बणाया सा लिपा छ।

इसम कुल २११ पद्य है। इनम ५१ कवित्त, ४२ सवय २ छप्पय
५० दोह आर ६६ पद है।

B यह प्रति सम्बती भंडार की है। प्रमाणित सूचीपत्र म सख्या
८१६ पर। साइज १० ६' X ७ १। पत्र सख्या ५। इस पर लाल कपड़े की
जिल्द है। प्रत्येक पृष्ठ पर पक्ति सरया १५ १७ और प्रत्येक पक्ति म अक्षर
६ १८। लिपि मुदर। अनक स्थानो पर कागज टूटा हुआ है जिमका गात्र
से चिपकाया गया है। प्रति म लिपिकाल का उन्मुख नहीं है। पर तु कागज
श्याही लिखावट आदि स यह भी महाराणा जवानसिंह जो क समय म ही
लिखा हुइ प्रतीत हाती है। इसम २८८ पद्य हैं—५० कवित्त ४० सवय ४६
दाहे २ छप्पय और १४५ पद।

C प्रति सरस्वती भण्डार की है, सूचीपत्र में सख्या ६५६ पर।
साइज १३ ६' X ८ ६। पत्र सरया ५७। प्रत्येक पृष्ठ पर पक्ति सख्या १७
और प्रत्येक पक्ति म अक्षर सख्या ११-१६। इसम लिखावट कागज के पत्र
ही तरफ है। लिपि बहुत मुदर है। यह प्रति सम्बत् १८६८ म लिपिबद्ध
हुई थी। इसक लोगक का नाम सदाशिव है। इसकी पुष्पिका यह है—

'श्रीरन्तु। सम्बत् १८६८ बये द्वितीय चैत वदि सप्तम्या समाप्ती
कृतमिद पुस्तकम् सदाशिवन देवदुर्गासिना श्रीमन् महाराजाधिराज महा-
राणाजी जवानसिंह जी रा बणाया।'

इसम कुल मिलाकर २८६ पद्य है। इनम ५ कवित्त ४० सवये,
४६ दाह २ छप्पय और १४१ पद हैं।

D यह प्रति सार्वजनिक सस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, क
पुस्तकालय म मृगभित्त है। प्रति सजिल्द और पुस्तकाकार है। जिल्द लाल
कपड़े की है। इसकी साइज ७ २' X ५ ७ है। इसका पत्र सख्या ४७ है।

प्रत्येक पत्र में १४-१८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १४-२० अक्षर हैं।
 अक्षर सुभाष्टय है। जिल्ला टूटी टूटी पर प्रति अक्षरी अवस्था में है। अक्षर अक्षर
 में पुष्पिका है जो जान ग्याग में लिखी है —

‘ इति श्री महाराजाधिराज मन्तराणाजो श्री १०८ श्री जवानमिष जो
 कुरपद बलाया ॥ कवित्त सवेया टूटा राग रागण्या सम्पूगम् ॥
 विपतम् गाम पुर मध्य सम्बत् १६२७ ॥ आषण शुभ पक्ष नियो १४ बुधवामरे
 पाया राज ठाकुर श्री हमारमाप्रजो श्री राजस्थान गाम मायाग ॥
 श्रीरम्तु सम्पूगम् ममापनम् ॥१॥

इस प्रति में कुल ८१ छन्द हैं। इनमें ५० कवित्त ३ सवेय ८८
 श्लोक १ छन्दय और १२८ पद हैं।

अतः में राजस्थान विद्यापीठ के ठाकुरपति प० श्री जनादन-
 राय नागर तथा गार्गीय मन्थान के अध्यक्ष प० श्री विठ्ठलनाथ व्यास के
 प्रति आभार प्रदर्शित करना अथवा परम कृत्य सम्भन्ध है (जिनके स्नेह
 शीघ्र ही मन्थान की यह पुस्तक सेवा कराने का शुभ सुप्रवसर मिला है।

दि गा दामो म २ २१

उज्जैन राजस्थान

—महेंद्र भानाधत

विनय-माधुरी

ब्रजराज-काव्य-माधुरी

विनय-माधुरी

श्री गणेश-स्तुति

कवि

प्रियेनहन अनि आनदवग्ग नित
निद्वि के गन्न तत्र काग्जि मुप्रागा ।
एक ह गन्न गजप्रदन अनन् रूप
वच्चि तशाय अत्र मयट निवागी ॥
परमीधरन तुम वर आ अभय दैन
मन के मनाग्ग के काज तुम गागी ।
नीन के दयाट गच्छिपाट मदा जीवन के
गवन् मुभाव ही के प्रिण्ट प्रिचागी ॥१॥

ICD विपन-वर्तन । IC काव्य-वर्तन । C मुप्रागा । AIC ही । C गज-वर्तन ।
A मिशय । ACD मिशरत्न । AC माता । A गन्तव्य । ICD विरट ।
AC विचारा ।

दाहा

बिघनहरन सब सुखकरन, लबोदर गन ईस ।
इ द्रादिक सब अमर ही, चरन वरत नित सीस ॥२॥

श्री एकलिंग-स्तुति

दोहा

एकलिंग सिव सेव भजि भूतनाथ सुभ भेस ।
हरि विरचि निसिदिन रटत, पार न पावत सेस ॥३॥

मयित्त

एकलिंगनाथ भूतनाथ कृपानाथ तुम
करो सुभकाज लाज राखी मेरे तन की ।
त्रिपुर जराय सुरपाल की सहाय करी
मेदि दई ताप हर सबे असुरन की ॥
बिधि ब्रजराज सेस सारदा गनेस ते ते
रट दिनरात बात पाव नही मन की ।
करुनानिधान मेरी करनी न वारा अब
विरद पिछान आस पूरो निज जन की ॥४॥

२ BCD बिघन-हरन । A ई द्रादिक । B द्रादिक । D ईदिक ।

३ A ऐकल्यग । BCD निस दिन ।

४ ABC कृपानाथ । AC करा । AC रला । A सिहाय । BCD सब ।
BCD बिधि । BCD ब्रजराज । D दिन राति । BCD बात । BCD पावे ।
BCD नही ।

श्रीटा मुयग मसान भूत सहचर सग मोहत ।
 चिता नमम अग लेप कठ र डमाल विमोहत ॥
 भूपन वहि उर लसत वसत भ्रुकुटी मधि पावक ।
 दिग जग गल गगल मदा हर शोध सभावक ॥
 मय अमृभ जमगल रूप यह अगम निगम जग उन्चरत ।
 निज दाम जान पूरन तिनहि मभु महा मगल वरत ॥५॥

देवी अश्वरजी श्री म्नुति

दाहा

नकटारन जयकरन, जय जननी अजाव ।
 नरगाग के तरन वा, तेरे परिही पाव ॥६॥

-
- १ DD कारा । D मसान । D बह । D विमोहत । CD वमज । D मृकुटी ।
 D नि केवर । AI कोप । D मगल । AI उन्चरत ।
 ६ C वा । C हा । D हे ।

पूरनकरन मव मन के मनाख्य की
 चूरनकरन महिषामुर की नात्र जू ।
 चद मा उदन नन साभित विसाल नित
 वदत सकल जन पूजत ह पाव जू ॥
 विरद विचार चित्त कीजिये दयाल दया
 लीजिये लगाय मात मेत्रक मुभाव जू ।
 वरन त्रिसूल कर मरन त्रिलाक मदा
 मकटहरन जयकरन अवाव जू ॥७॥

श्री रामचन्द्रजी क चरणारविद रा रणन

सतन करत नितप्रति मुख-सपति मु
 हरत मकन टुख जम मित्र पाथ क ।
 अमर मुरम का वचाय लय रघुवीर
 अमुर विगार उवकारी दममाथ के ॥
 जग में मुजस लीना भभीपन लक दीनी
 कीनी पहुमी प या उदार असे हाथ के ।
 परम वरम अरु मगलकरन अति
 मकटहरन द्व चरन रघुनाथ के ॥८॥

७ A मनोरथ । C का । C करत । C सा । D नन । E C साभित । C वद नित ।
 D वत्त । FC है । D विरद विचार । AFD चित्त । AE कीजिये । D कीजिये ।
 C दयाल । A कीजिये । CD त्रिसूल । A त्रिसूल ।

८ D सतन । A सपति । APC जमें । D मुर । C का । D वचाय । BC रघुवीर ।
 BCD विगार । BCD वचकारी । C जग म । AB लाना । C लीना । C कीनी ।
 D पज्जा । C या । D दी । D घन ।

श्री गमचन्द्र की स्तुति

संया

मु दर म्याम मुन्प मनाहर अन्नत मे अद्रु वालत वायक ।
 दीनदयाल वह मय ही तिनके त्रद का निरभावन लायक ॥
 पीसल गजकुमार मुजान अनायन के नित ह जु महायक ।
 रच्छम घायक पायक कीरत ह जगजीवन जानुकि नायक ॥६॥

करित

दीन क दयाल काल अमुर अनेक हू के
 मनन क तन हू की पीर के हरन हौं ।
 तज श्रीप्र ग्राह और केते हू अनायन की
 गानम की नार ही के तारन तरन ही ॥
 नान मान भ्रान राम मेत्रक अनेक ही के
 सीता हू मती के मदा जानदवरन हा ।
 धरा रे रगन जुग चरन पै वारों मन
 मकटहरन राम रावरी मरन हौं ॥१०॥

६. AB गुन्प । D म्याम । D मन्प । A D मनेहर । C म मुत । LCD मुद्रु ।
 A कवत । D वावत । A गारगाल । LCD कते । D वत । A कीतिल ।
 A रावत मार । I मजान । C हावत । C क री । H है । AD जनुकी ।
 C जानकि ।

१०. A म्याम । D वात वाटन । D हू । A D कौ । D हौ । C हौं ।
 L हौ । C लौ । B हौ । C हा । A वा । A एम । I हौ । C हा ।

कौसल कुमार राम दसगथ तात हू का
 वचन प्रमान कर साची कर्यौ पन की ।
 चित्रकूट पचत्रटी जाय बिसराम कर्यौ
 दड दयो स्याम तहा सबै अमुरन कौ ॥
 भूमि ही को भार सो उतार दयो सीतापति
 अति ही मुचैन भयो जवै सतजन कौ ।
 दीन क दयाल ही के विरद निभाये जिन
 मार दसकव लव दीनी भभीपन कौ ॥११॥

भूपन के भूप महिमडल के मडन सु
 खडनकरन नत सब ही अरन के ।
 दीन के दयाल खयकाल दससीस ही के
 पालन अमर अर च्यार ही बरन के ॥
 कासलकुमार भानवस रघुवीर धीर
 गोतम की नाग आद तारन तरन के ।
 सक्ठहरन मन आनदकग्न नित
 सरन सदा ही राम रावरे चरन के ॥१२॥

११ A राम । AB की । D क । BCD वचन । A प्रमान । C साची । C का ।
 BCD पचत्रटी । D माय । A बिसराम । D कर्यौ । A ल्यौ । C दिया ।
 C याम । D अमुरन । C का । ABD कौ । ABD सो । A उतार ।
 A दयो । A अत । D मुचन । C का । A दयान । BCD विरद ।
 D निभाय । C का ।

१२ D स । D तन । IC बरन । A कोसिन । B कोमिन । BC रघुवीर ।
 D गरि । C हा । A राम । A क ।

श्री परमेश्वर की स्तुति

कवित्त

वेमव नगायन गुरुव वज कृपानिधि
 मोहन मुगरी चक्रधारी मुधि कीजिय ।
 द्रापदी की राखी आज गज की उमाव दियी
 त्योही मेरो दीनानाय हाय गहि श्रीजिय ॥
 युव का वताय ग्यान ध्यान में ग्गाय लीया
 बेती रात नरी अती जग में पनीजिय ।
 करानिधान न्याम मुनिय अनाथपथु
 विरद पिछान माका भक्तिपद दीनिय ॥१३॥

दाहा

विपति प- दुग्ग का हर, घर न चिन में चीर ।
 माहन त्रिनु या जगत म, मेदि मक्के नहिं पीर ॥१४॥

१३ A कृपानिधि । BC कृपानिय । C निधि । D कारीर । AIC की ।
 A ऊसर । A न सो । A त्योही । D त्यो । AIC मेरो । LCD ननाय ।
 D नागर । A मरी । D पन त्रिये । D न्याम । A मुनिरे । D मुनिदे ।
 PC विर । D निरन । BCD माकी । D दाहिरे ।

१४ PCD विरति । D दुगा । AIC पर । CD म । A सोन । A दिन ।
 PC विनु । A म् । CD मे । IC म । D म ।

श्री परमश्वर मौ प्रह्लाद नाम्य

ऋत्त

मेर त्रिमवाम घनस्याम ही को मुनी तुम
 कहे प्रह्लाद वा ही बाल त बचावगौ ।
 केतिक अविद्या ग्रथा प्रालत हा बेर बेर
 हरि नाम लेत मौका वान यौ छुरावगौ ॥
 मात के उदर बीच नारद मुनायी ग्यान
 व्यान म ग्यायी माहू नक न भुलावगा ।
 जब मन चाव यह प्रभु गुन गावै नित
 ताप कौ मिटाव निज दरम दिखावगौ ॥१५॥

शान्त रम ऋत्त-नाम्य मन प्रति

मरया

रे मन मूढ जजान अग्यान मुजान मियावर का भजि ल र ।
 चेत अजा हित की मुनिक अपने मन की कवहू मत ग र ॥
 ह सुग्य म सब बधव यात विगार भय यन म रस नै रे ।
 प्रेगहिबग विकार निवार मु मोहन के चरनी चित द र ॥१६॥

१५ CD मर । BCD घनस्याम । ABD को । A कौ । ABD वो हा । BCD वृषा ।
 A वीरत । AD वर वर । D नाम । BCD माको । BCD माता । A उदर ।
 C मुनायी । C लगावा । BCD माहू । D सोह । C भुलावगा । A गावै ।
 D निति । A को । C को । C ताप का । ABC मिटावै ।

१६ A मूढ । A अग्यान अज्ञान । CD मियावर । BC को । AB भजत । C भजत ।
 D प्रजो । C मन मे । BCD है । LCD विगार । D भय । C म । A रस नै ।
 C रस न । DC बगहिबग । D बगहिबग । DC विकार । D को । A चरना ।
 C चरना । C चित ॥

दाहा

दीन महायक विन्द ह माहन श्रीवज्रगज ।
यह विचार कम्ना करी, म्याम गरीबनिवात ॥१७॥

मैं हा पापी मूटमत कपटी कुटिन कपून ।
प्रजपति क मरुन परया नाहिं डरा जमदून ॥१८॥

र मन मुनि नित विमय मैं कपटि रह्या दिन-गत ।
अजहा चेत अग्यान तुम काल विनील्या जान ॥१९॥

मुष भावी चात्रा मुक्कति पावी निज पुर वास ।
रात्रा मत चित विमय मैं तावा हरि हरि आम ॥२०॥

गणेश

जान क मान पिना नूत प्रपय दीन क दाम मुन-उत नारी ।
कीन का काम करारन का यह जान ता भूमि पट्टी अधिकारी ॥
कीन का राज तुरी गज मु द- अत नमैं रह जायगी नारी ।
चेन अजों मन मूट हरी भज कयो तुम भूलि रह्या गिरपारी ॥२१॥

१७. BC विन्द । A मान । D कृष्णगज । ECD विवाह । FCD करो ।
D म्याम ।

१८. C म । D म । D ही । A मूटमत । B कपटि । AFD क । AFD परया ।
AFC क । D जमदून ।

१९. A मन । BCD विमय । C म । D म । A विन्द । B कपटि । C रया ।
D विनील्या । ECD मरुन । D काल । C विनील्या ।

२०. A भावी । A च । C चात्रा । A नारी । A नारी । A मरुन । C मन ।
CD वास ।

२१. C वन । A कीन । D ही । C वात । AB कीन । D क । C वात । A कीन ।
A कीन । A कपटि । AFD की । AFD कीन । ECD वात ।
A की । D की । A मूट । C मूट । D मूट । A मूट । D मूट ।

कौन दिसा भूम कहा जाय कौन ठौर पर
 करै कहा काज अवलव नाहि गिन को ।
 जायक मसान हू म जार छार ढरी कर
 भूल जाय बात यो मुभाव अमौ मन का ॥
 केते हू उपाय दवा तौहू न इलाज चल
 मेटि कौन सकै यह काल ही के दिन का ।
 वन कौ न जोग अरु जन कौ न जार लग
 पल कौ भरौसौ नाहि काचे यह तन का ॥२२॥

मास नव मात ही के उदर मे पायी दुख
 गायी तहा म्याम विथा मेटी सब त्राम की ।
 जोवन को पाय अति छाय रह्या अम ही म
 गाफिल हू फेर चाल चल्यौ पाप रास की ॥
 तन को गुमान कर छिन का भरासा नाहि
 चेत मूढवादी यह मूरति ह नास की ।
 सास की निरास भय त्याम विनु और नाहि
 अरे मन तू तौ कौल भूल्या ग्रभवास की ॥२३॥

२२ यह कवित्त BCD प्रति म नहा है ।

२३ AB उदर । C मे । C पाया । A गायी । C गायो । BCD विथा । A जोवन ।
 AB कौ । D कौ । C रह्या । C अस । A हू । C मे । D म । ABC हू ।
 ABD कौ । A गुमान । ABD कौ । C भरौसौ । BCD मूढवादी । A है ।
 BC विनु । ALC नाहि । AB तू । AB तौ । C कौल । C भूल्या ।

बालकपन में नित खेल में त्रिताये दिन
 जोवन का पाय विषे मारग घटायी नर ।
 उद हू भये त जग आयक अन्यत भई
 ताहू प्रजराज हू का ध्यान उर लायी ना ॥
 आन क अचानक ही बाल तन घेर्यी जव
 तत्र तो उपाय कछु चित्त प दिग्यायी ना ।
 अरे मुनि डूत्र रह्यौ पाप के समुद्र ही में
 प्रिक मन तीकी मनमोहन को गायी ना ॥२४॥

वरनानिधान तुम वरना करहु मोप
 और हू न दीसै कोऊ रावरे समान नाथ ।
 पातिग अपार मोम पार हू न आवै अमे
 यतनी अविद्या भरी तन में उतिम गाय ॥
 मगत जु अमी मोहि दीसत न दीनवधु
 जामो मर वाज रहि जाय लाज मित्र पाथ ।
 प्रिन्द पिछान स्याम करिये उपाय अत्र
 मेटि दुग-जाल प्रभु मेर गही दाऊ हाथ ॥२५॥

- २४ C पत्रे । C म । C म । AD जोवन । ABD को । C पत्रयो । BCD वृद्ध ।
 D मे । C व । AB गो । BCD वृत्रराज । AB को । D को । A ऊरा ।
 ABC अंन । CD घेरयो । ABC गो । A ऊगाय । ABC चित । C दिग्याया ।
 BCD देरे । A मन । C म । D जग । C लोहा । AD को ।
- २५ D वे । CD पार । C म । ABC समान । D पत्रिय । A मो । C भमे ।
 AI भमे । C भमे । A ऊतिम । C भगा । BCD दनवधु । CD घरे ।
 BCD शिर । C मत्र करिये जग । A करिये । D करिये । A ऊगाय ।
 C म । A कोऊ ।

गज भीध ग्राह कीर्ण गातम की नार अरु
 केते जीव तारै स्याम त्यही अव तारोग ।
 मज (द ?) न कसाई नामदेव औ कवीर कही
 नरसी को सारयो काज त्याही काज सारोग ॥
 गवरो कहाय और कौन प पुकार करी
 ऐ हो वृजराज तुम विरद विचारोगे ।
 सकट को टारो प्रतपाल क्या न पारौ नाथ
 मेर अपराध ही का चित्त प न धारोग ॥२६॥

संज्ञा

सकट भट करा नदलाल जु लाज रखौ वृजराज विहारी ।
 वेर अनेक अनाथन की मुधि वगहि ल चित पीर विचारी ॥
 द्रौपदि की मुनि क छिन मै तुम राखि लई सिर खचत सारी ।
 तौ विनु कौन करै घनस्याम सु या जग म प्रतिपाल हमारी ॥२७॥

- २६ C गातम । CD तार । A साम । A त्यो । A अव । A था । C कहा ।
 ABD की । C सारयो । AD त्यो । AC सारोगे । D रावरो । ACD मोर ।
 BCD कौन । A प । BD प्रेहो । B वृजराज । D वृजराज । B विर ।
 B विचारोगे । D विचारोगे । A की । BD को । A कयो । ABC पारो ।
 A कौ । BD कौ । ABD चित । C चित्त ही पैं । AC प । ACD धारोगे ।
- २७ C करो । BD वृजराज । BD विहारी । BD वर । BCD वगहि । A नैं ।
 BD विचारो । D गारण । C ीर । A कौ । D राख । CD भवत । A विनु ।
 BC विनु । AB कौन । AD करैं । C मै ।

ररित्त

आनद के वद ब्रजचद ब्रजपाल नुम
 नद हू क लाल काल-डक त वचावीगे ।
 म ता हा मुरापी पापी पाप ही म पूर भर्यी
 अम गुन औगुन का चित्त प न लावाग ॥
 काम अर प्राध लाभ माह त लपटि गह्यी
 बह्यी अर जात नन माच को मिटावीग ।
 दीन क न्याय नाय दीन की पुकार मुनि
 ए हा ब्रजराज पद-पकज लगावीग ॥२॥

श्री कृष्ण मां ररि री प्राचना

मर्या

बूड गह्यी भवमागर म अवठवन आर कट्टू न गरो जू ।
 माह जजाल प्रिरा मरै तन की नुम म्याम मु पौर हरो ज ॥
 दीनदयान न्या बग्कि अपन अद री मुधि ना प्रिमरा जू ।
 एक प्रिमाम गही मन आम जु श्रीब्रजराज महाय करा जू ॥२॥

०८ ॥१॥ ब्रजराज । ॥२॥ ब्रजराज । ॥३॥ दबाबाप । ॥४॥ गी । ॥५॥ अ भै ।
 ॥६॥ पाप । ॥७॥ की । ॥८॥ बिर । ॥९॥ दे । ॥१०॥ साहाये । ॥११॥ मों हुन की बिर
 प न साशौ । ॥१२॥ बरम । ॥१३॥ मर । ॥१४॥ जी । ॥१५॥ मिगाव । ॥१६॥ हो ।
 ॥१७॥ हो । ॥१८॥ ब्रजराज । ॥१९॥ लपटा ।

०९ ॥१॥ डूव । ॥२॥ । ॥३॥ पाग । ॥४॥ गरी । ॥५॥ अकार । ॥६॥ रिदार । ॥७॥ म्याम ।
 ॥८॥ म्याम । ॥९॥ बर । ॥१०॥ मर । ॥११॥ मर । ॥१२॥ मुप । ॥१३॥ विमटे ।
 ॥१४॥ रिमल । ॥१५॥ ब्रजराज । ॥१६॥ ब्रजराज ।

श्री परमेश्वरजी साँ ऋषि की विनय

ऋषि

मूढ मतवादी कूर कपटी कुचाल भरयो
 करयो नाहिँ दान नित लोभ ही के काम की ।
 ग्यान को न लेस सतमग को न उपदेस
 रसना न लह्यी मुपनै हू नाम राम को ॥
 करुनानिधान मेरी करनी न धारौ कछु
 विरद विचारौ है भरौसो घनस्याम की ।
 दाम को न जोर वन धाम हू अकाम सब
 मेरे विमवास एक गवरे ही नाम की ॥३०॥

दोहा

करुनानिध करुना करी करुना सुनि वृजराज ।
 विरद निभावन पतित की, वाह गह की लाज ॥३१॥

३० C भरयो । C करयो । BC नाहिँ । A क । AIC काम । C का । D की ।
 BD की । D सतमग । II) की । A उपदेस । A नयो । C लह्यो ।
 AB नाम । AD) राम । C को । AD निधान । AC धारौ । BCD विरद ।
 BD विचारौ । C विचारौ । A है । AB भरौसो । C भरौसो । C की ।
 ABD दाम । ABD) की । AB जोर । ABD धाम । AD) घनस्यम । ABD मेर ।
 BD विमवास । ABD) नाम । D नाव । C की ।

३१ AC करौ । II) वृजराज । C वृजराज । B विरद ।

मन की गिता

रचित

धर्म का छान्डि अपधर्म हूँ मैं चालूँ नित
 मीम प कर्म बाध नली ना दिखावो ।
 हय ही की चाह मेह खरूँ पै चाह धरूँ
 एसी करूँ काम सो ता चाह का न भावो ॥
 न्याम ही मा द्रोह कर मोह करे औराँ मों
 हरि का निमार फेर पीछे पटिनावेगा ।
 मान के मुनन पान कीयै हूँ न घाप्यो ता तो
 तान व मुनन ही मों फर रहा पावेगा ॥३२॥

करे नित पाप ही ता पाप ही त डूँ तन
 धम ही की राह चलूँ धन ही कहावो ।
 म्यारथ का मात्र परमारथ पे नल्यो नाहि
 जग ही म आये योही जगम प्रितारैगा ॥
 नरुदह पाय अवमान जा न चूँ ता ना
 कभूँ रान्पाम ही ते फद मन आवो ।
 न्याम वा निभात्रगी तो आपन मिटाव वदि
 जमा रोज प्रारैगा सु तमा फन पावो ॥३३॥

३२. AHD व । D पय । C म । C प । C मता । A गियाली । D मेरि ।
 C रे । A धरे । IC केले । D अंग । C क । A काम । AB को । AB ली ।
 D काग । AB को । D को । (मालेग) D माले । A ही । A रोह ।
 A मों । (करे । D को । IC D निमार । APD व रूँ । A पल्लिवेगा ।
 C पल्लिवेगा । AD व । IC D तन । AI व रे । C को । C पता ।
 AID ली । AID ली । AI पारैगा । C पारैगा ।

३३. A करे । A P । AI ली । D ली । AHD वने । AID कर्णवेने ।

विघन टर सब दुख हर, कर सकल मुभ काज ।
रे मन मूढ अग्यान तुव, क्या न भजै ब्रजराज ॥३४॥

श्री परमेश्वर के विरद वणन

करित

गोतम की नार ग्रीव ग्राह कीर गज कहा
अजामेल आदि तार त्यौही चित्त वरौग ।
द्रापदी कौ चीर सिर खचत ही रागलयाँ
पडव सुधारयाँ काज त्याही काज सरीगे ॥
धुव का वताय निज रूप या अभय किया
हृग्यौ प्रह्लाद दुख ज्यौही अघ हराग ।
करुना जिहाज महाराज जग सिरनाज
अहो ब्रजराज त्याही मेरी सुधि करौगे ॥३५॥

ABD को । CD चल्पी । BCD नाही । D म । A प्राय । B प्राय ।
A व्योहा । BD याहा । AB वितानगा । D वितानगा । A पाय । BD जी ।
ABD ती । ABD ती । ABD क । ABD आवगो । D म्याम । AB कौ ।
D कौ । AB रिभावेगो । D रिजानगा । ABD ती । D जैमी । AB दावगो ।
D दावगा । AB पावगो ।

३४ BCD विघन । ABC टर । AC कर । D अग्यान । C तुव । D क्या ।
AFC मज । I वृजराज । C वृजराज । D ब्रजराज ।

३५ AB तार । AC त्यौहा । C चित्त । A धरौग । CD धरौगे । AB नैपता ।
D नैपता । D खचित्त । C खचत । A रागलयाँ । C त्या । A सरीगे ।
C सरीगे । AE कौ । D कौ । A हरीगे । CD तरागे । A महाराज ।
BC वृजराज । D ब्रजराज । A त्यौ ।

गहा

म जनक ओगुन भरया तुम गुन की ही खान ।
कानी दिम चित क्या धरी, अपनी रिन्द पित्रान ॥३६॥

विदयाम की श्रम

मर्या

या प्रज्वलद विमार हरी नर्मिष जु देव मु रूप उजागी ।
गावित गावुननाय दमात्त वीटल वामन मोहन प्यारी ॥
वारन तारन क मय नाम अनायन का दुय मेटनपारी ।
श्रीपति श्रीनिधि स्याम मुजान मुरारि मनोहर नददुलारी ॥३७॥

दाहा

मार मान निम त्विम हू माच करी जिन गाय ।
तान नाम जीवन मग्न, हरी करे मो हाय ॥३८॥
घट बट नटि तनक हू, मटि मक नहिं वाय ।
जा रिनि रिगी रिवाट प मा मिथ्या नहिं हाय ॥३९॥

३६ (म । C घाण । (भरया । (ही । (धरा । C मना । A) धरनी ।
J विल ।

३७ A ली । J वृत्रण । (वृत्रण । D वृत्रण । A रिमीर । D हटि ।
A नर । प । C) नरमि । A उजारा । (उजारा । A मोरि । C विग्न ।
D विटन । A वामन । (वामन । AC प्यारा । A वारन । A) D कव ।
C) नाम । A) D के । AC मयनवारा । A थ "उ । A न निप । D स्याम ।
D मयन । A) दवारा ।

३८ A मोर । A) D कर । C का । D के । A) D मो । A हू ।

३९ A वड । D हू । D म । A विग्न । AC मवाट । D मवाट । A मो ।
D म । A ली । H श ।

श्रीकृष्ण-महिमा

रचित

मूढ मतवादी अत कपटी कुचाल चलयी
 करयी नित पाप पाप ही के नित काम की ।
 काम नोब लाभ मोह तन हूँ मैं व्याप रह्यो
 या की अब छाडिक भरोसी राख स्वाम की ॥
 मेरी मेरी कह सब तेरी यह नाहिँ कछु
 तात मात भ्रात वाम चाहै धन धाम की ।
 अत छार भय एक दाम का न है रे तुव
 भज मन कृष्ण कृष्ण भिन्न कृष्ण नाम की ॥४०॥

संश्लेष

हानि सु लाभ अरु सुख सपत दुख बटायो हू नव बटै ना ।
 जेतइ चाम मैं दाम भरै सोइ काल के काल सो सास घट ना ॥
 ह्वै नरसक रहो मन रे तुव श्रीब्रजराज की नाम रटै ना ।
 भाल मैं लीक लिखी विधि सो कछु कोट उपाय किय हू मिटै ना ॥४१॥

४० C चलयो । CD क । ABC काम । A काम । BCD नोब । A नोब ।
 A मोह । A व्याप । A रट । A छाडिक । C भरोमा । D भरोसी । D स्वाम ।
 C का । CD मेरा मेरा । C करे । CD मेरी । C नाम । A चाहै । ABD धाम ।
 D की । D भया । ABD की । C तव । A कृष्ण । ABD नाव ।
 AD की । C की ।

४१ AD हान । B हान । D नाम । A दुख । C बटायो । AD नैक । C बड ।
 BC जेतइ । A चाम । AD दाम । D भर । A सोइ । B साई । D साई ।
 C घट । D ह्वै नरसक रट ना पाठ नही । B ब्रजराज । C ब्रजराज । D मे ।
 BCD लवा । A विधि । BC विधि । A सो । A कोट । A उपाय । A किये ।
 D किय । A मटे । C मि ।

प्रस्ताविक

दाहा

मपत मे मिलि ह सब, रिपत पर नहिं कोय ।
दुम् गुम् य दुहु मम गिन, जे नर रिगला हाय ॥८०॥

श्रीकृष्ण नाम

मोहन गिरगर म्याम छवि प्रनमानी गाविद ।
श्रीपति हरि त्रिधि चक्रगर कृष्ण कु वर प्रजयद ॥४२॥



४२ C १ । C २ । IC रिग । A १२ । D १३ । A १०४ । A १०५ ।
AIC रिग ।

४३ IC १०५ । A १०६ । AIC रिग । A १०७ । IC १०८ ।
AIC १०९ ।

शृंगार-माधुरी

शृंगार-माधुरी

उर्पाश्चतु वर्णन

संशया

घोर घटा चिह्न जा- चली मिलि सोर करे पपिया अति भागे ।
 मारन ती मुनि दात मरती चर चित्त वर त्रिनु श्रीगिरिप्रागे ॥
 छाय विदम रट मनभावन आवन की यह कील विनागे ।
 है धन नाग मु गी मजना जय जानि मिलै पिय कुजप्रिहागे ॥१॥

दाहा

गरजि घटा चपरा चमरि, चिह्न दिन दादुर गा- ।
 अवनी अनि प्रफुल्लि भट्ट, जालन चायन मार ॥२॥
 पावस त्रिनु ह अनि भरी, माहन नित डिग हाद ।
 पिय वियोग प्री प्री चाहन नाहिंन काद ॥३॥

- १ A घोर । C चह । AIC घोर । A मित । A मारल । A म- । ABD त्रिनु ।
 A टा । D हे । AIC विनागे । D हे । A विनाग । A अनि । A मिलै ।
 ABD विगत ।
- २ CD विर । C मार । D चर । A मोर ।
- ३ A है । A मार । A लीन । C विदम । ABD वर । C मरि । A म- ।
 D म- ।

कवित्त

घुमड घुमड घटा वरसत बू द बू द
 चमकि चमकि बीज नित्त कौ टगावै है ।
 नादुर पपीहा मोर बोलत अनेक खग
 बिरह बिहाल करि तन कौ तपाव ह ॥
 रहत हा तोकौ सुनि सुघर महेली अब
 कसे हू मुजान हू पै पाती का पठाव हे ।
 मही हू न जाव रन नीद हू न आवै छिन
 बछु न मुहावै स्याम दरस कौ चाव ह ॥४॥

नायक प्रति सखी वचन

उप्यय

करत मोर अति सार घोर पन वरसत जित तित ।
 नित अनग मन दहत महत नहिँ बाल लाल चित ॥
 जह तह बोलत वर वर दादुर मु टरावत ।
 भावत नहि बछु भोग रोग तन तन दरसावत ॥
 यह समय वेग सजि चलहु तुम तजहु स्याम सुनि काज सब ।
 सुख पाय चाय परमाय रम जाय मिलहु ब्रजराज अब ॥५॥

४ BCD वरसत । BC बू द बू द । D बूँ बूँ । AC है । D पपीया । A मोर ।
 A बोनत । BCD बिरह । BCD बिहाल । A कौ । CD कौ । C तपाव ।
 D तपाव । C है । C हा । A तोको । C ताकौ । AB कसे । D कसे ।
 D न । ABD पै । CD का । D बू । C पगाव । B रैन । A नीद ।
 A आवै । A मुहावै । C कौ । C चाव । A है ।

५ A मोर । D अनग । D बाजल । A जह तहा । BD जग तहा । D वावत ।
 D बछु । A मह । BD वग । C वगि । D तजिहु । A मुन । BCD ब्रजराज ।

विरहिनी की परित्रा नायक प्रति

कवित

प्रीतम मुजान प्रानप्यारे घनस्याम अत्र
रावर दरम विनु जिय बहुलात है ।
र्यान अर पान तन भूपन तमन मव
अगराग अतर फुनेल ना मुहात है ॥
पावम की फौज मिलि घेरत ह चिहू ओर
मार कर मार त पुकार व डरात है ।
मैन मरसात अग अग मुरभात नन
नीर नही आत व्याथ मही ह न जात है ॥६॥

उद्वय श्यागमन

गंथा

उद्वय आय गय त्रय म मुनि गागिन के तन मे मुग्ध छायो ।
आनर मा उमगी मगरी चनि प्रेम भरी रधि आन बंधायो ॥
पूछति ह मनमाहन की मुधि वालत ही दिग नीर चलायो ।
पगि मनेह गगा हरि के घनस्याम वियोग कछू न मुनायो ॥७॥

६ 110 विनु । D पनुतार । AB ३ । BCD ववन । A वार । C मार ।
A मिल । ABC परत है । AB दौर । A मोर । A न । AB है । D न ।
197 ध्याप । AB है ।

७ A उद्वय । D उवय । 110 वृत् । C वृत् । (म । D व । C म ।
110 आने । A उमगी । C वधाया । C है । B मनमोहन । A बोवड ।
AC न्य । C घनापा । D पत । AB व । D घनस्याम । A वियोग ।
(मनापो)

उद्धव प्रति गोपी वचन

मंत्रया

ब्रज में सुनि आगम उद्धव का चिहूँ आर सग्री जन आन खरी ।
 सुघ पूछत ह वहि प्रीतम की तन में मन म अति प्रेम भरी ॥
 ठगलै हम का नदलाल तब अब नह दुरावन को जु करी ।
 मिलि ह कप्र स्याम मुजान कहा तुम जानत ही मन की सगरी ॥८॥

दाहा

विवल भई सब ब्रज बधू गड दह मुधि भूल ।
 मनमाहन के चलत ही प्रगट लही उर स्न ॥९॥
 कब मिलि ह मोहन अली अत सनह मुख दन ।
 जब जानत जीवो सुफल, मुनि ही सुदर वन ॥१०॥
 उद्धव तुम जाय इहा करत जाग की वात ।
 वरन वरन एस लग, करत वज्र की घात ॥११॥

-
- ८ BCD वज । O म । A उद्धव । BD को । C का । BD बिहू । C चहू ।
 ABC शौर । A पीतम । C म । O मे । ABD ठगन । A नदलाल । CD तब ।
 ABD को । A मिल । D है । C को । D 'तुम जानत ही पा' नहीं । CD हो ।
- ९ AFC विवद । BD ब्रजवधू । D भूनि । D क । A उर ।
- १० A मिन । C है । \ मोहन । A रैन । AC जायो । A मुन । D ही ।
 AIC रैन ।
- ११ A उद्धव । AB यहा । D जोग उपरम । ED वरन । O एते । CD वध ।

कहत तुमी मा प्रजवधू, प्रात विचार विचार ।
 नाग भाग्य का मनो, हैं माहन नावार ॥१२॥

कवित्त

पहल लगाय प्रीत गीत ही प्रताई म्याम
 कुजन म मग अग रग प्रमाये ह ।
 बपटी बठार रहा जाने पर पीर ही म
 रगिक विरामघान मधुपु छाये ह ॥
 चरी प्रम भय रत ह हम जानत ह
 गहि की दुगरी तिय रूप प तुभाय ह ।
 उरी तुम आय बात भरी प्रतगाये हरि
 नह री दुगाय ग्यान दन रा पठाय ह ॥१३॥

श्रीकृष्ण जन्म उत्सव

मरदा

माहन म्याम भये जगजीवन ते वमुदर मु गाद विलावे ।
 मात विलावन मुदर मूर्त नन निहा मदा पुग पावे ॥
 गात्रु री जुरती मिति के रति रात्र चित्ते तिम आनि प्रपाव ।
 आनद प्रेम नरी श्रजवाग निगान नई पव मगल गावे ॥१४॥

१२ BCD कहन । C मा । FCD प्रजवधू । HD प्रात । ID विचार । J D विचार ।
 C मारव । D मारव । A D को । C मनो । APC है । A मोहन ।

१३ AHD वरने । A I । HC म्याम । A म । C म । C परताय । AD जाने ।
 C है । FCD वध । C मग । AP ह । C म । ICD जानत । A है ।
 APC को । CD को । AC दुगाय । D प्रताये । C है । D तुभाय । C है ।
 CD उरी । BC वपटी । C मा । D को । C मा ।

१४ A म । BCD वमुदर । D मूर्त । C मूल । D मुग । C नन । A लीलाय ।
 AHD तिम । C के । C वर । A नन । HC वपाव । IHD प्रतगाय ।

नेत्र-वर्णन

दोहा

खजन से अग मीन से, राधे तेर नन ।
लागत ही मा मन विषै, प्रगट करत ह मैन ॥१५॥

लाज भरे आलम भरे, छक प्रेम मद मैन ।
गिरधर कौ बस करि लियो, प्यारी तेर नन ॥१६॥

भाहू-चाप चढाय क, द्विग जुग वान लगाय ।
तन मन सा मोहन मखी, तेर परिह पाय ॥१७॥

चदमुखी मृगलोचनी, हसगमनि अति चारु ।
मनमाहन तापर मखी प्रान करत बलिहार ॥१८॥

१५ D में । BCD मृग । AD मान । D में । BC है । C नन ।

१६ ABC छक । C मन । D का । C का । A लाय । D ताय ।

१७ C भाई । D भौई । D चान्द । C व । D तायाय । C सा । A मौ न ।
ABD नर । CD ३ ।

१८ A अग । D ह्म । ABC गमन । A मोहन । A बलिहार ।

नम्र वणन-मयी प्रति सखी वाम्य

कवित्त

सजन मे तिउछन मु मीन से चपनता में
कज मे विमाल ये कुरग जैसे वारे है ।
नीद भरे घुर अलसान ही म आप रह
उपमा न नाग जे रिग्च ह के डार है ॥
प्रीतम मुजान घनस्याम ही के चित्त प्रीच
लागत मु प्यार हिय प्राण हू जे प्यार ह ।
टरत न टारै न्यार नक न रहत बाली
अति अनियारै नन मन मतवार है ॥१६॥

मवया

प्रानन प रद चद वगी अर भाहन प वहि चाप विडागी ।
वेगन की छिप प मनभावन भागन की अवनी मत्र टागी ॥
भूपन अत्रर नाभि ह तन चार हिय जु मगल न प्रागी ।
मुदर न ग्रपभान मुता निय ननन प मग पजन वागी ॥२०॥

१६ PCD गिलन । D मान । D में । C प । D म । D म । C है । D ना ।
D मरा । C म । A और । D रह । D उरमा । C मल । LCD विरप ।
C है । A बि । A बाब । A सुप्यार । C है । CD तार । A D में ।
A अनियार । C अनियार । CD है ।

२० पर मवया LCD प्रति म म/१ है ।

दोहा

नखरारे कारे घुर भर प्रेम मद मन ।
अरे करेजे म अली, अजव गजप्र मे नन ॥२१॥

प्रगट करै सुख मन हर, निपट नह नित दन ।
खजन से अग मीन से आली तरे नन ॥२२॥

नेत्रवर्णन-सखी वचन नायक प्रति

कवित्त

मोहन सुजान घनम्याम हू के चित्त बीच
लागत कटाच्छ अति नह भरे दग्ग ।
तो विन विहाल रह अेगी अलप्रेली नित
तेरे ही दग्ग काज प्रान अति तरमे ॥
ऐसौ कहा कीनौ वस और कठु दीस नाहि
तू ही बडभाग पिय पाय गिरवर मे ।
भजन कुरग मान अजन मँवारे नन
खजन चकार कज मर से मफर मे ॥२३॥

२१ D करज । C म । CD नन ।

२२ A करै । A हरे । C न । D स । BCD मृग । A मान । D म । D नन ।

२३ A मोहन । A वित । C दग्ग । A तो । FCD विन । FCD विनन । C रहे ।
C बेसो । D असो । A कीनौ । D नू । AB मरारे । D मरारे । A नैन ।
A चकार ।

केश-वर्णन,

दोहा

स्याम सचिक्कन सरल अति, तिछ्छन मृदुल सुवेस ।
मनमोहन मन मोहनै, राघे तेर केस ॥२४॥

वशी-वर्णन

मोहन कर मुग्गी नहीं, ऊछु इव बढी बगाय ।
या प्रज की सत्र ब्रजवपू, मुनि धुनि अति अबुलाय ॥२५॥
ह वैग्न तुव पँसुरिया, तन को करत बिहाल ।
छिन छिन सटवत हीय मै, रहत पिरह प्रम बाल ॥२६॥

वशी प्रति गोपी वचन

मरीया

मोहन के मुग्ग लाग रही अभिमान मरी अनि वयो नित गाजँ ।
व्यापुल हूँ प्रजवाग मर वह भूलि गई मिगरे ग्रह वाजँ ॥
ताननि धीच परी धुन री जत्र तँ मुग्गोगन को टर भाजँ ।
वेर हि वेर पुरार वह मुनि वैग्न वामुगिया मत वाज ॥२७॥

२४ A छोहन । CD जिगन ।

२५ A मोहन । A इव । A बग । IC बगाइ । D बगाइ । A स्या । BD ब्रज ।
B ब्रज । D बर । PCD अनुसाइ ।

२६ AHD वैरन । BC बगुरिया । D बँसुरिया । CD तन वा । A रिगत ।
D बिछ । D बम ।

२७ A व । LCD व्यापुल । BCD ब्रजवान । CD मई । AFD वानन ।
ABD वी । D प्री । D बट्ट । C ईछिन । D बगुरिया ।

गुरजणन-सखी प्रति सखी वाक्य

कवित्त

सु दर सलौनी अति रूप को समुद्र सोहै
 पीतम सुजान हू को जीवन सु जीकी है ।
 गुरजन लोक ही को आनद करनहार
 सौतन निहारत ही होत दिल फीकी है ॥
 सची रती रभा कछु समता न पाव नैक
 सब ही तिया को सदा सीस ही को टीकी है ।
 मोहे मन पी को सुखदाई नित ही को सखि
 भाननदिनी को मुख चद हू त नीकी है ॥२८॥

दपति वर्णन-सखी प्रति सखी वचन

सवैया

श्रीधनस्याम सुजान अली ढिग सोभित हू वृषभान किसोरी ।
 नैनन सौ मिल नैन रहै रस पाय रिभावत है नित गोरी ॥
 हौ छवि देखि निहाल भई सुनि दोउन के तन नेह बढोरी ।
 धू ससि सूरज त पुहुमी पर राज करी वह सु दर जोरी ॥२९॥

२८ C सलाना । ABD की । AB सोहै । D साहैं । ABD की । C जीका ।
 ABD हैं । A लोका । C नक । ABD की । BD सौतन । C मोतन । A हीन ।
 CD फीकी । ABD हैं । BCD पाव । ABD नैक । ABD की । ABD की ।
 CD टीका । B टाकी । A हैं । A मोहैं । D मोहे । ABD की । ABD की ।
 D नदनी । ABD की । C नाकी । D नीका । AD हैं ।

२९ BCD है । A किसोरा । ABC रह । AD गोरी । D हौ । A दोऊ ।
 BD दोउ । BCD बनेरा । AB जितैं । ACD करा । A जोरा ।

दोहा

कुजविहारी कुज म, राजत निज तिय सग ।
मानौ अपनै भवन म, सौभित रती अनग ॥३०॥

नायिका श्वातयौगना

खेलन के मिम लै गई, कुजभवन म वाल ।
चकित भई नवला नई, दग्गत ही नदलाल ॥३१॥

नायिका मध्या धीरा

कवित्त

मुघर मुजान स्याम नेह के निधान तुम
प्राण हू के प्राण गुनवान प्रेम पागे ही ।
गिर भर लाचननि रोचन वी लाली अति
धूमत घुरत अल्मान रन जागे ही ॥
जावा धिन भाग सा नगी ह उर रावर मी
गवरोऊ भाग तिन वाक उर लागे ही ।
बैठिय गुपाट आये भोर भेर भौन लान
दाम चहा नाम लीन जासौ अनुगग ही ॥३२॥

३० A कुज । ALD बिहारी । A कुज । D कुज । C म । BD मानो । C माना ।
BC माने । D मनने । BC मानित । D मोनत ।

३१ AD के । B के । A कर । C म ।

३२ ABD निषन । C हा । D ही । ABC धूमत । A जाग । C हा ।
BCD धननाग । AD ली । A है । A ऊर । A रावर । D उ । A ऊर ।
A मा । C हा । D ही । ABD बैठिये । FCD मर । C गग लान । C मोने ।
IC धनुष । C ही ।

नायिका रूपगविता

सर्वेया

एक सम मनभावन छैल निहारत ही वस मोह भयो री ।
चदमुखी कहिक बतरावत चाह करै कर जोर रह्यौ री ॥
हौ सजनी अति ही सकुचावत पीतम को नित नेह नयो री ।
रूप लुभाय सुजान अली त्रिय औरन की सुधि भूलि गयो री ॥३३॥

दोहा

अपन तन के रूप को, अति ही करत गुमान ।
रूपगविता नायका, ताहि कहत कवि जान ॥३४॥

मुग्धा अभिमारिका

कवित्त

केलि के भवन भग निक्सी सुजान तिय
सुदर सलौनी अग सोभा दरमात है ।
चद को सो भाल राजै भ्रकुटी कमान जसी
जाकी रूप पेखि रति रभा हू लजात है ॥
सची उरवसी कछु समता न पाव नक
वचन पियूख मद मद मुसकात है ।

३३ C सम । D निहाररति । A मोह । BCD भयो । A करै । A जोर । C रह्यो ।
A मत । ABD को । BCD नत । A नयो । CD नयो । CD औरन । D भूल ।
BCD गया ।

३४ ABC अपन । D क । BCD को । A घत । A गविता । D कवि ।

चली नव ब्याल नदराल प शुमान कर
ज्यो ज्यो डिग जात त्यो अति सबुचात हे ॥३५॥

कुलटा नायिका लच्छन

दोहा

माहत है नर नगर के, छैन मु कुलटा नार ।
बते पति गो को गिने, जेते सिर पर वार ॥३६॥

छिनरहि में सर नगर के, माहत है तिय छल ।
निड भई पुलटा नई, गरी हत नित गैल ॥३७॥

कवित्त

मोहन नगर ग्रह ग्रह के सकल छल
गन में गरी ह गन जान बतराय ह ।
निडर निमर भद राह की न आन अग
ग नो अनेवन सा ननन मिलावै ह ॥

बाह की डुलावै चावै जग की रिभावै गावै
एते यह लच्छन सो कुलटा कहावै है ॥३८॥

सडिता नायिका को वचन नायक प्रति

कवित्त

पाघ ही के पेच खुलि रहे घनस्याम आज
नैनन में नीद कही कौनसी तिया बरी ।
बूझत ही बेर-बेर काहे कौ दुरावी बात
जान लई घात जे सुभाय सब रावरी ॥
कपटी किसोर चोर ठौर-ठौर हू के मीत
करत अनीत निज प्रीत कौ सब हरी ।
धरी जिन आस जाके पास ही बित्ताई रात
प्रात समें मौप मनमोहन मया बरी ॥३९॥

आये घनस्याम मेरे भौन अति प्यार ही मौ
भूपन विचित्र अग अग प कहा करै ।
विन गुन हार हिय बीच ही विराज रह्यौ
सीसफूल ही कौ फूल भाल प भली धरै ॥

- ३८ A मोहत । D छल । C म । ABD हैं । BCD वारें । BCD बतराव । ABD है ।
ABC बाहु । D ननन । D मिलाव । ABD है । ABD राखें । C म ।
ABC लीपें । ABC कीपें । ABD विभचार । C ओ । C भाव । ABD हैं ।
ABD दुनावें । ABC चावें । A सो । C बहाव । AB है ।
- ३९ D पाय । C बहो । A काहै । D बात । D कपटी । A चौर । BCD ठोर ठोर ।
D मित । BCD सब । D माप । BC मापें । A मनमोहन ।

कौन की तिया की आस पूरी नदलाल तुम
 काहै को दुरावी बात टोरी अब ना टरे ।
 हरे हरे बोलव बिलोकत हो मूधे चित
 रन की गुमारी नैन बैन प लखी परै ॥४०॥

सरीया

बौळ नही प्ररजं धनम्याम रही वित ही जित ही रत मानी ।
 काहकी साह हजार करी सग रन जग सु रहै न अछानी ॥
 एती अनीत करी नित ही अपने चिन पै सु भली मत अनो ।
 मावरे गवर नह की रीत दुरावो कहा हम ती पहिचानी ॥४१॥

अन्यम भोग दुषिता नाथिना का वचन सखी प्रति

कवित्त

नैनन मिलाय अति जोवन जनाय आली
 माह्यी नदलाल चित्त पीन वीं लगाई है ।
 भूपन तुगाय अग अग मसलाय सुन
 ए नी उर बीच नखरेग छत्रि छाई है ॥
 अधर दनाय रम पाय मनमोहन वीं
 कचुकी फराय मद्य गीत दरनाई है ।

४० D मी । AB दे । ADF ह व । C प । D मरी । A परै । EC नम्याम ।
 A नाँ । ABD वी । C दुपवा । ECD वउ । AFD हरे हरे । A बोन ।
 D रे । ECD विनाश । C ना । C नैन । A परै ।

४१ A बौळ । IC बखरे । D बदे । D धनम्याम । D नाँ । C मोह । C बरत ।
 A छै । ALC लखी । AFD वीं । A मय । D बाप । IC दुपवा । A छ ।

वात की पठाई 'तन आग सी लगाई मेरें
 स्वाम को रिभाय घेगसीस पाय आई है ॥४२॥

उत्का नायिका

सवया

वीत गई जुग जाम अली यह रीत नई घनस्याम न आये ।
 औध वित्तीत भई अब तो घर सोय रह मन वात भुलाये ॥
 कौन विचार करी सजेनी 'तन में सफरवज वान लगाये ।
 छाय रहे मनमोहन छैल मनो बहु भामिनि रुप लुभाये ॥४३॥

उत्का नायिका सखी प्रति मसी वाक्य

कु जन वीच खरी मनभावन आवन प्रानपतो चित चावत ।
 आनंद सौ मन ही मन म अत नेह धर अग काम बढावत ॥
 चौक पर छिन ही छिन म अनमेख किय जुग नन लगावत ।
 वेर भई निसि वीति गई यह रीत नई मनमोहन आवत ॥४४॥

दोहा

मनमोहन के मिलन की लाग रही तिय आस ।
 ज्या ज्या निस वीतै अली त्यो त्यो निपट उदास ॥४५॥

४२ A जीवन । AB जनायि । A मोहो । CD मोहो । ABD है । A ऊर ।
 A हैं । A मोहन । C को । A हैं । C को । C को । A हैं ।

४३ AB बाति । C वीति । C भाष । D वित्ती । A तो । D सोय । C करो ।
 C म । A मोहन । D छन । D बहु ।

४४ D प्रानपत । D वित्त । D चावत । AD आनंद । ABC मन । C पर ।
 C म । D वरि । C विति । BD राति ।

४५ A 'या 'या । ABC वानें । A उग्राम ।

उत्तरा नायिका मरी प्रति वाक्य

मरीया

आज कहा त्रिलम्बो मनमोहन सु दर नागर नददुलारा ।
 बीत गई मुन गी मजनी निम भोर भयो प्रगट्यो उजियारो ॥
 व्याकुल है मन मेरी अली अब याको बछू तो विचार विचारा ।
 भूल रह्यो रम में मनभावन क्या नहिं आयी री प्रान पिमारो ॥४६॥

अन्यममोग दृग्गिता नायिका मा उचन रूती प्रति

कवित

प्रीतम के पान जाय निस ही में मुग्ध पाय
 अति नी रिभाय भई तेरी मनभाई ह ।
 म तो गरी जानी गरी बरी मनमानी जय
 रही ह न छानो मय रीत दरसाई है ॥
 प्रति ही गुमान भरी हरी मत माहन की
 गरी ऐसी कहा मौमो भई दुग्दारी है ।
 अर नैलाई छारि बचुकी फराई पिय
 लैन की पठाई तामो रग करि वाई है ॥४७॥

४६ D कहा । IC त्रिलम्बो । D मनमो । A भोर । CD क्या । AD व्याकुल ।
 A मेरी । AC मग । A म्या । C का । A बल । D छ । C विचार । CD म ।
 A नग । IC मारी । AD विचारो । D विचारी ।

४७ A उचन । AB म । C मे । A पन । A ही । DD है । CD छ । AB है ।
 A पान । A मई । C पय । A है । A पन । A मौन । A मौनी ।
 IC मनी । ID है । D वार । A है ।

जैसे ही मिस बात के, गई सुहागन सैल ।
ननन सौ बस कर अली, छल आई तिय छैल ॥४८॥

अधर दगे कुच नख लगे, भई कहा यह बात ।
नेन घुरे अरेरी अली, जगी कौन सग रात ॥४९॥

नायिका कलहातरिता प्रति सखी वचन

बात अटपटी नेह को, करत चटपटी स्याम ।
चल गिरधर प री सखी, बिकल करत तन काम ॥५०॥

हे वडभागिन भामिनी, तेरी है वडभाग ।
ब्रजनिध नदकुमार कौ, है तो प अनुराग ॥५१॥

मानिनी नायिका प्रति सखी वचन

मनमोहन तोकू सदा, जानत तन मन प्रान ।
ऐस पिय सौ ह अली, मान न भलौ सयान ॥५२॥

४८ A हा । BCD बात । ABD क ।

४९ D दगे ।

५० BC बात । BCD बिकल ।

५१ D वड । A नरी । BCD ब्रजनिध । D नद नदकुमार । BC कौ । D कौ ।
A तौ ।

५२ A मोहन । A तौ । BC ऐसे । D जैसे । C सो । ACD भलो ।

दोहा

आरतवान अधीन हूँ, ठाढ़े दुहुँ कर जोर ।
 ग्रजनिघ प्रीतम सी अली, कमी बैठी मुख मोर ॥५३॥

नायिका फलहातरिता प्रति मखी वाक्य

संज्ञा

प्राणपती चित आनद सी मनभावन के ग्रह आवन कीनी ।
 भामिनि भौनन बीच गरी मुख मौन गहै कछु बोल न दीनी ॥
 स्याम मुजान करी मनुहार त्रिहार करे अति प्रेम नवीनी ।
 रुठि गय घनम्याम तत्रै जय वैठि गही करि मोच मलीनी ॥५४॥

मानसनी नायिका प्रति मखी रचन

वीत गई जुग जाम जनी हठ छाड भटू अति कयी अर छीज ।
 माहन चाह तजी चित म अपन हित न चित चाहहि कीज ॥
 बेर हि बेर पुया कइ कछु मान भला हमकी जम दीज ।
 कयी मुख मोर रही राजनी पिय मा मित्र अघरा रम पीज ॥५५॥

५३ C आरतवान । D आरतवान । AEC ठाढ़े । AEC दुहुँ । A जोर ।
 ECD ग्रजनिघ । D सी ।

५४ ABC मानसनी । LCD न । D भौनन । ABC गरी । A मौन । A हूँ ।
 A कौन ।

५५ AB दोह । D पय । A कयी । D सी । A मौन । D न । EC पयन ।
 A न । A घरा । C पया । A हनु । A पीर । D न । D पयन ।

दोहा

चमकि चमकि चपला चपल, घुमडि घटा चिहु और ।
पिय विनु तिय तन छिनक म, डारत मदन मरौर ॥५६॥

कवित्त

मोहन सौ मान करि बैठी प्रानप्यारी अति
कैसो री अयानपन पग्यौ है री तन म ।
प्रान ह त अधिक सुजान स्याम जान नित
राग्यत है मान तेरो सब तीय जन म ॥
भोर अरु साभ दिन राति मैं न दीसँ और
लेत मुख नाम ध्यान चाहै छिन छिन म ।
ए री अलपेली हली सुन री नवेली अब
मेरौ कह्यौ मान कान राख मेरी मन म ॥५७॥

सरया

मनमोहन की छवि देखि अरी उठि वठि रही घर क्यौ लजनी ।
चित्त चाह कर घनस्याम सुजान सु वीतत जात सबै रजनी ॥
मुसिकाय मिली अपन पिय सा तुव चाल निहार लज गजनी ।
तन मैं विहाल कर उनका सुनि मान कह्यौ चल री सजनी ॥५८॥

मोहन सौ कवहू सजनी सपन हिय मैं कछु मान न कीजै ।
नेमन सौ तनसौ मनसा वह रूप निहारत ही नित रीज ॥

५६ D चपला । A घुमडि । BC घुमडि । BCD चहु । A विनु । D मैं । C मरौर ।

५७ ABC मान । ABD कसो । A है । \ है । D ह । C तरो । A भोर ।

D राति मन मैं दन नीम । C धार । A चाहै । ABC नयनी ।

५८ A मोहन । C धरि । A उठ । D कौ । A सबै । BCD सपने । A निहारि ।

AB नजै । A विहाल । A ऊनरौ । D सुन । ABC चनि ।

प्रेर हि वेर कही मनभावन या जग में जस वास सु लीजै ।
पीतम स्याम सुजान हि मों भुज भेट अली अघरारस पीजै ॥५६॥

नायिका प्रति मरी वचन

नैनन जोर मरोरन भौहन मत्र मनौ पडिब कछु दीनौ ।
तौ विन स्याम सुजान अली छिन ही छिन मं तन हात सु छोनौ ॥
दच्छन सी अनुबूल भयो ब्रजराज पती अति ही परवीनौ ।
नैक निहारत ही मनभावन मोहन की बस में करि लीनौ ॥६०॥

कविच

सु दर मलीनी गजगौनी अलवेली नारि
नव ही निहारि बस करै ब्रजराज तव ।
लेगी ही वियाग राग अग में अनत भयो
आवै मुधि तरी वह बोले नीठ नीठ जब ॥
एस कहा कीने बन वावरे मे गहै नित
और हू निया की मुधि भूने घनम्याम सब ।
एव की कही री मुनि मिल मनमोहन सौं
व्याकुल भये ह प्यारी प्यारे नदनाल अब ॥६१॥

५६ D मनमौ ताभौ । D बहू । AD ही । C बहो । A व्या । D म । AFC ही ।

६० C मे जार । A जोर । A मोहन । C माहन । D की । BCD विनु । A पीत ।
A छिना । D छिनौ । A अघरार । D अघर । A मो । D भयो ।
BCD ब्रजराज । AB भैष । A भोगन । D बनि । A नाता ।

६१ A मू दर । A म्रगौना । C नार । D बनि । BCD ब्रजराज । ACD तरी ।
A वियोग । A रोग । CD मरी । A पावै । A भोरै । BCD बम ।
BCD बावरे । A रहै । D बरो । A मोहन । D मो । BCD व्याकुल ।

मानवती नायिका प्रति सखी वचन

सखैया

रैन दिना हिय ध्यान रहै सब सोतिन तै तुव है अति प्यारी ।
ता पिय सौ नित मान कर जु अरी सजनी यह रीत सु न्यारी ॥
हास बिलास विना सुनि नागर व्याकुल है ब्रजराज विहारी ।
मोहन जानत है अति बल्लभ प्रानहु तै ब्रपभानकुमारी ॥६२॥

परकीया नायिका प्रति सखी वचन

मोरपखा सिर सोभित है गल गुजनहार सु काछ कछी कट ।
वेर हि वेर लै नाम सखी सुनि प्रानहि मैं अति लाग रही रट ॥
मोहन की छवि देख अली चल मान कछ्यौ अब छाड सबै हट ।
बन वजाय रिभावत छैल सु ठाठै गुबिंद कलिंदसुता तट ॥६३॥

सखी प्रति मखी वचन

कीरत की तनया मनभावन स्याम मिटावन काम की बाधा ।
देव तिया रति औरहु की कछु नाहिँ रहै पति कै चित साधा ॥
हैं नख त सिख लौ अति सु दर नेम बढावन प्रेम अगाधा ।
प्रान की प्रान सुहागिन भामिन रूप निधान सुजान है राधा ॥६४॥

६२ D रन । ABC दिना । A सोतन । ABD हँ । A करै । C ज । A सन ।
BCD ब्रजराज । BCD विहारी । A मोहन । C है । BCD ब्रपभान ।

६३ D पखा । ABD सोभिरह । A गु जन । D हि । BCD न । A सुन । A मोहन ।
C देखि । AB छाडू । ABC सबै । C नैन । D बैन । ABC ठाठै ।
A गुन्द । D गोबिंद । A कल्प ।

६४ यह सवया BCD प्रति म नहीं है ।

नायिका प्रति सखी वचन

करि

सुंदर सखीनी गजगोती अलबेली नारि
 तो बिन विहात नदलाल तन पोर है ।
 भूपन बसन खान पान विसराय दिय
 रैन दिन तन मन धरत न धोर ह ॥
 तेर ही कटाछ ही सी घायल भये है स्याम
 चलि री निहार जति व्याकुल अहीर है ।
 ए री वृषभान की कृमार राये वन मुनि
 तेरे नैन काम की कमान के से तीर है ॥६५॥

निस दिन मोहन को चैन ह न पर आली
 काम ह की आग तन मन में जगी रह ।
 रग अर राग गान पान औ उमग भूले
 और ह निया की मुधि दिल ते भगी रह ॥
 सुंदर सखीनी तगी मद मुसकयान प्यारी
 पीतम के नित प्रति चित्त में पगी रह ।
 मान की कुमारी मुनि नेरी मुग देखिबे का
 स्याम ह के लाचन का लातना तगी रह ॥६६॥

६५ D गुर । C मन नी । AIC गजगोती । A नार । ICD हा । C है ।
 A दीप । ND रहे । LCD है । C मया । C है । IC स्याम । D बरा नरी ।
 C रनि । BCD गायुन । IC है । PCD वरमान । A कृ वर । ALC मुन ।
 A रे । A क रे । D क में । CD है ।

६६ A मोहन । ABD को । AB परे । P रे । A ऊपर । D मंग । C त ।
 AB रे । ABC सखीनी । A क । D रहे । D वृषभान । A कृमार ।
 ACD हा । A देखे । D देखे । ICD को । D को । PCD लाचन ।
 A रे ।

नायक प्रति सखी वाक्य

कवित्त

रावरे दरस विनु विकल विहाल बाल,
 लाल उठि चलो मिलो प्यारी सी महल मै ।
 नीद हू न आवै नैन तन म न पावै चैन,
 परी रहै रैन ऐस वाम की दहल म ॥
 निठुर मुरारि अत सब ही विसारि हित,
 कही एती बात तुम मानत सहल मै ।
 प्रीतम सुजान निज प्रीत को पिछान बहे
 हुकम अधीन रहै नित ही टहल म ॥६७॥

संज्ञा

भूल चली धनस्याम अजान सुजान की चित्त न धीर धरगौ ।
 जानत ह मनभावन यौ हम सी अजनायक ना बिछरगौ ॥
 ही बलवीर सुनी विनती यह फेरि तुम्ह हू विचार परगौ ।
 गौन की नाम सुन मनमोहन प्यारी के प्रान हू गौन करगौ ॥६८॥

सखी प्रति नायिका प्रोषितपतिना वाक्य

जा दिन त विछुरब्रजराज वियोग की पीर मु प्रान को दागै ।
 भूपन अवर नाहिँ मुहावत री सजनी अकुलावन आगै ॥

६७ BCD विकल । BC विहाल । A उठि । A मिलो । D नीद । D नैन नैन ।
 ABC रैन । D प्रति । C कही । ABD को । \ रई ।

६८ C सुजान सुजान । D चित्त । C धरगौ । BCD है । D स्थी । BCD अजनायक ।
 AB बिछरगौ । C विछरगौ । \ पर । ABC तुम । C परगौ । BCD गौन ।
 BCD को । ABC सुन । \ मनमोहन । ABD को । \ करगौ । AC करगौ ।
 D करगौ ।

मी करो अब हा मनभावन प्रीतम भूलि गये अनुरागे ।
 याम सुजान जिना मुन गी यह चद जु हाइ उन्हाइ मी लागे ॥६६॥

चदन चद अंगार सा लागत चैन नही बहूँ साक सवेरै ।
 सेज संगार मु सूल से मालत कटव से अति फल बरेरै ॥
 भूलि गये सुखि प्रान यिया अब वीति गये दिन हू बहूँतेरै ।
 जा दिन त्याम चरे परदेम मुदेम विदेम भयो मलि मेरै ॥७०॥

सखी प्रति नायिका वचन

हो जु गई जमुना तट प बट म मनमाहन बन बजावै ।
 गावत है मधुर मुख मी मुनिक जुवती तन मैन बटावै ॥
 वा छवि देग मनी उठ गी चलि प्रेम नरे जुग नन मिलावै ।
 श्री घनस्याम सुजान हि नाँ भुज भेट अनी अघरा रस पावै ॥७१॥

६६ D बिगरे । DD वृत्तार । C वृत्तार । A वियोग । DD वियोग । D मु ।
 D रगे । IC नाहि । AIC मनुष्यन । DD पाँ । C ही । A पातम ।
 AD मनुष्य । D बिता । A र । AIC कुगर् । A उन्हाई । D मि ।

७० IC मंगार । AD मे । D भैन । IC नर । D र । A मार ।
 D मार । AIC गभ । A मंगार । C मंगार । D मंगार । A वर ।
 D वर । D र । D भाति । A रार । IC रार । D र । IC वन ।
 IC म ।

७१ D जमुना । C प । D म । A मोहन । A बर । A र । D मपुरे । D र ।
 AD भाते । D र । A र । AIC मिताते । C प म म
 मने म मुर । A र ।

स्वाधीनपतिऋ नायिका को वचन सखी प्रति

कवित्त

मोर को मुकट सीस पीतपट राजें बटि
 सु दर सलौनी अग छवि सरसान प ।
 चद हू सो भाल नैन अरुन अनोखै आली
 तिरछी चितौन मद मद मुमवयान प ॥
 नद हू को नद सुखकद व्रजचद पेखि
 लाज कोटि काम धनस्थाम हू की आन प ।
 जोर दुहुँ पान मेरो प्रीतम बढाव मान
 वारा तन प्रान मनमोहन सुजान प ॥७२॥

दोहा

अति अधीन नित प्रत रहै चहै प्रेम दिन रात ।
 वा पिय सौ हो री सखी, मान न करत रजात ॥७३॥

सखी प्रति तिरहिनी वाक्य

खान पान भूपन बसन सब ये कटु न सुहाय ।
 गिरधर विनु ए री अली प्रान रह्यौ अकुलाय ॥७४॥

७२ A मोर । A वी । A राजें । AB बटि । C मुद । C सलौनी । D पग ।
 BCD सरमान । C प । ABC सौ । AB अनोख । C अनोख । CD प ।
 AB वी । BCD वृजचद । D पति । A राजें । AC प । A जोर ।
 BCD दुह । A पतिम । A बगैरे । C प ।

७३ A रहै । A चहै । C सा । D मो । ABD हौ ।

७४ BC वसन । D विन । BC रह्यो । D रह्या ।

चद-विरन चदन मवल, प्राट वरत तन काम ।
 पिय विदेम हँ री भट्टू, कव मिलि ह घनस्याम ॥७५॥

नायिका वचन

सौरठा

विकल वरत है काम, जाम महा दुग्य मी बट ।
 लँहा मुत्रि पनस्याम, बिननो मुन मनी अब ॥७६॥

स्वाधीनपतिरा नायिका को वचन मगी प्रति अनुकूल नायक

कवित्त

तय ही निया त नित मान का उटाव अति
 रहे कर जाग म नैक ही निहार त ।
 भाजन सिगाग तन भूपन तु चाह करे
 चर मा ही चाल मुन पन क उमार त ॥
 पूरन प्रीत मीप घनस्याम हू ती आसी
 जाग वट्टु प्रात की ही न मन शो त ।
 मीनि ती रिनाय माय पायो पति नदनाय
 वीन रगी मान वा पुनान प्रात प्यार त ॥७७॥

- ७४ का शय । CD इति म नहा है ।
 ७५ । CD विरन । AB ही । । नी । D वर । A तन । । C । ही । । AB बिनन ।
 D मुत्रि । D घन ।
 ७६ D । । D वर । । A । । । D जोर । । D मर । D है ।
 D । । D है । AD मीप । D सिगाग । D मुन । A च । D व ।
 AB करे । AC करे । AD मी । D वि । D मु । । D । D प्यार ।
 D पूरन । CD है । CD म । D म । D पन । D ड । D जोर ।
 D वि । D वट्टु । D है । AB नीर । D वी । D व । D प । A मन ।
 D मुन । D शो । D ।

मसी प्रति नायिका वचन

जमुना की तीर तहा सीतल समीर चल
 खर वह ठाह आय छैल गिरधारी जू ।
 सीस प मुकट कटि पीत पट राजै अति
 सावरे सलौने हू की छवि ही प वारी जू ॥
 असी नित आवत है मन माझ मेरी भट्टू
 कबहू रहू न छिन प्रीतम त यारी जू ।
 सु दर छटा री लसि टरत न टारी जिय
 भुरकी सी डारी सौह गुरकी विहारी जू ॥७८॥

ससी प्रति स्वप्नदशन नायिका वचन

नीद की उनीदी सोय रही रग भौन ही म
 सु दर सलौनी आय दरसन द गयी ।
 आनद सौ रन गई चैन भयी मन ही म
 भौर भय कहा जानी पीतम वित्त गयी ॥
 व्याकुल विहाल भई ता छिन त ये री भट्टू
 विरह वढाय अग प्राण सग ७ गयी ।

७८ D जमुना । D तिर । D तया । D ठाह । D प्राण । D गीरधारा । D पे ।
 D मुकट वा कटी । A राजै । D राज्य । D सावरे । ABC सलौन । D ऊ ।
 C हू । D हि । C प । D प । D नान । C पावति । A है । C तना ।
 D भट्ट । D कबहु । D रऊ । D त । D दया । BC छटारि । D वली ।
 D जय । D मा । D गीहारी ।

भै गयी सुजान रम वात अति प्रीत ही की
 मुपनै में स्वाम को मिलाप नगि हूँ गयी ॥७६॥

परश्या प्रोपितपतिरा री मरी को वचन नायर प्रति

सयया

जा दिन त विठुर लुम स्वाम मु ता दिन त तन राग भयी ह ।
 धान र पान विमार दयो तिय आग्निन म जिय आय रयी है ॥
 बोलत नाहिँ सरी जन सो अति अग अनग मरोर लयी है ।
 वेग चली न विलख करी अब मु दर का यह तेह नयी है ॥८०॥

कवित्त

वन वा प्रनाय प्रात माह मुनि ए री भटू
 टारक गल म चल्या प्रम ही के फद की ।
 रन दहीँ जाय ग्रह मन हूँ वताव कहा
 एसा ह मुभाव नित एरी नदनद की ॥

७६ D न १ । A उना ॥ D उनि ॥ D र्हि । AIC नीन । D ि । D मे ।
 D मूर । A सनागो । D रगन । D द । IC धन ॥ D गो । D रेन ।
 IC धन । C मई । AB मदा । D ि । D मे । D मयो । D बाह ।
 D आनो । ABC ितै । IC विान । D पन । D T । AC धोये । D मटु ।
 D बाह । D श्याय । D न । D न । D मर । A प T । D ि । D ि ।
 IC मुने । D मुने । D म । AD न । D तथा । D हो । A री ।

८० D ग्या । D हीन । D T । IC शिए । D दएर । C रन । D मू म ।
 D मू । D न । AIC मे । D र् । IC च्या । AB है । A गान न पन ।
 D वगार । A र्या । D मय । D धगन । D म । D अज । CD र्या ।
 ABD है । D र् । D मा । A प । D प्या । D र् । AIC मया ।
 AIC है । IC प । A र्या । IC निर । D र् । AD प्या ।
 D मूर । B री । AIC नया । AI है । D ह ।

साहिव है मेरी पै मुसाहिव है कूवरी को
 पार हू न पाव कोऊ या के छलउद की ।
 आनद को कद ताकी मद मुमक्यान लखि
 कौन विसवास करै प्यारे नदनद की ॥८१॥

मखी प्रति नायिका वचन

सवेया

ननन प रद कज करौ अरु आनन प सखि चद विडारौ ।
 भीहन से जुग चाप नही अलक लखि नागन चित्त न धारौ ॥
 भाल प केसर पौर करी तिन प चपला रुचि कौटिक टारौ ।
 सु दर स्याम सुजान के ऊपर मन मनाहर मूरति वारौ ॥८२॥

नायिका प्रति मखी वाक्य

मोर पखा सिर सोभित हे गर गु जन हार महा छवि पावत ।
 सग सखा सब ही ग्रह के हित अनु चरावन का नित जावत ॥

- ८१ D बन । ABC कौ । AB मोहै । D माहे । D मना । D नदु । D क ।
 ABC गने । CD म । D म । D जि । D क । ABC कौ । BC कहा ।
 D कया । AEC सैन । D कहा । १ है । C गे । D हे । D सुभाव ।
 A नदन । AB है । D हे । D मेरा । ABC पै । D हे । D कुवरा ।
 ABD कौ । A पावै । B पाव । C पाव । AD कोऊ । A प्या । ABC कौ ।
 A आन । ABD कौ । D कि । ABC मुमक्यान । D तखी । D कौन ।
 BC विसवास । D विसवास । A करै । D कर । A नदन । C कौ ।
- ८२ A नैन । D करी । D आनन । D प । D सखी । D बागरी । D मो न ।
 D नहि । D अन्व । D तखा । D चित्त । D धारौ । D प । D कसर ।
 D खोर । D तान । D प । D हथी । BC कौटिक । D कौटिक । D टारौ ।
 D सुदर । D स्याम । D सुजान । D कै । AEC सैन । AD मनोहर ।
 D मूरति । D वारौ ।

मोहन की छवि देग बने कहत न बन मुनि रीत बतावत ।
 चावत छावत प्रेम पियूग बने बन त रज मैं फिर आवत ॥८३॥

रवि

हृदय अधीन रही नित प्रति मोहन के
 कबहु न धारी आली हिय ही मैं मान कौ ।
 मय चतुराई लय चाहवै प्रमान करी
 कप्रिना म जानी औ पिछानी गान तान कौ ॥
 कृष्ण हू की रीत की नु चली तुम सोही चाल
 ता मन धन कृग्रान कौ प्रान कौ ।
 मय भुक्तान भ्रान वान दरसाय अति
 ऐम बसि करी प्यारी प्रीतम मुजान कौ ॥८४॥

सरीश

प्रानहु त अनि उल्लभ जानत माहन के मन की यह कौरी ।
 तो सम थीर निधा न गिन पिय भूछ नही मुन है गुर सौरी ॥

- ८३ D मोर । D गार । D मोहि । D है । D शुभ । D माय । D लय ।
 D नय । D हि । D क । AIC पेन । D बतार । D को । D मोहन ।
 D लय । C बने । AD बन । D मुनि । D बनार । D प्रम । A प्युग ।
 D प्युग । A बन । D बन । AIC बन । D मुन । D म । D पर ।
- ८४ D लीन । C र । AD मोन । AD क । D र । D र । D र ।
 A क । IC डर । D न । IC डर । D लो । AC को ।
 D को । D हू । D हि । C र । IC म । D मू । D को । D हि । D क ।
 AIC न । AD को । A मुनि । D र । D र । AD को ।
 D क । D क । D मुन । C को । D को ।

पूरन प्रीत रहौ नित ही प्रति वेर हि वेर अमीस जु दोरी ।
हे वडभाग सुहागन भामिनि नदकुमार की जीवन तारी ॥८५॥

जीवन है मनमोहन । की तुव कीरत की तनया ठकुरानी ।
चदमुखी सुकुमार कँवार सुजान सदा अति ही दरसानी ॥
वेर हि वेर पती मनभावत वारहिक नित पीवत पानी ।
सौतिन को अभिमान मिट्यौ सुन रूप निहार सब मुरझानी ॥८६॥

कवित्त

सु दर सलीनो गजगौनी अलवती तिय
तौ बिन सुजान प्यारी काहू सौ न प्यार है ।
सजन चकोर कुरबान करौ ननन प
आनन प इ दु वारा याँही निरधार है ॥
भान की किसारी तुव जीवन है जीव हू की
सौहै सीस तेर या सुहाग ही कौ भार है ।

८५ D हू । D तै । D प्रता । A क्लम । D दतम । AD मोहन । D क ।
D कि । AB कीरी । C कारी । CD ता । D मम । D तया । A गिन ।
D गाने । D पाय । D जुड । D नति । D मुन । CD है । D सीरी ।
D पूरन । D नीत । BCD प्रन । ABC तैत । A है । BC है । D सूनापन ।
A भामिन । D भामनि । D कि । CD तौर ।

८६ BC है । D ह । A मोहन । D किरत । D कि । D तनया । D ठकु रानि ।
D चदमुखि । D सु कु मार । D कँवार । D मजान । D दरसानी । D वर ।
D वर । C क । D क । D मोतान । ABD को । C मिथ्या । D मोथ्या ।
D सू ना । D सब । D मुरझानि ।

अनि मुकुमार गे मुगारि कहेँ प्रा वार

नद मुमनयान हृ प प्राण बलिहार है ॥८७॥

मुदर मिगार करेँ भूपन जगय जर

धुर वजगर नैन जुगि जुगि जान है ।

पीनम लुभात एगी नर ही निहागत ही

मौनन का चित्त त्रय मुरि मुगि जात है ॥

प्राण की पित्रागी प्रनिहार करेँ प्राण मेरी

नद का टुनाया प्यारी दुगि टुगि जात है ।

अनि मुकुमार त्रयभान की कुमा मुन

तरी मुन त्रय चद दुगि दुगि जान है ॥८८॥

८७ D मुदर । AIC मनीना । I मरगोनि । A मन्वन्ता । D ताम । IC क्षी ।
A विनु । I शान । D मुमान । D वा । D मो । AB है । AD वरीर ।
D करो । AIC नैनन । CD प । D पे । D वारा । AB यो । D यो ।
D । AB है । D मानन । I किमीरा । D काकीरा । A है । D जाइकि ।
AB मो । D मो । AIC नर । A म्पा । D वा । D मुगय । D रि ।
AB है । D मुकुमार । D मुगारा । CD करे । I CD वारवार । D है ।
CD है । C बनिवार । D वारा ।

८८ D मुदर । A म्पगार । D भागार । AB करे । D कर । D दुता ।
AB जरे । D पुरे । D वजगर । D नैनन । D दुगि जुगि । AD है ।
D ममान । A म्पेरा । D यरा । AB नैक । D नहारत । D है ।
ABD यो । A बिज । D वन । D मुय मुय । AB है । AIC प्रन ।
D रि । D वरार । D वनगाय । D वरा । C मय । D मय ।
CD दुताय । CD प्यारा । D दुय त्रय । AB है । D मुकुमार ।
IC प्रमन । D रि । D कुमार । D मुन । C म्पा । D म्पा ।
I म्पा म्पा । AD है ।

नायिका वर्णन

दोहा

अटा चढी ब्रजनागरी, घटा निहारन काज ।
रतन जरत भूपन धरै, करै कसू मल साज ॥८६॥

पति अग्नीना नायिका वर्णन

मवैया

प्राण करी कुरवान सदा घनस्याम सुजान पिय पर हा री ।
जौ उनकी मुरजी लख नन सु बन वहे जिहि चाल चलौ री ॥
नैक हि बेर अबोल रहे तब खानन पान सबै विसरौ री ।
चाहत हा नित रीत यहै सुन री सजनी कछु झूठन कारी ॥८७॥

आगतपतिना नायिका की उचन मरी प्रति

नित कोकिल मौर सु सौर कर पपिया अति पीत वढावत है ।
घन धूमि रह्यौ जित ही तित ही चपला चहुँघा चमकावत है ॥

८६ B ब्रजनागरी । D ब्रजनाररी । D भूपन । ABC धरे । ABC करै ।
D कसु मल । C साज ।

८७ D करी । D सुजान । D पीय । C हो । D ही । A ऊनको । D उनकी ।
ABC नैन । D सू । AB बन । A जिहि । D जाहा । CD चलौरी ।
ABC नैक । D बेर । D अबोल । ABC रहे । ABC सबै । BC विसरौ ।
D विसरौ । D ही । D नीति । ABC यहै । D सुन । D सजनि । D झूठ ।
C कारी । D कारी ।

फुरकें चप प्राहु अरी मजनी प्रजराज मुम्प प्रतावत है ।
मनभावन आवन त जु अली यह सावन तीन मुहावत है ॥६१॥

पिरडिनी नायिका री उचन मगी प्रति

म्याम रिना तरफ तन प्रान जिहान नयो अत क्या करि राका ।
ठार दयो गुं गगन का दर नाहिं लगे जा की अत्र धाकी ॥
प्रीतम मा मिर २। २२ ही तव हा उनागि सु देहुगि तोकी ।
रीन बज नमुना तट पे वहे रै चलि री मजनी मुनि मोकी ॥६२॥

गोपी प्रति गोपी उचन

बूझन हा मुन री मननी सुँ दन प्यो कपटी यह काती ।
भी ही भीन में जान लयो अर मा कयो प्रज में अति चारी ॥

- ६१ C गिः । D नः । D कोः । AIC मारः । D मू । ABC मारः ।
C नः । AIC मारः । A रै । D पुः । D जः । D उः ।
D रिः । AB पः । D कः । AF मः । D मः । A रै ।
AIC पुरः । D मः । D रः । CD मः । D मः । D मूः ।
AB मः । D मः । D रै । D रः । D रै । AIC मः ।
D मूः ।

- ६२ IC रिः । D रिः । A रै । IC रिः । D मः । ACD मः ।
A रः । D मः । A रै । C रै । D रै । D मूः । AD रै ।
BD रै । C मः । IC रै । ACD मः । A रै । CD मः । D रै ।
D मः । D रै । D रै । A रः । D मः । D रै । AIC मः ।
C रै । D रै । IC मः । IC मः । D मूः । CD मः । D रै ।
D मः । D मूः । A रै । C मः । D मः ।

मानन नैक न काहु की कान सु ऐसी भयो वसुदेव को प्यारी ।
 माखन ढीर मरीर गयो दर नदविसौर है चौर हमारी ॥६३॥

परकीया प्रोपतपतिना को वचन मरी प्रति

रचित

जा दिन त स्याम को वियोग भयो ए री भट्ट
 ता दिन त तन मन धरत न वीर की ।
 जायक विदेस छाये रह ब्रजराज अब
 टारक गर म चल प्रम के जजीर का ॥
 निस दिन भौन हू में व्याकुल विहाल रहा
 फस सही घाव पचवान ही के तीर की ।
 एसो बलवीर निरदई पिय माहन ह
 नद को अहीर कहा जान पर पीर की ॥६४॥

६३ D बुद्ध । D ही । D मू नरी । D सजनि । B कह । C कह । D कह ।
 D कपटि । D हि । D म । BC सार । BC वृज । D वृज । D मती ।
 ABC नक । D काऊ । D सू । D यमो । A भय्यो । A वसुदेव । D वसु देव ।
 ABD की । C प्यारी । ABC मापन । BC ढीर । BCD मरार । A गयो ।
 BCD नदविसार । D नदविसार । BC चार । C हमारा ।

६४ D ज्या । D वान । D त । D स्याम । ABD की । A वियोग । D वीयोग ।
 D भयो । D यरी । D भट्ट । D दीन । D त । D निर । D की । CD के ।
 BC विस । D वीदेस । D रये । BC ब्रजराज । D वृजराज । D क ।
 D गने । C म । D म । A जजीर । D की । D नीसतान । D भौन । D हू ।
 D म । BC व्याकुल । BC विहाल । D घटान । C रस्यो । D रही । D वस ।
 D तया । D हू । D क । D की । D यमे । A बचवार । A निरदई ।
 D पीय । A मोहन । D ह । APD की । D मतिर । D जान । D क ।

दोहा

दरम बिना मुनि सावर, विवल भई प्रजवाल ।
छिन प्रोले मकुचै छिनक, रही न तन में हाल ॥६५॥

प्रजपति बिन छिन पल घरी, वरूप प्ररावर जात ।
मनमथ के मर विपम अति, तन पै नाहिं ममात ॥६६॥

प्रोपित तथा विरही नायक

द्वारत

नीद हू न आव नन चैन हू न परं नैन
बिसरे न जात हाव भाव वै गुमान क ।
चद सी वदन मुभ भाहैं बक चाप जसी
सजन मे नन किधौ बान पचवान क ॥
भूपन जटित अग अरर जगी के नीके
समता न पाव रति रभा नैव आन क ।
प्रिग्द विभाग राग तन मे अनत नया
मुनी रज रैन प्रान प्यारी वा प्रजान के ॥६७॥

- ६५ B बिन । D बाता । D मुना । D सावरे । IC विवल । D बोवन ।
[A] प्रजवाल । D मुकवान । D लन । A बने । D बीने । D लनक ।
C म । D म ।
- ६६ B प्रजपति । D वृत्तनि । IC बिन । D बान । D लन । D परी ।
IC बरप । D क । D गार । IC विपम । D बयम । D प्या । D सीन ।
D य । D ना । IC ममात । D ममात ।
- ६७ D प्र । D नैन । D हू । A विगरे । D बागरे । D प्र । AIC य ।
AIC क । D मुन । D मोरे । D जेग । D म । AIC नैन । A विपी ।
D कथी । AIC क । D अरर । D नीक । D ममात । IC पाव । D रजा ।
D रम । AIC नैव । AIC क । IC विरह । D बाछ । IC विभाग ।
D क । D म । D पनन । D मुनी । AIC रैन । D प्रान । D मु जान ।
AIC क ।

चद ही त नीकी मुख जीवन है जी की वहि
 अमृत से वैन नैव सन ही मैं वै गई ।
 सुदर किसीरी अलवेली सुकुमार अग
 मेर तन मन का वियोग विथा दै गई ॥
 अति ही सुजान गुनखान पिय प्यारी विन
 कते दिन रात विन देखे हू वित गई ।
 र गई मिलाप ही की आस अब जिय ही म
 मैन कौ मरोर चोर प्राण तिय लै गई ॥६८॥

प्रोपित नायिका की मानसिक रिचार

चद ही सी आनन चपल नैन मीन जसै
 सौधै त सवारे वार माग मुक्तान की ।
 भौह पचवान के सु चाप ही त राजै बक
 विवफल की सी छवि औप अधरान की ॥
 जा दिन त प्यारी की वियोग भयो मीसौ वहि
 ता दिन त भूल्यौ सुधि खान अरु पान की ।

६८ D त । C नाकी । AB है । D हि । AB वहि । C वह । BCD अमृत ।
 D स । ABC वैन । ABC नैव । BCD सैन । D हि । D म । D व ।
 D सुदर । BCD किसीरी । D कीसरी । AB अनवली । D अनवली ।
 D सुकुमार । ABC मर । D की । A वियोग । D वियोग । ECD व्यथा ।
 D द । A अत । D हि । D सुजान । D गुनखान । D प्रीय । D वान ।
 ABC वन । D वान । BC विन । D वीन । AB दखे । C दखे । ABC हू ।
 BC रिठे । D वित । D र । D मिलाप । D म । D वि । D वि । C म ।
 D म । ABC मैन । D कौ । AD मरोर । AD चोर । D ने ।

मद मुमकयान वा मुजान ह की लकी वत्र

प्राण ह त बल्लम किमोरी त्रपमान की ॥६६॥

प्रोषित नायिका से स्पष्ट दशन तारी वचन मन प्रति

जा दिन त प्राण अकुलावत ह की वहा

थी न उपाय बात जात न कछू कई ।

मुपन म भान की कुमार मुमकाय नव

कहा जानी कौन थी छिपक किनै रई ॥

तन में न चैन मैन मागत है दाव कर

हाय यह मागो प्रिया जान न रती मई ।

नई नत्र भाग ही की दई ह मिनाय अत्र

चदमुगो नैन की मिलाय क तिन गई ॥७०॥

६६ D [110 मेर । D मेर । 110 मान । D मोय । D 3 । A मकयान ।
D मुजान । D की । D प्रपमान । D ह । D मू । D ति । D न । A राई ।
D रई । A दशन । D ति । 10 रई । D म । A मरे । D मोय ।
D ति । D ग्या । D म । D 2 । A विजी । D विदी । 10 मगी ।
D मोकी । D न । A D 3 । D मुगी । D म । 11 मू म । D 7 ।
D मगी । A D 4 । A D 3 । D म । A विदी । 10 मकयान ।
D मुजान । D ति ।

७० D 2 । A D 3 । D म । A म । D म । A मरे । D म ।
1 2 । D 3 । D म । A म । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे ।
A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे ।
A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे ।
A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे । A मरे ।

पद-माधुरी

राग खड्गो सारंग

राधजी म्हारी मन बस तीनी ही
 ही जी म्हारी प्रान गी प्यारी राधै ।
 रूप अनुपम तु दर अत ही अग रग भीनी ही ।
 श्रीरजराज मुजान सनेही बचन अधीना ही ॥१॥

बेसन्धियो तु वर मिळमान छै रगभीनीं लाठी ।
 आठ्ठार सत्र माज बनाओ अतर अरग अर पान छै ।
 गिरधर स्याम मुजान रमीली तद महर वा जान छै ॥
 श्रीरजराज विमो मनोहर प्रानन हू वा प्रात छै ॥२॥

-
१. AIC राधे । A गारा । C गारा । 1D वन । C दनि । APC व नी ।
 AIC ही । AIC पना । A गारा । D प्रान प्यारा । AIC राधे । D गुर ।
 D । IC भीनी । IC गी । 1D कुराक । D मुजान । D गीरी ।
 IC बचन । C अप । IC गी ।
२. 1D बगारि । D बेर जो । D कुर । D मरदान । D सादि । D पानद ।
 D गारा । D वन दो । D घत । D पार । D गारपर । IC मुजान ।
 D मुजान । C रा ग । AIC वी । IC कुराक । AIC विपर ।
 D गोर । D । D वी ।

रग्याल राग अडाणी

स्याम तुम घर घर हू के मीत
 निस ओरे भौर श्रीरन के ऐसी है नित रीत ।
 सीहे खाय दिम्बाय दया मुख करत फिरत हौ प्रीत ॥
 तन मन की हमको अव गिरधर जान परी परतीत ।
 श्रीब्रजराज कहायै ब्रजपत ऐसी करत अनीत ॥३॥

राग अडाणी

हे री सुन क्या अव मीन गह्यो री ॥ टेर ॥
 बेर बेर मनुहार करी पिय बचनन नाहिँ चह्यो री ।
 रुठ चलै घनस्याम पियारी अव कछु नेह रह्यो री ॥
 चल मिल ल गिरधर सौ हली मेरी मान कह्यो री ।
 श्रीब्रजराज वियोग तिहारो कबहुँ न जाय सह्यो री ॥४॥

ए री मेरे उर विच दरद भयो री ॥ टर ॥
 अगियन मी कुच बढन लगै अत यो कछु रोग नयो री ।

- ३ D तुम । D हू । D क । D मीत । D नीस । C घोरें । D प्रोरें । C भारें ।
 D भोरें । AD क । B कैं । D नीत । D रोती । D सीहें । C सीहें ।
 D दावाम । A दय्या । D करत हो प्रीत । C हो । D हमको । C हमका ।
 D गीरधर । D परि । BCD ब्रजराज । C कहाये । BCD ब्रजपत । D प्रनित ।
- ४ D हीरा । C क्या । C मान । AB मीन । BC गह्यो । D बरबर ।
 D मनुहार । D करि । D पीय । D नाही । LC चह्या । ABC चले ।
 D पीयारा । D नह । BC रह्यो । D मान । D गीरधर । C सा । D सौ ।
 मेरी । AC कहा । BCD ब्रजराज । A वियोग । D वियोग । C तिहारो ।
 D तागरो । D कब । A जाहिँ । BC जाहिँ । C सह्यो ।

नैन लजात गात अर कपत वचन न जात कयो रो ॥
 श्रीनरराज प्रिया के तन प मदन निमान दयो रो ॥५॥

राग सारंग

अरज बग छा म्हारा मँलहा आज्यो ।
 चरणा दी दाम्ही माहीवा जनम जनम गी
 आप किया बो प्रीत निभाज्यो ।
 श्रीनरराज मुजाण मनेही नह कर न दरस दिवाज्यो ॥६॥

हमवो प्रिमरि न जावो जोग ॥ टक ॥
 जा दिन ते विछुरे हा गिरघ ता छिन त तन रोग ।
 बाजन निलक तमोल तल यह विनर गट पुन भाग ।
 श्रीनरराज निठु तुमकी अर हेनन सपे रज लाग ॥७॥

५ D घरा । D भैरा । A ऊर । D वाग । IC विष । IC भयो । D घ पीवन ।
 C म । D म । A यो । D दो । A रोण । B नयो । C ग्या । A नैन ।
 IC नैन । D गण । IC कदा । IC D वृत्रराज । D रीवा । D क । D प ।
 D मीग न । IC ग्या ।

६ D गरा । D भैरा । D वागो । A IC वाग । A वाग्या । IC वाग ।
 D नभगो । IC D वृत्रराज । D मुदाउ । D ननवा । D नेर । D ग्यागो ।

७ D हनरो । D गिरा । D रासो । D रोग । D ग्या । D न । D घ ।
 B विदुर । C D री । IC हा । D वाग्या । D न । D म । D छिन ।
 A हनरो । IC हनार । D ग्या । AD भीग । IC D वृत्रराज । C मुदरा ।
 D मुदरो । D मरे । IC D वृत्र । D मोन ।

गिरधर दोस नहो प्रभु ती मै ॥ टेक ॥
 निसदिन तौ हू करत अविद्या क्य ही नाम न ली मैं ।
 भाव तौ दुख सुख दौ मोहन सीम नत्राय मही मैं ।
 मेरी तौ चित करनी न धारी केते करम करी मैं ।
 श्रीब्रजराज सदा गुन तेरी सब श्रीगुन हू मी म ॥८॥

रे करम म लिखियी नाहिँ मटै ॥ टक ॥
 हान लाभ जस अपजस सपत तिल भर हू न घटै ।
 सुख ही म प्रधव सब ही जन वासौ दुख न बटै ।
 दीनदयाल सहायक गिरधर नितप्रत क्यौ न रटै ।
 श्रीब्रजराज समर मन रे तूँ समर पाप कट ॥९॥

राग सोरठ मलार

चढि आयी मनभायो सावन आवन क्यौ न विचारौ ।
 म्हारा राज ॥ टेक ॥
 पिउ पिउ पिउ पपईया वोळै लागत सोर अकारौ ।

८ D गीरधर । AD दोस । D नहिँ । BC ता । D मे । D दोन । C ता ।
 D अविद्या । A क्य ही । D क्यहि । C ना । C म । D म । C तो । D मूल ।
 C दा । AD मोहन । D सौ । D मे । CD तो । CD धारा । CD करो ।
 C म । D म । BCD ब्रजराज । D गु ना । C तरा । D तरा । D श्रीगु न ।
 C है । D ह ।

९ D म । AD नलीयो । C लिखिया । D ना । । D मट । D तीन । D हू ।
 D मूल । D हि । AIC म । D णि । C वासा । D वासौ । D ब ।
 D दीयान । D साहाय कर । D गिरधर । D नाति । D प्रत । D क्यौ ।
 D टर । CD ब्रजराज । D समर । C समर । D समर ।

उमठ घुमठ घन विजुरी चमकै विलम करै क्या मागी ।
 श्रीजगराज किमौर कृपाकर अब ती वेग पवारी ॥१०॥

श्याल राग मोरठ मलार

हली म्हाग मँलहा जावमी ह म्हाणी केमियोजी
 पम मुजान ॥ टैक ॥

नदिया ती मग्बर मिगे है हलकर भिया निवान ।
 दादुर मार पपीहा वारै घन छावो अममान ।
 अम चटिया गटिया हामी ह पीह उगत भान ।
 अत्रियी पिय भावगी जी वारै माईना सौटै नादान ।
 आयतडा धे क्य प्रधाज्यो गाज्यो मीठी तान ।
 श्रीजगराज किमौर कृपा अब करती प्रचन प्रमान ॥११॥

राग मलार हिंडोरी

हीडार बल गजे नकुमार भुक भुक अग मिगय ॥ टैक ॥
 उमठ घुमठ घन चरगत वृत्न चमकत वीज अपार ।

१० A काली । C काली । C काली । PC काली । C काली । C विद्या । A हाथ ।
 A काक बँक कड । PC काली । A काली । AB मोर । C काली ।
 A उमठ । A पुनर । A क डुरी । C विद्या । A निम । PC निम ।
 PC काली । C काली । PC काली । C काली । A काली । C काली ।
 PC काली । C काली ।

११ APC मग । C मग । D मग । C मग । D मग । C काली ।
 A काली । C काली । A काली । D काली । A काली । A मोर । D काली ।
 A काली । A काली । A काली । A काली । C काली । A काली । C काली ।
 A काली । C काली । A काली । AC काली । C काली । A काली ।
 B काली । C काली । AB काली । C काली । A काली ।
 PC काली । PC काली । C काली । A काली ।

चदमुखी वनिता चिहूँ और गावत राग मलार ।
श्रीवजराज प्रिया की छवि प तन मन धन बलिहार ॥१२॥

राग ठुमरी हिंडोरी

मोहन भूलत रग हिंडोर सग भाननदिनी जोर ॥ टक ॥
दादुर पिकहि पपीहा बोल मोर कर अति सोर ॥
रैन अँधेरी विजरी चमकै और घटा घनघोर ॥
श्रीवजराज प्रिया मनभावन सौतन को चित चोर ॥१३॥

राग गू ड मलार

हे री अब बरस बरस बदरिया ॥ टेक ॥
अपनी पिया अपने घर आये री हे री तन मन के कारज सरिया ।
हरिया गिर हरिया द्रुम बेली सर सलिता सब भरिया ॥
श्रीवजराज सुजान मुधर री हँस मिल आनद करिया ॥१४॥

१२ AB हाडोर । D हीडोरे । A नदकु वार । D नदकुवार । A ऊमड घुमड ।
BC उ मड । BC घु मड । D वून । BCD वनिता । D चिह । C मोर ।
BCD वृजराज ।

१३ A मोहन । AD चिहोरें । C हिणोर । ABC भान । D नदनी । A जोरें ।
BC जारे । A पिकही । D पिक पपीहा । AB बोलें । C बोन । A मोर ।
CD कर । AB सोरें । AB बीजरी । AB धोरें । C धारें । BCD वृजराज ।
ABD को । AB चोरें । D चोरे ।

१४ BCD बरस बरस । A बदरिया । C बदरिया । D अपनी । A पिया ।
A सरिया । A हरीया । A ठु म । BC वनी । D सनता । A भराया ।
BCD वृजराज । A हसमिनक । D हस । BC आनद । A करिया ।

हे री म कंमे करू जिय अकुलाय उर में नाहिं ममाय ॥ टेव ॥
 माधुरि मूरत चित प्रिच वम गडै टारी टरिहु न जाय ।
 धीर ममीर तीर जमुना प मुगली वान मुनाय ।
 जय त म्याम लिम्यो तय ही त निसदिन वडु न मुहाय ।
 श्रीनजराज मिलाव मरी री तेर परिहू पाय ॥१४॥

राग अढाणी

ह री विन कीनो कहा स्याम मलीना ॥ टव ॥
 वागरु दम पडयो बछु मनर पटि दीनो मोपै टौना ।
 दिन नहिं चैन रन नहिं निद्रा वम पीर सहीना ॥
 चिन ललचाय चरयो मनमोहन नद महर का छौना ।
 श्रीनजराज विमामी सौं हा चउह प्रीत कौना ॥१६॥

राग विलासत (स्थाइ)

नर महर घर रजन बघाई ॥ टव ॥
 धन स नाट निगान घुरै री घेरी पिनाक बज रहनाई ।

[४ A कमा ॥] कमे । A ऊर । IC व । D नाहिं । A माधुरि । FCD मूरत ।
 D प । AD क व । D म । A ममा । A मरी । D मली । D छ ।
 ICD मूरत । IC ते । A पर ।

[५ D मलीना । A मोपै । C पडयो । CD मोपै । B मनर । C गीना । D टौना ।
 A ममा । AIC चैन । AID रैन । D चैन रैन । A मरी । A म्याम ।
 A मलीना । C मलीना । D मलीना । EC बग्यो । A मोहन । AID वी ।
 C ल म । D ल म । ICD मूरत । FCD विर म । A गीय ।
 A वरी म । C वरना ।

मजन कर सिंगार सजे तन ग्रह ग्रह त गोपी मिलि आई ।
 आनंद मगल सज्जन के चित असुरन के हियाम दुग्यदाई ।
 श्रीब्रजराज भय तव ब्रज म माना रक महा निधि पाई ॥१७॥

राग काफी

रग हिंडीर वहेँ भूल नदलाल ही ॥ टेक ॥
 नदनदन सग भाननदिनी चदमुखी मव गाव ब्रजवाल ही ।
 उर सा उर मुख सीं मुख मीढत पचसरी उरभी वनमाल ही ॥
 श्रीब्रजराज किसीरी नागर दोउ परमपर होत निहात ही ॥१८॥

राग काफी (वधाई)

ए री हा अति आनद भयी ए री हा अति आनद भयी ।
 हरि जनम री हरि जनम चलि दरन करी यह छन म ।
 सब गावो री मव गावो दुरवा लं कलम वधावो ।
 सब मगल नाम सुनावो ह री तुम मुह भागी साई पावो ।
 धन भाग पिता महतारी ह री ग्रह प्रगट देव मुरारी ।
 प्रभु जनम लियो यह काग्न ह री यह भू को भार उतारन ।
 अध टारन री अध टारन कमादिअ असुर सघारन ।
 यह गोपिन को मुख देवन अधरामृत का सुख लेवन ।

१७ A घर । BCD वजत । BC वधाई । BCD घुर । A स्यंगार । A गोपी
 AD भिय । LCD मानन । BCD ब्रजराज । BCD भय । BC वृज । A निधि ।

१८ C हिंडीर । BD हिंडीरें । FCD वह । BCD भूज । A नदलाल ।
 ABD नदना । CD गाव । D वृज । A उर । A उर । A मीढत ।
 A ऊ न । BCD वनमाल । BCD वृजराज । BCD किसीरी । A ऊ ।
 BC दोउ । A होत । C ही ।

यह व्रजजन चित्त मुखदाई हूँ री मनु रव महानिधि पाई ।
 यह श्रीव्रजराज मु वागी मेरी तन मन धन प्रलिहारी ॥१६॥

राग वैजयन्ती

ए री कव की कही री तौबी मेरी मुनि वान दे ॥ टक ॥
 भौह का चढाय पठी एती गीम जान दे ।
 नद का जलप्रा टनी तेरे कारन प्रा दे ।
 श्रीव्रजराज पिया सौ मित्क तरी तन कुरपान दे ॥२०॥

राग गुमायगी

गधागनीजी ग गायन मनहि हर मनमाहन रूप निहार हूनी
 ॥ टक ॥
 गजन मीन चकार कुरग गय तनि रगि लाज मरै ।

१६ D शरी । C मया । AB मे । C म । D दुखा । C बयासी । AD नाय ।
 C गुनाको । D फो । 1 CD मु । CD मागे । A सोई । DC प्रग ।
 A नायो । C निपा । D नायो । A ए । A बी । A निपारन । A येंह ।
 1 C वृ । A मनु । A मन्निप । A व । A लीनिन । AB बी । AB बी ।
 A यह । 1 C वृराज । CD मरा । D प्रभु जन्म निपा य वारन क बाद
 का पाठ इस प्रकार है—

॥हेय॥ य वृ वराज विड मुगदाई ॥१६॥ मनु रव महानिधि पाई ॥
 य गानि की तुम दरन कपराटु बी ल मवन ॥
 य ग वृ वराज मु वाग मरी तन मन धन कलिहारी ॥

२० D शरी । AB गुन । D डे । C F वराज मेना वाग मरा मुन क न द ।
 D भी । AF D बी । D वन । AF D बी । C वनबला । D वनबेनी ।
 C लीनी । 1 C नरे । 1 CD वृराज । C गो । 1 CD क । 1 CD नय ।
 D डे ।

रगरसियो गिरधर वसि ह नित हुकम अधोन फिर ।
 श्रीव्रजराज किसोर कु वर हित पल पल ध्यान घर ॥२१॥

धारा मल्हा आव छ ह वेसरियो जी आज ॥ टक ॥
 नखसिख भूपण अवर सुदर करोजी अमोलस साज ।
 रगभीनी रसियो वस तीसू सरब सुधारन काज ।
 धन धन भाग सुहाग सु तेरो वर पायी व्रजराज ॥२२॥

राग पूरवी

लाडी थार हे अखियन म अनुराग ॥ टेक ॥
 तन मन सी वसि ह गिरधर पिय नित प्रति अचल सुहाग ।
 औरन सी मिलवे हसिवे की छाडि दई सब लाग ।
 श्रीव्रजराज किसोर कु वर सो वर पायी बड भाग ॥२३॥

राग परज

आव छै आवै छै अलवेली ह सहेली हे गिरधर प्रीतम पामणा
 ॥ टेक ॥
 कौल निभासी चढ सड आसी आज हुवा छै मनभामणा ।

२१ AD रानी । C नोइन । C निहारे । A बकीर । C मर । A रसीयो ।
 BC रसियो । BCD व्रजराज । D कुवर । C अंतिम पक्ति वसि हे नित पल
 पल ध्यान धरे ।

२२ D पाहरा । C मेला । C आवे । C छ । BCD है । A कमरायो ।
 BC कमरियो । D मुट्टर । ABC करो । A भानो । AD रसायो । C तो ।
 ABC मु । C तरो । ABC पाया । BCD व्रजराज ।

२३ C वारे । ABC ह । A अ सियन । C म । C सो । BCD वनि । C धारन ।
 C सा । A मिलव । D मिलव । A हसिवे । D हमव । 1 CD व्रजराज ।
 BCD किसोर । BCD कवर । AC सो । D वर । C पायो ।

बलस बघाज्यो ले भट आज्यो गाज्यो हरख बघावणा ।
 ममद रिछाज्यो मेज कसाज्यो चहुँदम अतर लगावणा ।
 दादुर मोर पपीहा वालें लागत परम सुहावणा ।
 श्रीप्रजराज मुजान कु वर की रगमहल पघरावणा ॥२४॥

राग कल्याण

नद के नदन अति मुख के सदन तुम
 दुख के बदन दया दिल प घरीग बच ॥ टक ॥
 म तो हू अनाथ नाथ गही मेरे दोऊ हाथ,
 लँहो अपनाय पीर चित्त की हरीग बच ।
 तार्यो ग्राह ग्रीध गज नाम हू की नेम पार्यो
 करनानिधान मेरी कर्ना करीगे बच ।
 अज के मु राज धीर एही हरि बलपीर,
 प्रिन्द प्रिचार स्याम जिन प्रिमरीग बच ॥२५॥

राग गौड़ी

भला प्रमीवारे जानी तरी प्रीत ॥टक॥
 सोहैं म्याम जजाय रहा नित एमी पर गई रीत ।
 श्रीप्रजराज मुजान पीतम तुम निमत एक के मीत ॥२६॥

१४ C घाट । C घ । C घा । D घाटा । C कोन । 1C) गट । D घुन ।
 D घामगा । A बंशयो । B बंशयो । C बंशयो । C घाया । C घायो ।
 1C) बघ बगा । D बघाबगा । A बियायो । A बंशयो । AD बंशय ।
 A घागा । 1C) कुत्राय । D कुत्राय । B कत्र । C कत्र । A का ।

१२. AD नत्र । C घाट । C) टा । 1C) टा । AIC मरे । AD पीठ ।
 B टाड । C गहो । AD गी । C हराये । 1C) लारदी घा - करीये बघ
 दलिन नगी । 1C) बूब । D C 11 1C) बिर । 1C) बिरार ।
 C बिरार । D बिरार ।

१६ A घा । C घी । AIC बहो । 1C) कुत्राय । 1C) नित्र । D घ ट ।

राग जजैवती

देखी भीलनी के चाखँ वोर पाये रघुवीर न ॥ टक ॥
 प्रीत की हे रीत न्यारी मन की लखँ वो सारी ।
 भाव ही के भूखे स्याम जान ना अभीर न ।
 गज ग्रीध ग्राह तार्यौ रिख त्रिय श्राप गार्यौ ।
 गोह कौ विचार्यौ मित्र सग लीहा'कीर न ।
 इन कहा कियो जप कवहू न मछ्यौ तप ।
 हर वो विहारी वृजराज पर पीर न ।
 मीरा जू की भात करमा को खीच खायौ ।
 देखी भीलनी के चाखँ वोर पाये रघुवीर न ॥२७॥

राग जगलौ

हे री वह सु दर स्याम सुजान प्रीतम सौ हित कर मिल ल री
 ॥ टक ॥
 विन अपराध मान कर वैठी तेरी कसो हठ है री ।
 श्रीवृजराज पिवाय अवर रस जस मौको द री ॥२८॥

२७ C देखी । D क । ABC चाख । BC रघुवीर । A प्रीत । A हैं । D हे ।
 ABD वी । D भूख । BC जान । D जानें । D ना । ABC ने । A गाथ ।
 D श्राप । A ग्राह । BCD विचार्यौ । A यन । A कायो । ABD वी ।
 D विहास । BCD वृजराज । ABD वी । A वीर ।

२८ D मुर । D सौ । D मन । BC विन । ABC मान । D करि । C तेरो ।
 ABD वैसो । A है । BCD वृजराज । BC माको । C दरी ।

कीने वरमाये ए री सावर की ॥ टक् ॥

भोर भयी सिगरी निस गीती अब हू घर नही आये ।

या त्रज की त्रिय वम कर रागत विनके स्प लुभाये ।

वा त्रिनु प्राण भयी अत व्याकुल उठ मजनी तो जाय ।

तन मन धन पारी में तीप श्रीवजराज मिलाय ॥२६॥

राग सिंह, मरी, विलावल

गिरधर कमी न गही कर मेरी ॥ टक् ॥

दीनदयाल महायव निन ही में चरनन का चैरी ।

दुमट दयन अनशन ती तुम रगही वग नरगी ।

काम रागध लाभ मद मछछर उनकी आन लग्यो चित घेरी ।

श्रीवजराज सरन म आया सरनागत वछ्छर त्रद तरी ॥३०॥

राग सारठ

टीना कहा कीनी है रगभीनी रागे करिय गुमान म्हागी आगी

॥ टक् ॥

त्रिमदिन प्राण त्र व्याकुल ही ह री तैन वछु दीनी ह ।

तेरी त्रस पियं त्रिनु त्रनी छिन म अति छीनी है ।

२६ A C वारी । A D वरमाये । D व्यावर । A भोर । C मया । D नहि ।
A र । I C D वृत् । I C त्रिनु । A D मया । I C D व्यावल । A त्र ।
D वर । I C त्रये । D त्र । I C D वृत्तर ।

३० D कीन । C त्रये । C मरी । A D की । C मया । I C D की । C कर हा ।
C तेरेत । A C वाम । A करी । A सोम । D मु । I C D मया ।
A मरी । D हीरी । C मया । I C D वृत्तर । C मया । A C मया ।
I व त्र । C वर । I D वृ । I C वर । I C मया ।

पिय मनमोहन ये मनभावन हुकम अधीनो है ।
श्रीव्रजराज कुवर को हेली तन मन हर लीनो है ॥३१॥

गरजी

रुडी भली रलीयावणी जी रे
आली जमुनाये तीर सुहावणी जी रे आली ।
रसन जी नो या नित आवणो जी रे
मधुरी सी मुरली वजावणो जी रे ।
हियै सोचे घणू ने कलपो घणी जी रे
नणे लाघो नथी व्रज नो घणी जी रे ।
रैन आधो रही न चदो ढल्यो जी रे
मोन नदजी नौ नद नथी मल्यो जी रे ।
मोथी भूठी थकी वलमे रयो जी रे
कभै अटलो दुख नथी सह्यो जी रे ।
सखी कोअे उपाय करया थकी जी रे
साम आव नथी तौ जावो मुकी जी रे ।
सखी वात वर वसी वजी जी रे
सरवै दुख नी जाल त्या थी भजी जी रे ।
वान माथै मुकट लकुटी लीये जी रे
वछे नट नो भेस भलो मीये जी रे ।

३१ C टोना । D टौना । C बीना । D बीन । C हा । D रगभर । BCD करके ।
ABC मारो । ABD रके । AB तैने । C तने । D दीनो । AB ह । D है ।
A काथे । D किये । AB छानो । D छीनो । AB है । D है । A मोहन ।
A थ । C मथीना । AB ह । D है । BCD वृजराज । AB हे । D है ।

बेते श्रीजराज सु आवीयी जी रे

मानु रके महानिधि पावीयी जी र ॥३२॥

राग सारट

भावगी पोतम प्यारी नगगारी है ॥टक॥

देग सगी मेगी मन हर नीनी नद का कामनगारी ।

मिनु देगी छिनु कल न परतु है कमे करिय यारी ।

श्रीजराज किमोर कु वर गी जीवन प्रात हमारी ॥३३॥

राग मलाव

ह री ए री पिय कच जाव गी दादुर वाग डराव ॥टक॥

उमडि घटा चटिक चलि आउं चपला चित चमकावे गी ।

३२ ICD बरी । A रखाप्यावणु । D रनीमानणु । ABD रे । PD रें ।
AD न । D नौ । A प्या । D भावणु । ABD र । A मपुण । A बजावणु ।
DD बजावणु । ABD र । AD ह । AB मोन । D णु । AB न ।
D नें । AHD बकी । D र । D नेगें । ABD वापी । ICD द्र ।
AID नौ । A णु । ABD रे । AD रेंन । AIC णगे । ABD बसो ।
AID र । A मोन । ICD नौ । ABD मन्वो । AID र । ABC मधी ।
A ण्यो । D दूग । A र्यो । FCD र । ABD घंटो । AID रे ।
AB ऊसान । ICD रे । D जागो । D रे । C बरे । AID रे । D मरें ।
D मना । ABD रे । AIC वान । ICD मामे । IC रिद । ABD रे ।
AB बों । B नग्यो । D नटो । ICD मरी । AFD रे । AB घटे ।
D घन । IC बूरसाव । D बूरगुद भावजी । ABD रे । AIC मद्रु ।
D रें । A मगान्पि । C वासाव । AID र ।

३३ C म रस । AIC णाय । C नगसाव । AID ह । ICD मरा । C म नौ ।
D म नौ । AID नौ । FCD बामनगारी । ABD रें । A रिन । AID रे ।
AID रें । A रिद । ID बरिद । C वासा । ICD बूरसाव ।
ICD रिग र । D बरर । AIC मर । C ह्वापें ।

गिरधर स्याम विना मुन सजनी तन मन अति दुख पावे री ।
 है कोऊ श्रैसो सन हमारौ श्रीवृजराज मिलाव री ॥३४॥

राग सोरठ

पिय सौ मौन न लीजिय री गौरी,
 चढ कर आयौ घन मान मिटावन ॥टका॥
 रूप जोवन धन दिवस च्यार को बिन अपराध न छोजिये ।
 दादुर मोर पपीहा बोलत धुनि सुनि अब चित दीजिये ।
 श्रीवृजराज पिवाय अघर रस हुकम अधीनौ कीजिये ॥३५॥

राग कानडौ

बूडत सिंधु गयद बचायी ॥टका॥
 रसना राम नाम को लेत मारयी ग्राह गजद्र छुडायी ।
 दीन पुकार सुनी जब गिरधर दीनदयाल पयादौ धायी ।
 कमला छाड छोडक खगपति देर भई तव चक्र चलायी ।
 श्रीवृजराज सहायक है नित सुर मुनि आदि सब गुन गायी ॥३६॥

३४ BCD प्रावे । A बोन । A ऊ मन् । BC उमड । CD चढिक् । A आई ।
 B चमकाव । A मुनि । ABC प्रत । BCD पावे । AB कोऊ । D कोउ ।
 ABD प्र सौ । C हमारो । BCD वृजराज । BCD मिलावे ।

३५ D पीय । BCD मान । A लीजिये । D गौरी । C मन । A जोवन ।
 ABD को । A मोर । A दोनत । BCD धुन । PG सुन । C प्र - । A दीजिये ।
 BCD वृजराज । ABC अधीनो । A कीजिये ।

३६ BCD बूडत । D सिंधु । C बचायो । D रसना । ABD को । AB वेतें ।
 C नन दान दयान पयादौ धायो । D सत । A दीन दयान । B दान दयान ।
 C गिरधर मारयो ग्राह गजे छुडायो । A पय्यादो । CD क । D वृजराज ।
 CD प्रा । C सब । D पायी । A श्री वृजराज गुन गायी पक्ति नही ।

राग त्रिहाग

वृ द उरनन नागी भावनियारी ॥टका॥
 उमड धुमड घन गरजत आयो उर विरहागन जागी ।
 पीतम स्याम त्रिदम विल्व रह भूलि गय अनुरागी ।
 श्रीप्रजराज सती री मीनी बन मिल ह वडनागी ॥२७॥

राग भैरवी

अे गी म कमी कगी प्रमी वाज रही री ॥टव॥
 मन दर्ई बन मे वामाली बैरन तमुना पीच वही री ।
 श्रीप्रजराज बिना मे व्याकुल चित्त की पीर न जात वही री ॥२८॥

राग धनामरी

गिरघारीजी काहै कौ नौह रगी ॥ टेक ॥
 वित्त गोकुल मथुग घदावन चिन चाहै ज्या पिगी ।
 साहू हो रहिया नहिँ मानत अर कयो पाय पगी ।
 श्रीप्रजराज नवन तुम नायक भयन नार वगी ॥२९॥

- २७ C डूटे । A भावनियारी । D म बन मरा । A उमड । DC उमैट ।
 IC पुँमड । D पुँमड । A मरनी । C मारा । A ऊर । A विरहागन ।
 BCD मर । ICD मरमर । DD मीनी । C मीनी । C है ।
- २८ D घँसा । A वर । C कगे । A उमन । BCD मरमर । D वित्त ।
 ICD मरमर । D व ।
- २९ A वार । A वी । AC वरी । A लीकर । BCD मरमर । A वार ।
 A मरी । A वरी । C विस । ACD वी । AB वर वी । C वरी ।
 ICD मरमर । A वर । D वरी । C वर ।

पराई पीर न जानत स्याम ॥ टक ॥

पहिल तो रस वस कर लीनी पीछ बौन काम ।

मेर तो तुम ही मनभावन है तुमको बहु वाम ।

गरज सरी ब्रजराज तिहारी कबहू ली नहि नाम ॥४०॥

राग कैरवी

हे कजरार ननौवारी हे री मौप कहा ठगौरी डारी ॥ टेक ॥

रग सुही को लहंगा पहने हे री तेर सीस पिरोजी सारी ।

तो बिन चित ही रहै अति व्याकुल ह ब्रपभान दुलारी ।

श्रीब्रजराज पियारी तोप प्रान करौ बलिहारी ॥४१॥

राग पट ताल जलदी तेतालौ

कंस जाऊ कस जाऊ जमुना तीरै ठाढो नटवर छैल अहीर ॥ टेक ॥

बाहू की वी सक न मानत भरन न देत अली अब नीरै ।

नैन मिलाय सग सग धावत नैव ही चित म धरत न धीरै ।

श्रीब्रजराज विलोकत ही सुनि वस कर डारत है बलवीर ॥४२॥

४० C ता । BCD वस । A पाछे । A बौने । AD काम । C तो । C हो ।
C तुमका । BCD वाम । FCD ब्रजराज । ABD तो । D नहि ।

४१ D है । ABC कजरारे । C तावारा । CD मौप । C ठगौरी । D की ।
C लहंगा । D लग्गा । BC पहन । C तर । BCD बिनु । AB रहे ।
FCD ब्रजराज । CD ता ।

४२ C जाऊ । D जावू । C जाऊ । D जावू । A तीरै । D ठाँ । A सी ।
BC वो । C प्रजो । A नीरै । ABD नैव । BCD ब्रजराज । A विलोकत ।
BC सुन । A है । A बनवारै ।

मोरपमवागी अत है नग्नगरी स्याम मु दग् प्री नद दुलारी ॥ टक ॥
 टट्टी चितवन मोहै मन नौ प्रमि बजावै वी मनवागी ।
 कोट मदन छवि जिय वी जीवन रूप उजारी ।
 ऐसी मत्र कहा पट दोनी रोम रोम अति कपत न्यागी ।
 श्रीद्वजराज का रूप गयी कत्र भेरी अति ही प्रान पियारी ॥ ४३ ॥

वसो बज ही जमुना तीर ॥ टक ॥
 तीयो तान सुनी रो मजनी जत्र त उ म है अन पौ ।
 टट्टी चात्र रल वी गज ही पु दग् प्यागी स्याम गरीर ।
 श्रीद्वजराज माह लई मावा टार गर विच प्रेम जजीर ॥ ४४ ॥

रगल गगल री गगल

उख जाना हो तुम जारी विननी कण्ठि प्रन प्रणिता ही ॥ टक ॥
 दग्ग विना प्राट्ट ता मन है पपर न नी निता वी ।

४३ C गगल ॥ १ C गगल ॥ C गगल ॥ D बज ॥ मनवागी ॥ १ C मनवागी ॥
 D बज ॥ D ली ॥ जिय बज ॥ १ D प्रमि ॥ १ D वी ॥ D ली ॥
 D ली ॥ (१ १ १ १ १ १ १ १)

४४ A D बज ॥ १ D बज ॥ C गगल ॥ D बज ॥ १ डर ॥ C गगल ॥ १ डर ॥
 C गगल ॥ D बज ॥ १ डर ॥ C गगल ॥ १ डर ॥ १ डर ॥ १ डर ॥
 १ डर ॥ १ डर ॥ १ डर ॥ १ डर ॥

वस करिक गिरधर प्रीतम अब भूलि गर्ये सुधि वाकी ।
श्रीब्रजराज सुजान कु वर को पतिया लिस लिस थाकी ॥४५॥

राग अडाणी

पिय सौ कबहुँ मान न करि हा ॥टेक॥
जित चाहै तित प्रीत करी अत सुपन ही नहिँ लरि ही ।
काहू कै कहिये नहिँ लागत विनप दोस न धरि ही ।
श्रीब्रजराज किसीर कु वर सौ हँसि हसि अक हि भरि हा ॥४६॥

राग जगलौ

सखी विन सावरे म निपट अनीखी आन ॥ टेक ॥
वसीवट जमुना के तट पर गाव तीखी तान ।
कवहू वा छव नरखी नैनन वारी तन मन प्रान ।
तव तै निसदिन रहै व्याकुलता मुरली सुनियत वान ।
श्रीब्रजराज कहाव ब्रजपत सु दर स्याम सुजान ॥४७॥

४५ A ऊढव । D जानत । C हा । C विनती वनिता की पाठ नग । D विनती ।
A कहियी । BD वृज । A निता । D विनत । BCD विना । C है ।
CD मार । C मे । A निता । ABC कर । D क । BCD भून । BCD गये ।
D मुध । C मुधि । BC वृजराज । D दजराज । AFC मुजान ।
A पतिथ्या । D पतिया । BCD लस लस ।

४६ BCD कबहुँ न मान । C हा । C करी । C मुननें । BCD वर । C न ।
D कहिये । ABC नग । C पे । AB दोम । CD धर । C न । BCD वृजराज ।
BCD किसीर । D कुवर । BC हम हस । D हस हम । FCD भर । C हा ।

४७ D वन । C मे । C प्रनावा । BCD गाव । A द्विद । C नरखा । D वारी ।
A तो A रहे । C है । BCD व्याकुलता । BCD वृजराज । I CD कहाव ।
BCD वृजपत D मुर । A स्वम ।

वस करिक गिरधर प्रीतम अव भूलि गये सुधि वाकी ।
श्रीव्रजराज मुजान कु वर कौ पतिया लिय लिख थाकी ॥४५॥

राग अडाणी

पिय सौ कवहुँ मान न करि हा ॥टका॥
जित चाहै तित प्रीत करौ अत सुपन ही नहिँ लरि ही ।
काहू क कहिये नहिँ लागत विनप दोस न धरि ही ।
श्रीव्रजराज किसीर कु वर सौ हँमि हसि अक हि भरि हा ॥४६॥

राग जगली

सखी विन सावरे म निपट जनौखी आन ॥ टक ॥
वसीवट जमुना के तट पर गाव तीखी तान ।
कवहू वा छव नरखी ननन वारी तन मन प्रान ।
तव त निसदिन रहै व्याकुलता मुरली सुनियत कान ।
श्रीव्रजराज कहाव ब्रजपत सु दर स्याम सुजान ॥४७॥

४५ A ऊढव । D जानत । C हा । C विनती वनिता की पाठ रहा । D विनती ।
A कियी । BD वृज । A निता । D विनत । BCD विना । C है ।
CD भार । C मै । A निता । AFC कर । D न । BCD भन । BCD गये ।
D सुध । C सुधि । PC वृजराज । D व्रजराज । AFC मुजान ।
A पतिया । D पतिया । PCD वर नर ।

४६ BCD कवहुँ न मान । C हा । C करी । C सुपनें । BCD तर । C न ।
D कहिये । ABC रहा । C पे । AB दोस । CD धर । C ने । BCD वृजराज ।
BCD किसीर । D कुवर । BC हस हँस । D हस हस । I CD भर । C हा ।

४७ D वन । C में । C वनावा । BCD गान । A दिव । C नरवा । D वारी ।
A तो । A रहे । C है । BCD पाकुलता । BCD वृजराज । BCD किये ।
BCD वृजपत D मुर । A म्यम ।

हे री हे री मेरी कसै रहै री देह
 री वह ब्रजनिध स्याम मुजान प्रीतम विनु ॥ टेक ॥
 गिरधर गवँन कियो जत्र ही त उर म पीर अछेह ।
 दिन अरु रँन रही अत व्याकुल नँनन वरसत मेह ।
 श्रीब्रजराज बठौर कर चित छाड चलै री नेह ॥४८॥

राग काफी

जमुना तट जाय स्याम वामुरी बजाई ।
 मगरी ब्रज नार वान सन दै बुलाई ॥ टेक ॥
 मधुरे सुर लई तान रचव धुन परी वान
 ग्रह ग्रह त चाहि चाहि गोपिन उठि धाई ।
 व्याकुल अत ह्वँ अधीन जल त्रिन ज्यों परे मीन
 बाहू की न मव कीन आतुर ह्वँ आई ॥
 भूल गई ग्यान पान तु दर तिय आन वान
 परी वान वान यह कान्हू की मारि ।
 ठाटो इह रोव गैल नटवर पिय गमिव छैन
 कहा कहीं समी तोहि ढीठ की टिठारि ॥
 मिली जत्र आय ग्वाल पूछी तत्र नदलाए
 कही कहा वाम कछु कीन की पटारि ।
 मोहन तुम हो मुजान प्रभन ज्यों ह्वँ अजान
 भूटो कर रात तुम नाच सी नुनाई ॥

४८ १ D कसै । C कसै । AD रहै । ECD बृज । FCD पठन । ECD पवन ।
 A कायो । C तिया । A ऊर । C लो । LCD बृजराज । C क्यार ।
 AD वन ।

रावरे ही दरस काज मेटी सब लाज पाज
 करौ कहा प्रीतम तुम असी चतुराई ।
 हमकौ पुन दोस दियो अपनी हू काज कियो
 प्रीत हू की रीत कहूँ दुर ना दुराई ।
 मधुरै से सुनत वन तन मन को भयौ चन
 मोहन ब्रजराज आज छाक सी छकाई ।
 आनदमय भई वाल सब ही तिय हूँ निहाल
 गिरधर रस ल गुपाल रीभक रिभाई ॥४६॥

राग विलावल

या जग म जीवी मपना सम करत अकृत देख नहिँ रे मम ॥टेक॥
 जनम सौ खप ह द्रढ ये ही नाहिँ रहै जडता तजि अधम ।
 मात पिता वधव कौ बस हिन पकरि खच लज ह वे जम ।
 श्रीब्रजराज बिना नहिँ साहिक तन मन सौ वाकै चरना नम ॥५०॥

- ४६ BCD जमुना । D वासुदे । A सिगरी । BCD वृजनार । A दै । D दे ।
 A मधुर । A धुनि । A गोपिन । A ऊठि । BCD याकुल । A प्रति ।
 A हूँ । A अधीन । A विनु । CD परे । ABC मान । A बाहु । A हूँ ।
 D सुन्दर । AB यहै । C हे । A यत् । A रोक । C कगे । D ताप । C दिठ ।
 BCD मनी । B जवै । A कहूँ । A मोहन । C हो । A है । C वारँ ।
 D सावा । C करो । BD नरौ । C हमका । A दोस । BC लियो । D दायी ।
 PCD अपनी । D कहूँ । BCD मधुरे । D मे । ABC वैन । AB कौ । D की ।
 BC भया । D भया । D चन । A मोहन । BCD ब्रजराज । D क । D रीभाई ।
 ५ C जीवो । D जीवो । BCD अकृत । C देख । C जनम । D जनम । AD सो ।
 D खप । BCD है । AB दृष्ट । AC ग्रेहा । A रहै । A प्रानम । D खनि ।
 D तज । BCD ब्रजराज । C बिना । BCD साहक । BCD वाक । D चरनी ।
 D मन ।

ऊधी बान्ह कहूँ बलमाये जोग सिखावन तुम हू आये ॥टेक॥
 केहू भाग सजोग दियो विन अवहू वा विन पल न रहाये ।
 आवन मुनत जियँ अतनँ दिन हमको मारन तुमहि पठाये ।
 तुमका मित्र तवँ हम जानत कृष्णचंद्र की दरम कराये ।
 श्रीप्रजराज कृपा कर आवत जब हू आनद की निघ पाये ॥५१॥

राग पूरवी

परी तोमँ अजब अनोगी आन ॥ टक ॥
 नीद भरी नैनी बजरारी छाय रही अल्मान ।
 नग मिंग रूप रमौली नागर मोहत तन मन प्रान ।
 वसि है प्रान पिये भाभावन श्रीप्रजराज मुजान ॥५२॥

राग अढारी

ह री तर ननन वानन जोग ॥ टैक ॥
 वाधे जिय म अत व्याकुलता तू मन का मन चोर ।
 मोहनी मूरत अत ह तूद- तानों इतनी तोर ।

-
- ५१ FCD ऊधा । AIC बान्ह । AIC कहूँ । A बलमाये । A जोग । A आये ।
 D क' । A नोग । A सजोग FCD दियो । D विन । CD विद । A पलने ।
 D मारन । C हमको । D हमको । FC तुमहि । D तुमहि । A पठाये । A छड़े ।
 D क' । A मित्र । C क' । AIC कृष्णचंद्र । A दरम । ICD कराये ।
- ५२ ICD नीद । AID भरी । AD नैनी । AIC बजरारी । FC छाय । CD रही । A अल्मान ।
 AB नग । AIC रूप । A रमौली । AIC नागर । A मोहत । ICD तन ।
 AB मन । AIC प्रान । A वसि । AIC है । A पिये । ICD भाभावन ।
 AB श्रीप्रजराज । AIC मुजान । A ५२॥

निसदिन भुमरन तेरो करत है तो चित अब तो ओर ।
श्रीव्रजराज सुजान मनोहर तासी होत कठोर ॥५३॥

रयाल नाश्रीकी

हेली तेरी अजब हठीली मान ॥ टेक ॥
तोकाँ वार वार समुभावत नकहु जी (य) में आन ।
सुख की बात सिखावी ही अत सुन ल तू अब वान ।
द गरवाही मिल मोहन साँ करहु सुधारस पान ।
श्रीव्रजराज सलौने ऊपर बैठी भौहन तान ॥५४॥

राग तोरट

गोकुल आनद मगल आज ॥ टक ॥
ग्रह ग्रह त वनिता मिल निक्सी मुदर सजक साज ।
भू कौ भार उतारन मोहन असुरन के ख काज ।
भादी विद आठू सुभ मोरथ प्रगटै श्रीव्रजराज ॥५५॥

५३ A र । A नानन । A जीर । A जीया । A अति । ABC याकुता ।
BCD तू मत मन । D दू । ACD चौर । A मौना । ABC ह ।
A यतनी । C इतनी । ABC तीर । ABD है । A तिहारो । BCD तो ।
ABD अबतो । AB धार । BCD वृजराज । A मनोहर । AD कठोर ।

५४ D दारा । C तरा । BC हठीनी । BCD नैक । C सिखावो । D सुख
की सिखावा । C हो । BD हो । D सुन ल अब तू । BCD दे । D गरवाही
मन माहन । A भौहन । C वान । BC व्रजराज । D वृजराज । A सौन ।
B सौन । C सलान । D उपर ।

५५ A गोकुल । D आन । D त । BCD वनिता । D मुदर । D सजक । A क ।
A उतारन । A मोन । AD क । IC भा । D भा । D आठू ।
A मोरथ । D तीरथ । BD प्रगट । BCD वृजराज ।

ब्रज में प्रगट भयो है कम हूँ को काल ॥ टंक ॥
 मान पिता चित भरम मिटायौ जनमहु तें वहै वाल ।
 ब्रज जन के अति ही मुखकारी अमुरन को उर साल ।
 श्रीब्रजराज निग्व चल सजनी निरखै हात निहाल ॥५६॥

भूठ वाल पिय मोल लियो मन ॥ टंक ॥
 तिय मनभावन अति ही मुहावन
 साच ही को तरै चित में पन ।
 है रम बम गिग्घर नदनदन
 ती सी और नही बावै धन ।
 श्रीब्रजराज मनानी मुग न
 नहिं प्रिसरत तीकाँ इक पल छन ॥५७॥

गतौ

कोन पगी वान तेर नैनों की अहा परी ।
 तलफ रह्या प्रान मगी दन त वा ही धरी ॥

५६ 1 CD घृज । C मयो । AD है । AB की । C बिब । ABD मिग्या ।
 A जन । १ घै । D वर । 1 CD घृज । A घत । BCD की । A जर ।
 1 CD घृजज । D मनी । A हीत ।

५७ A बोर । A मोर । A लयो । A घत । D ग्याग । BCD जि ।
 A D की । A लर । A है । A नैवना । BC नैवशन । LCD लो ।
 1 CD घृजज । FC मनी । A मनी । D बिग्या । A तेरी ।
 B लयी । A डर । १ दिन ।

सुरमी त सवारे छिन टरत हू न टार अग ।
 सजन त वारे यह सुरत दिल मै अगी ॥
 मासूक या ही लजाती घू घट ही मै मुसक्याती ।
 आसक कौ लुभाती महबूव ती जाती टरी ॥
 ब्रजराज प्रानप्यारी पल हा न करा न्यारी ।
 मुजन ती ज्यानवारी सुन वात कौ रहवै खरी ॥५८॥

राग सारठ (बधाइ)

ब्रज तिय फली अग ना समात ॥ टेक ॥
 मगल गावत कलस वधावत आवत चित उमगात ।
 भादी मै हरि जनम लियो ह आठा की अधरात ।
 श्रीब्रजराज निरखि छवि नागर रीभ रीभ छवि जात ॥५९॥

राग (बधाइ)

है वसुदेव ती वन तात ॥ टेक ॥
 धय तव ग्रह कृष्ण जनमे धय देवकी मात ।
 धय है वह नद जसुदा निरगि रूप लुभात ।

५८ D नैती । A अी । D अहा । D पर । C मरो । A सवारे । BC सवारे ।
 C हू । BCD मग । ABC वार । BCD इ । BC सुरत । C मासूक ।
 BCD या हा । BC घूघट । BCD म । ACD मुसक्याती । FC कौ ।
 A भुजानी । AB लौ । BCD ब्रजराज । D पन । BCD ता । C वारा ।
 D वात । ABC रव ।

५९ BCD ब्रज । D बधावत । A ऊमगात । A तीयो । ABD है । BC ब्रजराज ।
 D ब्रजराज । BCD निरख । BC निरख । BCD छवि ।

घन्य हैं ब्रज गोप गोपिन घाय सी दिन रात ।

घाय हैं ब्रजराज गिरधर दास बल बन जात ॥६०॥

राग अडाणी

रे मन क्यों विसरै ब्रजराज ॥ टक ॥

इन विसरै विसरै जग तोमा कटुह न नगहै काज ।

जिन गज श्रीध श्राहू वौ तार द्रुपद मुता की राखी लाज ।

नू हैं दीनदयाल हरी भज विरद गरीय निवाज ॥६१॥

हरी विनु कीऊ न पीर हरेगो ॥ टक ॥

अपनै अपनै म्यारय के नव नव न काज सरैगो ।

भूठे वौ माची वर मानत कैम पार परैगो ।

मन जप माव चलै मुम मगत तर भव मिधु तरैगो ।

है ब्रजराज प्रभू जगताग्न सो ही माहि वरैगो ॥६२॥

६० A बमपव । AB ठो । C हा । FCD घन्य । A काज । D नगहै । APC दरि ।
AP पय । A वरे । D निरय । AB घन्य । CD है । ECD वृज । A गोप ।
A गोपिन । AB पय । FCD मा । A पय । CD है । LCD वृजराज ।

६१ C काज । AIC विरद । FCD वृजराज । A इन । A विसरै । A विरद ।
B कागो । C नामा । D होमा । C मर है । D जन । D दुःख । D नू ।
CD है । D निवाज ।

६२ APC हरि । FCD विनु । A कीऊ । AD बनने । C पनो । AD बनने ।
D व । AB नैव । FD मरणा । C सरैगो । FCD मर । A परैगो ।
CD परैगो । A वरे । D विप । A हरैगो । A ^३ । LCD वृजराज ।
LCD मा । A वरेगो ।

राग परज

कहा खेली पिय फाग ही ब्रज म ॥ टक ॥
जा तिय क निस जागै मोहन ताही को बड भाग ।
काके हाथ रगे ही रग में वाकी परम सुहाग ।
श्रीब्रजराज आज भौरन के लसत अधर दल दाग ॥६३॥

राग विहग

या ब्रज में फागन की रत आई ॥ टेक ॥
कु जन भीर भई भौरन की कोकिल कूक सुनाई ।
घर घर डगर डगर बट तट प मोहन धूम मचाई ।
अमिली होय रही क्यौ सजनी मिल प्रीतम सा दे गलवाई ।
श्रीब्रजराज सखी नी ती विनु पल पल जुग सी जाई ॥६४॥

राग झीझोटा

वाहै को रग डार है ही ब्रज के वसैया ॥ टेक ॥
चुवा चदन अतर अरगजा पिचवारी जिन मार ।

६३ CD हो । BCD ब्रज । C में । ABC जागे । ABD की । A का के रग रगे ।
C हो । C वाको । D ब्रजराज ।

६४ A य्या । D ब्रज । C मे । A घाई । A कु जन । D कुजन । A कोकिल ।
A सुनाई । C प । A मोहन । ABO धूम । A मचाई । BCD प्रमिनी
वहै क्यौ री री सजनी । BC क्यौ । A प्रीतम गनवाई । BC सी गलवाई ।
BCD ब्रजराज । BCD विन । A जाइ ।

घूघट खोल बोलत है वक वक दोय वापन विच वार ।
श्रीब्रजराज घीठ मनमोहन नैक न लाज तिहार ॥६५॥

राग परज

खेल रह्यौ नदलाल आगनिया में ॥ टेक ॥
राघे प रग डारत छलकर टारत है ब्रजवाल ।
रीऊ रीऊ मुसक्यात सखी री दौऊ परमपर होत निहाल ।
श्रीब्रजराज पियारी कौं पिय कर राखी उरमाल ॥६६॥

राग बसंत

अे री स्याम विन दिन कठिन जाय
कोकिल बोली निकट आय ।
सब कुसुमहू फूले अे री वीर
अरु चिहूँ दिस गु जत भेंवर भीर ।
फिर मद मद गति चलै समीर
मेरी तन मन कंस धरत धीर ।
अे री पत्र पिया पैं लखि पठाय
ब्रजराज रहैं क्यों अनत छा़य ।
अब विलव न करियँ मिलिये घाय
इह विरह रोग को दुख मिटाय ॥६७॥

- ६५ A बाहूँ । BCD वार । BCD बनया । BCD मारे । A गु घन । BC पु घन ।
ABD है । A विष । BCD ब्रजराज । A मोहन । ABD नैक । BCD तिहारै ।
- ६६ A धौगलिया । D धारै । A शरत रंग । BCD ब्रजवाल । O दाऊ ।
A होत । BCD ब्रजराज । A उरमान ।
- ६७ A विन । A दन । A यह कोकिल । ABD कुसुमहू । D बहू । BCD मवर ।
A गत । A बसैं । C मरा । BCD केने । A सखी पत्र पीया पैं लिख पठाय ।
D ब्रजराज । BCD रहे । A बड़ै । BCD 'मद विषय-घाय' पक्ति नहीं ।
A यह । BCD विरह । A रोग । ABD को ।

राग ललित

खेलन की चलिये अब सजनी
 खेल कियौ वहि छल मुरारी ॥टेक॥
 सुन निक्सी तिय भाननदिनी
 रग लिय अरु भर पिचकारी ।
 ग्रह ग्रह त गापी सब उमडी
 नदनदन को गावत गारी ।
 मद्दु मुसक्याय पाय सुख प्रीतम
 आय मिलै ब्रजराज बिहारी ॥६८॥

रगाल राग

अब सुध लीज्यो मेरी स्याम सुजान ॥टेक॥
 गज के कारन छाड्यौ खगपत सबद परे तिह कान ।
 भगतविछल के विरद कहावौ तासा नहिँ आसान ।
 श्रीब्रजराज धरौ चित करुना मो मन तेरौ ध्यान ॥६९॥

६८ C खन । A चनीये । D चनिये । A काया । BCD सुनि । BCD नदना ।
 A लीये । A गोपा । C गापीन । A ऊ मया । A नदन । D को । A मद्दु ।
 BC मिने । LCD ब्रजराज । A बिहारी ।

६९ CD छीन्वो । D तिय । D कान । BC विरद । C कहावो । C तोसो ।
 D तानी । BC नहि । BC आसान । C धरो । C तेरो । यह पद A प्रति म
 न्ना है ।

रैगती

देह को मानता माचा, समझ ल घट्ट है काचा ।
 पतंग के रग सौ राचा, कहै सौ मान लै वाचा ।
 सबै की जानता अपना, इहै जग रैन का मपना ।
 ये कोउ है नहीं अपना, जुगल निज नाम की जपना ।
 माँस की आम ह काई, जस इन वृछ की छाई ।
 पतासा नीर के नाई, एक दिन छार वैं जाई ।
 अविद्या बट्टत करता ह, हरी सौ नाहिँ टरता ह ।
 दरब के लोभ लगता है, क्यों जम पास पगता है ।
 नीत की राह सौ चल रे, अरे मन बलपना तज रे ।
 परम लै चरन री रज र, सदा प्रजराज की भज रे ॥७०॥

राग अडाणी

मजनी प्रीतम का प्रम कर लै ॥ टक ॥
 दिन अपराध मान नहिँ कगिये प्रीत रीत सौ कर लै ।
 रहि विधि सौ रम बन हूँ मोहन मीग कहीं चित धर ल ।
 हुताम अधीन रहै नित हाजर भुज भर अकहि भर लै ।
 श्रीप्रजराज रिभाय मुहागन तन मन का तूँ हर ल ॥७१॥

७ BD की । D साचा । BD है । D मो । BC गो । FC मा । D माचा ।
 D नगि । D नाम । D है । IC लहा । IC जा । D क । D की
 जम परता है पति नहीं । IC र । D है । D ने । D है । दू व
 A प्रति में नहीं है ।

७१ IC लया । D कर ले । IC बम । D हा । दू व A प्रति में नहीं है ।

राग सारठ

हो जी म्हानै प्यारी जी लाग मान

थे तौ क्यौ न करौ मृगानेणी जी म्हासू ॥टेक॥

जुभक भुकण अरु तरछी चितवन मोहै तन मन प्रान ।

अणरूठण अत रस वस कीधा वामण परम सुजान ।

श्रीव्रजराज पियाजी थारा कर न सकत वाखाण ॥७२॥

राग कल्याण

मोहन की मुरली सुनियत वान ॥ टेक ॥

कहा करौ करिये कछु सजनी दिल प अति अकुलान ।

आय मिलाय मखी नदनदन वा बिन तजिहौ प्रान ।

क्यौ बिसरै प्रीतम सुन मोकी श्रीव्रजराज सुजान ॥७३॥

राग विहग

अँसियन म आन परी इह वान ॥ टेक ॥

छिन हू रूठ रहौ सुन सजनी जिय म अति अकुलान ।

रूप छकै ब्रजराज विहारी जानत मोकी प्रान ॥७४॥

७२ BD ही । D म्हान । C ता । C करो । D मृगनेणी । BD शीपा ।
D कामण । C सुजा । CD पियारी । CD थारा । CD वाखाण । यह प०
A प्रति म नहीं है ।

७३ D प । D प्रकृत । BC मिलाये । D प्रान । यह प० A प्रति म नहीं है ।

७४ C में । BC वान । C रहा । C प्रकृत । D छके । BC मोकी । यह प०
A प्रति म नहीं है ।

प्यागी जी के स्याम मु चीवन बेस ॥ टक ॥
 मरुल मुगध प्रिरच भवारै मु दर सरल नुप्रेम ।
 पिय मनभाय अति हि सुहायै नीतिन देत विद्रम ।
 श्रीप्रजराज कृपा तै पाय पूजै देव महेम ॥७५॥

मयी गी वह धन व दावन राम ॥ टक ॥
 मोनल छाह तीर जमुना को चित का ह अभिराम ।
 वन नरना प्रसै य पउे नितप्रत लहै नाम ।
 मेवायु जन रहत निरतर गधामाहन म्याम ।
 श्रीप्रजराज पिया की छत्रि प वागी अति अघ काम ॥७६॥

मयी गी नू रामहल चरि आज ॥ टक ॥
 नू ही जीवन है माभावन जानत पिय निरताज ।
 काजग तिलक तमान आदिलै मु दर तन का माज ।
 तर रारन वाट निहारै प्रीतम श्रीप्रजराज ॥७७॥

७५ IC ध्याम । D मगरे । D मुदर । CD मरम । D मुद । BC ३ड । व
 ए A प्रति म न । ३ ।

७६ D र । DC धाम । D नार । HD को । C नै । D नरे । D निर ।
 C का । वर ए A प्रति म न । ३ ।

७७ D महेत । D वाक । D उवन । IC ए । D को । ए ए A प्रति
 दे न । ३ ।

हे री म कंस जमुना जावौ री गल विच छैल सरी है ॥ टेक ॥
 कहत न सकत बचन बछे विनत चत ही म अकुलावौ री ।
 बहिया मरोर तोर कस ये री नीर भरन नहिँ पावौ री ।
 श्रीब्रजराज रसिक को छलवल क्यौ करि तोहि सुनावौ रो ॥७८॥

क्यौ ढारी मथनिया मोरी ॥ टेक ॥

पकर लई मोहि जान अकेली बहिया पकर भवभोरी ।
 श्रीब्रजराज कस के घर म नाहिँ चलगी जोरी ॥७९॥

आवण कीज्यौ पिया सावणी तीज ॥ टक ॥

उमड घुमड घन पपीहा बोल चहुदिस चमक वीज ।
 आप विना म्हान नीद न आव तन मन रह्यौ छै छीज ।
 भीँजतडा ब्रजराज कृपा कर चढि आज्यौ कर रीज ॥८०॥

७८ C खरा । D विन । D त । C अकुलावो । D नहा । O पावो । BD को ।
 BC कर । C सुनावो । यह पं A प्रति में नहीं है ।

७९ C क्या । D मथनीया । BC मुहि । BD क । BC म । D नाहि । यह पं
 A प्रति में नहीं है ।

८० EC बीजो । D पपाया । C वाचे । O चमक । BC म्हाने । D नाद ।
 C रह्यो । PC चढ । C आया । यह पं A प्रति में नहीं है ।

दग्म प्रिना बटूते दिन बीते ॥ टक् ॥

बैठ रहै मधुपुर में मोहन कुप्रज्या सौ रस पाय न चीत ।

कोऊ जाय वही विनमो इह नदनदन अति ही अनीत ।

श्रीप्रजराज दरम अब दीजो हम हार तुम जीत ॥८१॥

ह मनमोहन मागनचोर ॥ टक् ॥

आप न ताय सवाय सजन की देत मधनिया टोर ।

कर का मार तार काचू कम जाय दुग्यो प्रज की इह गार ।

श्रीप्रजराज निठुर तुम ह ना नाहि चरै बछु जार ॥८२॥

राग पृथ्वी चौतालौ

चलिये जु नदलाल कुजन रही काल

देमे हैं म माहन अत रमाल ॥ टक् ॥

चदमुग्गी चतुर नार केन कला गुन अपार

गवन देगि लाजत हैं मराल ।

तग ही दरम काज आनी पिय प्रजराज

नाजुक नाग नवल बाल ।

८१ DC बिना । D आर । IC पर । PC दरम । D हम हा नरे तुम । दर दर
A प्रति म नरा है ।

८२ C ही । D मराल । PC दरम । D आर । D निठुर । D ही । B नाहि ।
D ना । दर दर A प्रति म न । है ।

केसर को तलक भाल मोतियन की गरै माल

निरख नैन रीभ गीऊ वो निहाल ॥८३॥

राग देवगधार

आर्य भान भोर उठ प्रीतम तुमको मोस हे अनुराग ॥ टेक ॥
बिन गुन हार विराज उर प अधरन प भोरन दल दाग ।
हुकम अधीन रहे जाहर सब सब वाकी अत परम सुहाग ।
श्रीब्रजराज दोष नहिं तुमका है मेरी असौ ही भाग ॥८४॥

पोढी सेज मुजान पियारी आय गय तहा प्रीतम स्याम ॥ टेक ॥
नव दुलही के रस बस बहे अत पाये अकेली सु दर ठाम ।
श्रीब्रजराज निहाल हि बहे क नित ही का भयो पूरन काम ॥८५॥

राग पुरबी

काहि करी मनुहार म्हासू म्हे तो थाग दल री जाणी ॥टेक॥
इण वाता थाने कूण पतीजे प्राण पिया ये ती रम बस वासू ।
श्रीब्रजराज म्हे परत न वाला रगभीना रसिया जी थासू ॥८६॥

८३ C है । D घाना । C नाजक । D नागुर । BD का । C गरे । यह पद A प्रति म नहा है ।

८४ D घाप्र । D मातो । B विराज । C विराजे । C प । D गग । D नहि । D तमको । D मरी । EC ठेम । यह पद A प्रति म नहा है ।

८५ BC मुजान । D गय । D मूर । D हा । BD की । CD भया । यह पद A प्रति म न । है ।

८६ C करा । D मासू । D म्हा । D जना । IC घाने । D वाया । C ता । B वासू । D म्हा । D रगभाता । D रमीया । D थासू । यह पद A प्रति म नहा है ।

हे मोरी माई साभी के दिन ग्राही ॥ टक ॥
 मेवावु जन कुमुम मनोहर चुनव को लै जाही ।
 कव ही त चित चाह वढी अति इह ओमर अय याही ।
 श्रीप्रजराज रमिक नदनदन भोको आन मिलाही ॥८७॥

राग (आरती)

जय अथ जननी, मा मेवक कल्पिल हरनी
 महिषामुर दलनी ॥ टक ॥
 असुर मिथारन रन जयकारन तारन मय जा की ।
 नु भ निगु न मु मारन टारन है अथ की ।
 अति गुणदाई वरत महाई माई मदमाती ।
 महिमा कहत न जाई छाई द्विग गनी ।
 जग जस लीजै दरगन दीज कीजै चतभाई ।
 विनती अथ मुनि लीज (मगर कीजै मु द महमाई) ॥८८॥

राग महार

आयो गी प्रीतम चित्त पै उठाह छायो
 भोवा मलार गाया भया मन भाया गी ।

८७ ॥) माई । D कुनव । BC कुनम । FC कुनव । D की । D कु । C लेजा ।
 D कवी । D वर । 10 वर । C दाया । C माया । C सिन । वर वर
 A प्रति व न/1 है ।

८८ D वर । D आना । D मा । D वर । D है वर की पाठ नहीं ।
 10 वर । 10 विनती । C मर । वर वर A प्रति व न/1 है ।

उमड घुमड घन विजुरी चमक चमक
 नई नई बूँदन रग वरसायो री ।
 घन घन भाग हेली परम सुहाग तेरी
 सुख सौ छिकाय स्याम दुख विसरायो री ।
 उठ री सिंगार साज मिलै ब्रजराज आज
 पिय हू को आगम पपीहा सुनायो री ॥८६॥

दुमरी राग जगलो

बैरन पायल रनभन बाजै सुन री पिय प कैस जाज ॥८६॥
 या ब्रज को सखि लोग बावरी गुरजन सौ अति लाजै ।
 प्रीत लगी ब्रजराज कु वर सौ क्यौ करि नेह नभाजै ॥८७॥

बदरी काहे कौ चढ धाव नई नई बूँदन क्यौ वरसाव ॥८८॥
 दादुर मोर सोर कर मापे विजुरी मत चमकावै ।
 पापी पपीहा पिउ पिउ कवहू डर नहिँ पावै ।
 श्रीब्रजराज कुँवर मनभावन प्रीतम अब घर आव ॥८९॥

८६ D भायो । C मे । BC उदाप । BD छायो । D बोजुरी । D नई नई ।
 C तरा । C मिने । BD कौ । D पपाया । C सनायो । यह पद A प्रति मे
 नही है ।

८७ C सन रा । D मुनि री । BD कौ । CD बावरी । D सौ । BC कुवर । मह
 प A प्रति मे नग है ।

८९ D नई नई । C भा । C बिजुरी । D पपिहा । D नहि । यह पद A प्रति
 म नही है ।

हे री हे री मोकी भूल गये घनस्याम

ह री वह मयुरा जाय पाय प्रभुता अत्र ॥टेक॥

बुवज्या सौं गम वम व्है अत ही हम सौं नाहिंन काम ।

वाकं कारन त्रज विमरायी छोड्यी घन अर घाम ।

श्रीप्रजराज निठुर ह नागर मुपन लै नहिं नाम ॥६०॥

राग विभावल

नदवारो छदगारो मोरुं टोना कीनी है ॥टेक॥

हो जल जमुना भग्न जात ही चित हर लीनी है ।

बरेजोर मोगी बईया पकर अधरामृत पीनी है ।

तलफन जात रैन तिन मजनी कटु पट दीनी है ।

श्रीप्रजराज सुजान मलीनी अति गभीनी ह ॥६१॥

राग गुमावरी

कामण कीधा छै जी नाजक नार ॥टेक॥

जिण मू रम वम आप हुवा छो पीवा छो जी पाणी वार ।

म्हैं छा हुकम अधीन राज ग थे वाका भरतार ।

६० D प्रभुता । C वाक । C विमरायो । C छोड्यी । IC मुपने । D ल । यह
९* A प्रतिम नही है ।

६१ C नदवारो । C दगारो । D व । D टोनी । D ही । D जमुना ।
D भरन । C हरन को । C बईया । C पकर । D धराम । D ह । C दीना ।
D ह । D सुजान । C मलीनी । D ह । यह ९* A प्रतिम नही है ।

कागट देस न म्ह वी जास्या पढस्या मत्र अपार ।
 श्रीब्रजराज पियाजी थाकी जाण पडी मनुहार ॥६४॥

राग गौडी

साभी पूजन चला री सखी साभी पूजन चलो री ॥टका॥
 वा हू के चत लगन बढी अत मन मोहन सी मिलो री ।
 श्रीब्रजराज हु वाट निहारत मुभ मोरथ दिन भलो री ॥६५॥

राग सोरठ

प्यारी जो म्ह थाग चाकर कहास्या
 मनभावन वचन तहोला मो ही नभास्या ॥टका॥
 हुकमी छा म्है कदमी थाका मनस्यो ज्याही मनास्या ।
 कर जोरे म्हे अरज करा छा महर करौ न कोठ नहिँ जास्या ।
 श्रीब्रजराज म्है रस बस थामू म वी छकाला थाने ही छकास्या ॥६६॥

६४ C छा । BD पावो । C छा । BC म् । D वी । C जास्या । D पडा ।
 यह पन् A प्रति म नग है ।

६५ D साभी । C चला । C वाट । BD मनो । यह पन् A प्रति म नहीं है ।

६६ D म्ह । D थागा । C बगाम्या । D हास्या । D म्ह । C थाका । CD मनता ।
 D मनास्या । D कर उजार । BC मँ । D करा । BC करा । D ने ।
 BC म् । D म्ह । D थामू । D म । BC छकाला । BC थान । D छकाम्या ।
 यह पन् A प्रति म नग है ।

काई मामू मान करी मृगानैणी ॥टक॥
 म्हा छा हुकम अधीन राज ग यो ही बूठी दोष घरी ।
 आप विना म्हाने कही न मुहावे मेट करी भगरी ।
 श्रीरजराज गुजान पियारी थ तो मारी मन ही हरी ॥६७॥

राग वगलो

मजनी जनी बीती जात ॥टक॥
 प्रीतम धारा भरया नाह्ण वाड दा चत मन अति अकुलात ।
 तीन मुने वातू कट्टिय नी दिन अपने की वात ।
 श्रीरजराज विना तून मोक घर वर नाहिं मुहात ॥६८॥

गतनी

ह री म कम जीपी री माहन नन लग ॥टक॥
 मे गई जल जमुना दिरा अपने ही मनमान ।
 वीन पनी प्राण तहा थाप गय वान ।
 नद री छीना ह मरीना टौना कीनी जान ।
 तिन प है अकुलान मेनी तरफ रह्यो प्राण ।

६७ १८ वांश । १८ मात्र । ८० वरु । १० गुणवत् । १० म्हा । १८ वीं ।
 १० म्हा । १० वरु । १० वरु । १८ मात्र । ८० वरु १० वरु १० वरु ।

६८ १८ वरु । १० मात्र । १० म्हा । १० वरु । १८ वरु । १० वरु ।
 ८० वरु १० वरु १० वरु ।

जो कोई चावो ज्यान जिवावो और ना इलाज ।

आज वहै घनस्याम सखी पिय आय मिल ब्रजराज ॥६६॥

राग कानरो

गज की साय करी करतार ॥टक्॥

खैचत ग्राह ग्रह्यौ जल माही अलप रह्यौ सिर राम पुकार ।

कमला छाड चढक खगपत पर आवत छन हु न लागी वार ।

असौ दीनदयाल प्रभू है ताकौ भजत न मूढ गँवार ।

लख चौरासी भ्रमत रह्यौ विक श्रीब्रजराज काँ वेग सभार ॥१००॥

रयाल कालिंगडा रो

जानी मारा राज थारी रीत जानी ॥टक्॥

भोर भये तुम बात वनावत रन कहा रति मानी ।

लटपटे पेच खुलै मनमाहन नैना नीद घुलानी ।

श्रीब्रजराज सदा तन मन म सुदर छवि दरसानी ॥१०१॥

६६ BC जावो । BC मनाना । BC टौना । D कीनों । D मर । D कीइ ।
C चावो । BC ज्यान । C जिवावो । C और । B ईनाज । यह पद A प्रति
मे नही है ।

१०० D खचत । D राम । D चढक । BC वार । C एमा । यह पद A प्रति मे
नहा है ।

१०१ CD घागे । D रँन । D कहा । D खुन । BC नैना । D नीद । यह पद A
प्रति मे नही है ।

भूल मत जाज्यो जी ही छी छदगाला जी ये ॥टेक॥
 तन मन प्रान रहै कदमा मै सु दर उर दिसत्राज्यो जी ही ।
 श्रीवजराज मुनी मुच मेरी पवैगा चह सड बाज्यो जी ही ॥१०२॥

राग सारद

प्रिनती मुनज्यो म्याम मुजान ॥टेक॥
 मै पापी चित म्यान न जानत मानत नैक न धान ।
 दोनदयाल महायक नित ही नाम मुयो है वान ।
 श्रीवजराज निभाय लिया तुम अपना विरद पिछान ॥१०३॥

राग विनायक

गिरधारी गोविंद गदाधर ॥टेक॥
 मोहन म्याम मन्प श्रीनिध वीठर वामन रावन पयकर ।
 केव प्रमन दयाल दमोदर श्रीवजराज मुजान सियावर ॥१०४॥

१०२ IC जाज्यो । IC ही । D प्रान । IC कदमा । D मै । IC रो । C मया ।
 LC माय्यो । IC ही । यह ए A प्रति म नी है ।

१०३ C मुनज्यो । D म्यामन । D जोनत । D नैक । D नम । C मय्यो ।
 C वानो । यह ए A प्रति म न है ।

१०४ IC नाम । DC बठर । D वमन । D मुजान । यह ए A प्रति म
 नही है ।

राग आसावरी

गिरधारी गोपाल मोहन वनमाली ॥टेक॥

श्रीवर स्याम राम करुणानिध ब्रजनायक नदलाल ।

राधारवन किसोर मनोहर सोभित अग विसाल ।

श्रीब्रजराज सरन में तेरै अब मेटौ दुख जाल ॥१०५॥

रयाल परच

मोहन नदकुमार आजौ म्हारै ॥टेक॥

बेसर रग अवीर घनौ है मीडत या घनसार ।

त्रैस फाग खेलौ तुम नित ही आज हमारी (है) वार ।

ओरन के सग खेलत अत ही कु जन करत बिहार ।

अन सन दे राखत तुमकी अैसी ह ब्रजनार ।

मेरी प्राण असौ हर लीनी जित चालत तित लार ।

श्रीब्रजराज वसे उर मेर पल पल कर हौ प्यार ॥१०६॥

रयाल राग

आयो वैरी मेह ते सहेली म्हारी पिऊजी दियो है विरह विदेह ॥टेक॥

कोयल कूक हियो अकुलाव पापी रे पपीहा जिय व् लेह ।

१०५ C वर । BC स्याम । D राम राम । BD मनोहर । C म । C मेटौ । यह पद A प्रति में नहीं है ।

१०६ C आजौ । BC म्हारै । C घना । D यौ । D घनसार । C खना । BC खनन । D बिहार । BC घन । C तुमकी । D प्राण । BC अैसी । C भर । यह पद A प्रति में नहीं है ।

दादुर माग कर या अत ही भिल्ली वान अछेह ।
श्रीब्रजराज मुनी ये प्रिनती अडि गय क्या नेह ॥१०७॥

राग

राज गता अत्र म्याम विहारी ॥टक्॥
अचत चीर गह्या काउ मेरी काउ माह्य करे न टहा गी ।
अरजुन नीम नकुल महदवा घरमपुत्र यौ ऋडु न निहारी ।
श्रीब्रजराज दया तुम दम्बी जनम जनम की दास तिहारी ॥१०८॥

तालु वनरी तिताला

मनमाहन ही मा तू मत करे मान ॥टक्॥
हाजर गहन हजूर सदा टिम सनमुख जोर पान ।
जानत तन मन वन ताकी त्रै निमदिन तेनी ध्यान ।
श्रीब्रजराज किमाग कृपानिध श्रीपति परम मुजान ॥१०९॥

राग सारङ

गयेजी र रूप लुभानी म्याम विहारी ह ॥टक्॥
वालत राग तग अन मुदर चितवन और अदा गी ह ।

१०७ C गिया । D है । BC गिर । BC बिग । C गिया । D पगिया । BD करे ।
C मुन । D मरे । D से । FC लार । ग ल A प्रति म न । है ।

१०८ D मरुड । C परे । C दबा । ग ल A प्रति म न । है ।

१०९ D मन । D राग । D मरुड । B नारी । D शारी निन । B बगानि ।
D म ल परम । ग ल A प्रति म न । है ।

और सखी याक सम नाहिन मनमोहन अत प्यारी ह ।
श्रीब्रजराज यी निरख निरख छत्र तन मन प्रान सु वारी हे ॥११०॥

राग सोरठ

अजब अनोपी ह ह राधे रानी जोवन हदो तोरो ॥टेक॥
मो मन रहत सदा तो तन मैं अब कछु नैक न ओरो ।
श्रीब्रजराज रहै मनमुख ही नैक हू नन न जोरो ॥१११॥

थे म्हासौं प्रीत निभाज्यौ जी रगरसिया छला चीरेवाला ॥टक॥
मोरमुकट पीतपट सोहैं सु दर छव दरसाज्यौ जी ।
श्रीब्रजराज मुजान सनेही कु जमहल भल आज्यौ जी । ११२॥

राग

मन बसियो मिजभान सलौनो ह ॥टेक॥
अजहू रूप लिरयो री अब कब अजब अनोपी आन ।
तलफत प्रान रह नित ही प्रत छिन छिन जिय मैं ध्यान ।
श्रीब्रजराज का आनि मिलावै प्रान करा कुरवान ॥११३॥

११० C व्रभाना । D वीनत । C धार । D म दा । D याके । C या । यह पं
A प्रति म नहा है ।

१११ C तारा । DD नैक । C धारा । D नैक । BC नैन । C जायो । यह पद
A प्रति म नटा है ।

११२ D म्हासौं । BC निभाया । DD प्रित पं । C सदर । D मुंर । BC दरसाजो ।
D मुननी । यह पं A प्रति म नटा है ।

११३ D मन । D बसीयो । D मजमान । CD सत्रोना । C रहे । C म । C धान ।
D प्रान । यह पं A प्रति म नटा है ।

धारी ओलू आवै छै हे राघे प्यारी ॥टक्॥

जित जावै तित तेरी सुमरण कैसी मोहनी डारी ।

बबह आय मिलावै जदुपत चित हित सो यह धारी ।

श्रीब्रजराज वसी छव उर में वा छव पै बलिहारी ॥११४॥

राग विलावल

छदगाली नद को यी छोना डार गयी मोप टीना ॥टक्॥

धेन चरावत तट जमुना पै मुदर प्यारो म्याम सलाना ।

जब त दीठ परी री हेली तल्फत प्रान रैन दिन सौना ।

श्रीब्रजराज विना अकुलाव विरह ज्वाल यो ताप सहौना ॥११५॥

राग

अत रगभौनी री हे री वी ब्रजपत ॥टक्॥

प्रीत दिग्वावत नैनन सौ नित मन मेरी वस कीनी री ।

छल अरु छद भरयो तन मन में रोम रोम छल लीनी (री) ।

श्रीब्रजराज सलीनी मूर्त कोटिक काम अधीनी री ॥११६॥

११४ B धारी । D धानु । CD तरो । C वनी । FC द्रवि । BC में । BD प ।
मह प A प्रति म नहीं है ।

११५ BD को । BC या । D लाना । D प्या । B सलाना । C सलाना ।
CD सोना । BC विना । BC धनुनावे । BD को । D सहौना । C सलाना ।
मह प A प्रति म नहीं है ।

११६ C भीना । C ब । C मरी । D बग । C बाना । C सीना । D सानो ।
C सलाना । D कानि । C धनीनी । मह प A प्रति म नहीं है ।

राग

कर जोरे ठाढी बलवीर ॥टेक॥

आरतवान अधीन तिहारै तू सजनी जानै नहिँ पीर ।

बस है स्याम सुजान मनोहर बार बार पीवै नित नीर ।

श्रीब्रजराज सनेह बढ्यौ अत चितवन प्रान धरै नहिँ धीर ॥११७॥

राग भीष्माटी

प्रगट नदनदन सुत भाई गाकुल बाजे आज बधाई ॥टक॥

चली सजनी मिलि देखन जइये प्यारी स्याम क-हाई ।

धन ब्रज धन जसुमति धन जननी जिन त्रिभुवनपति जाई ।

सुरपति के घर आनद छाया असुरन चित दुखदाई ।

सु दर बदन कँवल दल लोचन निरख द्विगन बल जाई ॥११८॥

राग

प्रगटे श्री जादवराई री मैं ॥टक॥

मथुरा जनम लियो दुखभजन गोकुल ले पधराई री मैं ।

कस सुयो सुभ दिन सवनन मैं चित मैं अति अकुलाई री मैं ।

मगल गावत बलस बधावत जुवती सब मिलि आई री मैं ।

११७ D कर ज्योर । CD ठाढा । BC बलवार । CD तिहारै । BD बार बार ।
D धरे । यह प० A प्रति म नही है ।

११८ BC बाजे । BC बधाई । C चली । D मिन । BC जईये । CD प्यारो ।
BD क । C छायो । D बवन । BC निरखी । यह प० A प्रति म नही है ।

कचन चार लिय कर गोपिन घर घर देत वधाई री में ।
 तन मन धन नछरावल कीजँ अदभुत कंवर कहाई री में ॥११६॥

राग

भूल करे मास आस आम की मो मोती ।
 मपना की सुख नहीं जान भूल्यो जनि कर गुमान ।
 बाहू नहिँ टारै दुग मुभट नू गाती ॥
 मिर ऊपर भ्रमत काल पलटू मे हूँ बेहाल ।
 मात पिता देव रह सुद मुख जोती ॥
 तौकी कहूँ मृद प्रान घर रँ तो हिये ध्यान ।
 मोहन रजरज कँ होती अनहोती ॥१००॥

राग

र मन कौन पिता जर माता ॥टक॥
 कौन प्रिया सुत बधव सहचर कौन मुहूँ अनदाता ।
 कौन दुख सुख दत लेन की का जाना को आता ।
 मृाप्रसना ज्यू भ्रमत रहत जग नूठी मत दरमाता ।
 परमात्म की रूप भूल गयी श्रीरजरज वताना ॥१०१॥

११६ D प्र० । C। लिया । B मु० । C म । D यथास्त । B मिर ।
 BC स्पष्टार । वर ९० A प्रति में १ । ३ ।

१२० वर ९० ACD प्रति में न/। ३ ।

१२१ वर ९० ACD प्रति में न/। ३ ।

अंसो को चत्ता नहिँ जान ।

देव अमर ऋष नाग असुर नर रहत वदन कुमलान ।

ज्यौ जीतै वासी हियै द्रिड कर भूठी जग मन मान ।

श्रीब्रजराज कृपा ह्वै पूरन आतम ग्यान पिछान ॥१२०॥

राग

अति दुख नाहिँन जात कही ।

सलिता सोच सावन की बहै रही चित बिच जात ब्रह्मौ ।

परम सुजान परम जिय जीवन सरवस सग गयो ।

जानत ही कछु और ही मन और और भयो ।

श्रीब्रजराज चरन अबुज कौ इक अवलव रह्यौ ॥१२३॥

राग लाचारी गेडी ताल भूपताला

जाक दरबार भरियो तहा सुभट सब

देख कोदड मन भे अनत सोच है ।

एक रघुवीर को निरख भुज प्रबलता

जान लीनो धनुष तोडवायो चहै ।

जानकी धारि छव पेस अदपेस की

डार वरमाल गल राम नास्यो चहै ।

१२२ यह ५^{वा} ACD प्रति में नही है ।

१२३ यह ५^{वा} ACD प्रति में नही है ।

उठ गधुनाय वल साध आगे चले
 कोप कर अत तिह टूक करवा चहै ।
 बोल नछमन बह्यो देह भोकू दुवा
 है तनक वात याको कहा सोच ह ।
 लखे दुग्जन सत्रै युने दस सीस सर
 ध्यान उर आन दुग् मान हिय यूँ चहै ।
 हरष उछाह हर भगत आवत भया
 श्रीब्रजराज अपन मकट मोच है ॥१०४॥

ताल फुमरा

लाज मेरी गवियो रे प्रभू तुम ।
 अति अहकार भर्यो जिय म अति राम रोम विप्रियो ।
 धरम वाम श्री नाम तिहारा मा मन म मखियो ।
 श्रीब्रजराज गुना गिनती अब दाम दया दिगिया ॥१०५॥

ताल रत्नाला

ब्रज म आज वघाई बजै हैं ।
 यदुवन के हिय मात् प्रदया ह दुष्ट बन कुन देख भजै हैं ।

- १२४ ॥ F । C धरनरा । C माँ शानो । C ताइवाया । B चहै । B ग्य ना ।
 B धरपग । B धरमान । B ऊँ । C गाय । C ति । B हैं । C ट ।
 C दुवा । B वाग । B ह । B लन । B मर । C मिर । B ऊँ । B हैं ।
 B उच्छाह । B धरराज । C धरने । B २ । यद् व AD प्रति में नही है ।
- १२५ (रागिया) B पति । C राम राम । C ध । B गविया । C बुराज ।
 B गिया । म ५ AD प्रति में नही है ।

चदमुखी गोपी मिलि निकसी पेखि सची हिय मान लज है ।

श्रीब्रजराज जनम तव लीनी सबके मदिर साज सज है ॥१२६॥

ताल

कम्ना मेरी नाथ मुनोगे दुष्ट मेह (मोह ?) कू जाप हनोगे ।

अब तो तीरथ को हू गरजी मेरे पातिग नाहि गिनोगे ।

तेरो दास कहाऊ रघुवर तोह भनावै सोहि बनोगे ।

श्रीब्रजराज भरोमे तेरे अब ता साहक आप बनोगे ॥१२७॥

ताल तलदी तिताली

रावले चरनन हू का चैरा ॥टेक॥

पाप पुय हिय म तुम राखत ये हू दास त मेगे ।

म हूँ मूढ कळू नहिँ लायक उर मे अत अपार प्रवेरा ।

श्रीब्रजराज विना नहिँ काऊ एक भरामो तरो ॥१२८॥

मोहन मन मोह लिया मुमकाय ॥टेक॥

हेरत हू कित गया री सजनी या विन चित उलचाय ।

१२६ B ब्रज । C बने । O मीन । B ह । C भाया । B ह । C मित । B पल ।
B मान । O तजी । C बृजराज । C सजा । B ह । यह पं AD प्रति म
न्या है ।

१२७ B कटाव । B भनाव । B भनोगे । C बृजराज । C तोरै । B बनौ ।
यह पं AD प्रति में नहा है ।

१२८ B पुन्य । B कटून नदि । C बृजराज । यह पं AD प्रति में नही है ।

देखत डगर कहुँ की मे अब निवसत यो हू आय ।
 मोरमुकुट कछनी यो काछे मा मन रूप लुभाय ।
 नगर निठोर पीतम सा तू इतनी कहियो जाय ।
 श्रीप्रजराज लिख्यो तुम रात्रे अत आनद सरसाय ॥१२९॥

आवत रगभीनी री ह री वो गिरधर ।
 नेह सा नेह लगाय स्यावर प्रेम मत्र पढ दीनों ।
 निमदिन प्राण रहै तल्पत ही काहा जानू काहा कीनों ।
 विरह जाल उर लाग रही री विन दरसन तन छीना ।
 श्रीप्रजराज मुजान सुधानिधि काटिक काम अधीनी ॥१३०॥

प्यारी म्याम जहीर अनायो री ।
 प्रमीवट जमुना तट ठपर सेन कर प्रलवीर ।
 अत व्याकुल जिय रहत निरख छव सह्यो हु न जात संगीर ।
 श्रीप्रजराज मिले प्रिन मजनी उठ रहि उर मे पीर ॥१३१॥

राज कई माना माग पीतम प्यारा ।
 दरम प्रिना तल्पन निग प्रीने थोडी तो पीर वीर प्रिचारो ।

१२९ B हू । B विन । B कहुँ । C या हू । B मुकुट । C या । B काछे ।
 B निठारे । B इतनी । C प्रजराज । B रात्रे । C लिख्यो । B पी है ।

१३० B घन । C हरि । C घना । B री । C मना । B विरह । B ऊर ।
 C घना । C प्रजराज । C घना । B वर । C लिख्यो । B पी है ।

१३१ B अनाय । B टप । C प्रजराज । B ऊर । B प । C लिख्यो । B पी है ।

पल पल बरस बराबर निकसे अब तो दिन मत टारो ।
श्रीब्रजराज कृपा कर गिरधर चाह करै न पधारो ॥१३२॥

हो नैना कजरारे टरत न टारे ॥
खजन कज चकोर मीन से जानेक वान दुधारे ।
नेक हि चितवन मे रगभीनी मोहन बस कर डारे ।
श्रीब्रजराज सदा मन ही मे लागत प्रान सौं प्यारे ॥१३३॥

हू री म कहा कसै री आली मग रोकयो बलवीर ।
मोरपँखा पट पीत सुहावत अदभुत चरच्यो अग पटीर ।
दध ढरकाव अग (हु) लगावै नेक न जानत पीर ।
श्रीब्रजराज छल छल कर कर छिन हू धरत न धीर ॥१३४॥

छाने कोठे जावो राज छाने कोठे जावो
जावा ब्रजराज अत सुख पावा राज ॥

१३२ B थोडि । C विचार । C ब्रजराज । B करैने । B पधारो । यह पद AD प्रति मे नही है ।

१३३ C हो बना कजरार । B दुघारें । B वरें । C ब्रजराज । C ता । यह पद AD प्रति म नही है ।

१३४ C कह री । B बलवीर । C था । B टरकाव । B लगारें । B नेक । C ब्रजराज । यह पद AD प्रति म नही है ।

धे तो बहो छो म्हे तो थाका ही छा

अव क्यू वात छिपावो राज ।

जिण तिय के रस मे निमि जाग्या

तिण रे अग निपटावो राज ॥१३५॥

राग विभास ताल जलदी तेतालौ

भार हि आवन पिय इह कीनो ।

पलकन लग्यो पीक बजरा की

लसे लीक दलमली वनमाल अग रग भीनो ।

लटपट पच खुले डग मग पग चले

पर्यो है अवर निपट नवीनो ।

जाके रहे निम जा वाहि की उडभाग

ले रस बजराज अत मुग दीनो ॥१३६॥

भार हि भान भने वनि आये ।

अधरन पीक (ली) लीक तन वान कट्टु ठीक

तुल रह नन परम मुग पाये ।

प्रिन गुन माल माल है उपर वान एमी चडभाग छलक छवाये ।

१३५ ॥ तत्र एतेन वाक्ये आषा । C बृजराज । एतेन एते AD प्रति म नदी है ।

१३६ B ई है । C नो । C २४ । C वनमाल । एतेन एते । B ह ।

॥ बृजराज । एतेन एते AD प्रति म नदी है ।

पलट धरे भूपन अग अग पर सोभा अदभुत वरनि न जाये ।
श्रीब्रजराज नपा कर प्रीतम दे पीतवर लीला वर लाये ॥१३७॥

राग ललित ताल इकताला

नैना नीद भरी प्यारे आय क्यू अव ।
खुल रहे पेच अनोखे लागत ऐसी कहा यू करी
भोर भये तुम वात वनावो अव तो कहा की नरी ।
श्रीब्रजराज ऐसे तुम कपटी चित मन कोन हरी ॥१३८॥

ताल चौताला

री तेरे नना प्यारे री रावे री अत कजरारे ।
गजन मीन चकोर कहाये ऐसे निपट अनयारे ।
भौंह चाप असे ह अदभुत लोयन वान दुवारे ।
श्रीब्रजराज लुभाने री आली तेरो यो रूप निहारे ॥१३९॥

राग जोगिया आसावरी ताल जल्दी तेताली

कहा जाने पर पीर वा अत ही बिसासी ।
नेह रीत म कछुव न जानें आखर जात अहीर ।

१३७ C छलक । C वरनि । B ब्रजराज । B पीतम । यह पद AD प्रति म
नहा है ।

१३८ B नरी । B क्यू । C म्युकरा । C भइ । C ब्रजराज । B ए () म कपटी ।
B वा । यह पद AD प्रति मे न । है ।

१३९ C भा । B वा । C ऐसे । C ब्रजराज । B यो । यह पद AD प्रति म
नहा है ।

मिर पर काकर धेन चरावे तट जमुना की तीर ।

श्रीप्रजराज मार कर मौक् रह कोन के नीर ॥१४०॥

राग परभाती ताल धीमा तिताली

हरी का नाम जप तू र कार दुख टार देऊ र ।

मिनर दह पाव व मन तू चतुरभुज नाथ कू भज तू ।

यह मसार वाचा ह प्रभू को नाम माचा है ।

ले ह तू नाथ वा मरना ममभ ले एव दिन मरना ।

श्रीप्रजराज मू विनती गिन मत पाप की गिनती ।

माकू ग्रभवाम म टारा विघ की बात वा पारा ॥१४१॥

मान प्यागी लाग ह गये रानी ।

दष्टी चितवन मागत मन की वाकें जिय की जानी ।

भेरा प्रात रहन वा मन म ज्यों दूध में पानी ।

श्रीप्रजराज करजे लागी वागी या गनवानी ॥१४२॥

१४० B वा । C विमामा । I नेर । B जाने । B बरावें । C बुजराज । यह प
AD प्रति म नती है ।

१४१ C नाम मय गुर । B पाव व " न तु । I ममार वा ह । B माचा ।
C म है । C वि । C बुजराज । B वना । I मरना । B मरना ।
C पनवाप म टारा । B वा । B पारी । म प A D प्रति म नती है ।

१४२ B रानी । C मन वा । C वाके । B जाना । C प्रात । C वा । C बुजराज ।
I कर । C राधाना । यह प A D प्रति म नती है ।

हाँ राधे रानी जी री चाल सुहानी ।

चलत गयद मानी भद वहतो छव निरखत मुरभानी ।

ऐसो रूप अनोखो है अत रत हू ते सरसानी ।

श्रीव्रजराज सुनो तुम अब कब बोली इमरत वानी ॥१४३॥

हो राधे रानी जी थे बोलो क्यों ने ।

केसी चूक परी मो तन मे नेकहु नेह करो ने ।

अत अपराध भरयो तोही तुम उर मे प्रीत चहो न ।

हाथ जोड मागू मे रग सो महर कर वगसो ने ।

श्रीव्रजराज पिवाय अवर रस दे गलवाह मिलो ने ॥१४४॥

ह री मन माह्यो री दीन वजाय ।

जब त तान सुनी मो स्रवनन तब त जिय अकुलाय ।

धीर समीर तीर जमुना की वुन आवत वह ठाय ।

चाह बढी निरखन की हली चित हित अत अथकाय ।

करि टाना दीनो कहा मोप श्रीव्रजराज सुहाय ॥१४५॥

१४३ B रानि । B वह छव । C सरसानी । B तु भव । C बोनी ।
यह पं AD प्रति म नहीं है ।

१४४ B राधे नीजी । B क्या । B मो म । C कराने । B बोहा ।
B हाथ जाण मा म । B व्रजराज ए अवर । C मिलान । यह
पद AD प्रति म नहीं है ।

१४५ B ह न माह्यो । B सुनी वनन । B समार जमुना ।
C वनीनि खन । अ निम पति B म नहीं है । यं पं AD प्रति म
नहीं है ।

म्हारी बैरण माम्जी नै कई बस कीनी ।
 आग लगा दिल घायन कीना मन पढ कछु दीनी ।
 श्रीमजराज अनोखा प्यारो अधर मुघा रस पीनी ॥१४६॥

ताल धीमा तिताला

मोहन या बसी बजावै प्यारो सुन सुन जिय अकुलावै ।
 तीखी तान कलेजे लागत मारत फेर जोबावै ।
 विरहन दूर सुन अत व्याकुल दरस किये सुख पावै ।
 राधे उर बसियो रग रमियो छवहू प मुग्धावै ।
 श्रीमजराज अनोपे ऊपर लख लख रूप लुभावै ॥१४७॥

१४६ B मारति । C जानो । C द ना । C बूजघर । C पीना । यह पं AD प्रति
 म नही है ।

१४७ B बजावै । C प्यारा । C तान । B बाबावै । C पावै । B रमिया । यह पं
 AD प्रति म नही है ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट सख्या २

उत्सवपुर क जगन्हररूपेण महादेव क मंदिर की प्रशस्ति

उत्सवगोष्ठतपावतोऽप्यमुषाम्वात्तानुरक्त तिनो
 यागायामवगावद पुनरिता घ्यातैकतानस्मिति ।
 श्रीगन्नाभयायितात्मवदयच्छ गारवैरापया—
 नैकप्रस्थितिमत्पण शुचिमनो दानामिन पातु व ॥१॥
 वनेस्मिन्नुदकीर्तिमत्पुत्रमवत्सप्रामसिहस्य य
 शीगागाचमराजमन्वमलो श्रीमीममिहो नृप ।
 सोदयमृनिभू कनामु च त्रिष्टुडुह सुहृत्सहृदा
 त्दामावरपावनाय च मया त्तु स्वयम् स्वमु ॥२॥
 तस्य दमावलयकविधुनयसा नोत्सवदीक्षागुह
 श्रीमाय तु युवानमिहृपतिर्दा यद्रगप्या जमी ।
 प्राप्सोऽप्यसाति त्साप्यनरपे पावात्यनुकरय
 नदानाचमनारमानगञ्जे ममानिता गीञ्जरे ॥३॥
 तस्यशास्त्रिपतगुणा कविवरे मवप्यत नृधिते—
 नाकेनाकिञ्चनेष्वाऽहिमवेर्णोऽेरमगाभा ।
 सोऽप्योऽप्य विवकविक्रमइत सतापिनमानुता
 वाट्मपुष्पमृतानिदिवितजनरवतति शशीपठ ॥४॥

वाघेलीति च देवडीति च शुभे पाणिगृहीते उभे
 पूजामै च हरेहरस्य विधिना पत्यो पृथक् प्रीतये ।
 वासाथ च तयोह् दामिमतयोर्वेकु ठ्वैलासयो
 प्रासादो रचयाचकार भविकी यो भूपितोच्छ्रध्वजो ॥१५॥

उत्सग त्वनिवत्य सोपि च तथा प्रासादयोभू पति-
 मत्वा स्वात्मवियोगदु स्थमनसो देवो समापेदिवान् ।
 मध्येब्द हि तदशसभवतया तत्रैव सात्म्य लय
 यो यस्याश उत भजेत्स इति यद्वागाह या नैगमी ॥१६॥

तद्राज्मे सरदारसिहनृधवस्त्रस्तारिवगव्रज
 सद्धमन्नतपालनैकनिपुणो भ्रूक्षेपविभ्यज्जन ।
 यस्याशा प्रतिलभ्य मत्यनिवहा शुद्धस्वधर्मेरता—
 स्तेनापि स्ववचोतिनिकृतिकृता यात्रा कृता त्रिस्थली ॥१७॥

तस्मादस्ति सुरूपसिंह इतिय श्रीराजराजेश्वर
 क्षात्या भूरिव सत्यकमणि बलि सूय प्रतापोदये ।
 गाभीर्यैर्धरिव प्रजावनमनुश्चद्रो जनाह्लादने
 स्वाशैरेव युवानसिंह इव स श्रीधीदयाकीर्त्तिभि ॥१८॥

शैघ्र याद्गत खलु युवा हि युवानसिंह
 स्वाम्यापयापगमसिद्धमनोरथोसौ ।
 तस्मात्स एव पुनरत्र सुरूपसिंह—
 नाम्ना महेशभवने ह्यकरोत्प्रतिष्ठा ॥१९॥

मासे माघवसन्कथ धवले पक्षे च दृष्टमातिथी
 वारे दवगुरो ग्रहेश्च मिथुने लग्न गुभैर्वीक्षित ।
 क्षाणागाक्हिमागुसवति नृप सात पुर प्रोत्सुक
 प्रामादे वरदोरक त्रिज्वरैरप्रे रयत्सादर ॥२०॥

त्रियायुग्गुवानस्वप्पश्वरग
स्व । ॥ ।
उमाभूयिताक कृपापागदृष्टि
स । पा -

घात् ॥११॥

वृद्धवल्कृतस्थितिरत्र
अन्वचाप्यभिमत वनुराणा ।
विष्णुनाम इति तत्कथिताष्वा
प्राप्तवामवत्स्वगुमाच्य ॥१२॥
पूजाय हि समर्पिता नृपति*



यद् अस्मिन् कुर्यात् प्रीत्य हती १ ।

परिशिष्ट सख्या २

उदयपुर के जगतशिरोमणि के मंदिर की प्रशस्ति

श्रीगणेशाय नम । श्रीमदहाय्यव्ययवराय नम । श्रीकृष्णाय नम ॥

कार्निदीतटकु जगु जदलिभत्सकुल्लनीपावली—

द्वा स्थानकसुक्लवाक्षितसुधापूर्णोदुहास्यानन ।

तियवप्रक्षणराधिकाधरसुधाम या पिबन्तिहुव—

स्ताबूलस्य वितीपर्चि वतमिपात्कृष्ण स नोद्भावतात् ॥१॥

वृ धारण्यनिकु जबद्धवमतिप्राणप्रियाणा हठा—

मुष्टीकृत्य मनासि निहृत इमा अ गुष्ठमादायन् ।

वामनाद्धवकरेण ता पुनरसौ नाम्नाह्वत्युमुख

साय श्रीगिरिधारिनामविदित पायात्स देवाश्रितात् ॥२॥

गो वर्णिगु णगणितो गोपगुणालागनागसस्तिष्ट ।

गोकुलगारसगाली गाविदा गागणेशाऽमात् ॥३॥

बप्पावधाय गुणगौरवाढय

वक्तु वभूवाहमल न वाग्भि ।

तयापि वक्ष्येस्य गुणैगुर स्या

जाता यथा वामनदडवण ॥४॥

अथ आत्रगप्रायरायदबालदानगृह्णानां राक्षारात्रिद्विषधि
वगवर्णनं तथाप्यनुवाचनाभ्यां तां महाजगत्सिंहानुवर्षेण —

दाने प्रौढागिराजप्रथिवपुत्रजयप्राप्तवित्तस्य यस्य
चित्तस्फीनाप्रतर्षो विविधमार्गगणारखणकूटप्रकीण ।
स्वर्णाद्रे कल्पनाया ध्वमुददुहतर सत्य मागणीषा
दृष्टवा ह्यमादमराणि स्वमुग्रमसमभूच्छीजगत्सिंहभूप ॥५॥

गत्वा धामचतुष्टय मुनिमल नाथा विलोकादरा—
दमकाना पुत्रायदानचतुरा प्राच्यादिभिश्च क्रमात् ।
दाना ये भजनस्य नेति मुक्तेने क्षुभेतर च गित
मत्प्रासादमता व्यधाज्जगति तप्राथपु रायस्य य ॥६॥

तस्माद्धि राजसिंहाभूव कुर्यात्तत्त नृप ।
नोकापय विलोकासिंघ या चगुडात्रमागर ॥७॥

हृत्वा म्लच्छधर्यविना प्रथमज्ञा पित्राग्निभिर्नात्मना
कथा मीप्यकजासिधात्मवलवाप कृष्णदुर्गात्पूर ।
षेद्याद्नाम्नुत्प्राज्ञ माच्युत उरयात्मैककानादिनी
पय प्रेष्य र । हरश्चजनमुखा न्नायमावय च ॥ ११ ॥

पुत्रस्योगुप्यातनिवृत्तिरुत पृष्टेऽग्निं प्रोत्ति
धारानोदमकातरण मनसा राणा तथा निदिचयम् ।
ऊग्नावैनिजजाविनप्नुभिश्च यश्च विषेपानिता
शुटा न करणाय त निरयिणो राजा नु नाक गत ॥१२॥

यो सायोगजय कृत्स्ननुभयम्पारतागपशो
विशु विष्णुगणय यवनपरिमिन्त्साचैनात्मसो ।
स्वागतमादायनावि विनिभूति य स्या पानयामान दिग्गो
प्रागश्च भूदृष्टे विनदपुत्रश्च गार्थिनि प्रालम्ब ॥१३॥

तस्माद्भूदरिवनीदहनातिदाव

सद्धमरक्षणविधावतुलप्रभाव ।

य प्राप्य सद्धवमिला समवाप्तकामा

राजवती स्म जनिता जयसिंहनामा ॥११॥

शौर्योदाय्यगुणावितप्रविलसद्भासासुधासारभृ—

द्येनाकारि हसञ्जल स्वमधुरैरधि यश सागर ।

धीरा य यदुशति तत्त्वगणने निद्वेहवस्वादिति

नाकाश किमुदेहवानिव चलच्छायेदुतारागण ॥१२॥

प्रोच्च चच्चडकाडप्रकरकरवलच्छस्त्रगतप्रहार—

श्रास ग्रास न सेहे दिशि दिशि सभय नेत्रतारा क्षिपती ।

ज यारण्ये मृगोत्रोमन्यवनपते कृष्णसारस्य सेना

तारा आजम्भयप्रबलपतिममाकृष्टितु धस्य यस्य ॥१३॥

तस्यागज मामरसिंहवीरो

वीरैकसूरस्मिमद विधत्त ।

यस्य प्रसूरासुरित्य निद्रा

देवा समाप्ते परिसदिहाना ॥१४॥

महानसमचीकरद्वरगिवप्रसन्नामर—

विलासमपि निष्कुटावितमसौ स्वसौरयाश्रय ।

तप सुपरितोषिताविव भवान्पूर्णेश्वरो

सम व विगदालय ददतुरेव कैलासक ॥१५॥

सद्ग्रामग्रामदानुनयविनयवतो विश्वविख्यातकीर्त्त—

स्नस्मात्सग्रामसिंहप्रभवितुरवनी म्लेच्छसपा महेभा ।

हतु भाग न शेकुह्य मरहरिहृतावासभोज्यप्रभोक्तु

शय्या भूभृच्छगाला यमकबुबुदया ग्रामसिंह कुतोये ॥१६॥

देवाना हि परस्पर विवदता विष्ण्वीशमप्तावणा

का गच्छेदिति पूर्वमेव त्रिखिलैरिष्टे सहभैरपि ।

गतव्य नृपतृष्टुह सममते स्थूलामहूर्पूर्वका

गात्वेदा समचीकलपत्न गतये, यस्त्रिप्रनोली गुमा ॥१७॥

तनाऽमवउन्नगत्सहा जगन्नाथालय पृन ।

जीर्णोद्धारकृत पित्रा दिष्टु स्ववृत्त पुरा ॥१८॥

त्रैववपति चास्तबुद्धिविमवे धायत्रिपादस्थित

मृषु गच्छति विष्टये सितरुची पापमुधासजाने ।

उद्घोद्घाटितनोपकीपवितरुमद्रयमज्जीवने

काल कालमपाकरोत्स विषदप्रामादकमच्छनात् ॥१९॥

वनकमपि नो गत मम पुनह्य नताटना—

दिति द्विजपतिमल वसति माष्टुमिच्छञ्जन ।

फलिद्विजनिपेविता नृनसुचित्रगालो पुन

सुमिन्नमदनश्च यत्नजगनिवासच्छलान् ॥२०॥

स्वीय शोभागिनेय पितृजयनगराद्भागिन भागिनेय

माधासिहृ नृमिहस्पुरदतुलरपा दत्तनधमीकटाश ।

प्रह्लाद पगभनाइ ययितगतगुणालनशामुद्राममुद्रो

दवर्षात्साम्भविचद्विबुधजननृत पिभ्यराज्यासने य ॥२१॥

तस्मात्प्रतापसिंहो हरिमिहा द्वो सुतो तयामघ्न ।

राजनि राग्य ज्वल्य पुत्राभूदाजमिहो न ॥२२॥

स्वर्गे वाग शृनवति पितरि जगत्या न पावनेधिशृन ।

तस्मिन्नपि पितृमवा प्राप्ते राजा रिमिहो नृत् ॥२३॥

नयने नयत शोली राजमिहस्य नाकिन ।

भात्री मय्याप्यपुत्रस्य हरिसिहा नृत् ॥२४॥

कृत्वा सद्गण पुर सपरित स्त्रीयैकरक्षाकर
 सन्ध्यत्पुरमागधप्रबलभृद्दुर्म्मालजिस्तिधिय ।
 लक्ष्मीश सबलश्च सत्प्रहृणो या जेजयीद्दुज्जय
 तस्यासीच्छमरुहि कालयवन क्रीडास्पद सगरे ॥२५॥

कि कालयालबाल किमुन मरणकृत्कालजि हाग्रमुग्र
 कि शभोभालिनेत्रज्वलदलनशिखाज्वालमालासमूह ।
 कि नुष्टयज्जपातोज्जनितघनरुचि कल्पमिधोस्तरगो
 ज ये जये यलाकि त्रिदशपरिवृढयत्करे मडलाग्र ॥२६॥

स्वामिद्राहपरायणेश्च लवणोदोद चक्रेद्वैपरै—
 रौन्नावै सह कृत्निमाकृतिनृप स्वाशाशयाऽस्मि सति ।
 घासात्मा किल कपु कैरिव नर क्षेत्रोच्चनीढे घृत
 स्फज्जत्कु भलमेरुदुगवसति श्रीमेदपाटावनी ॥२७॥

गित्वा कृत्निमराजपक्षतिवृता दिड मासमायोध्य य
 क्रुद्ध यमालजिता पटीलविभुना ज यत्रय योगिभि ।
 म्लेच्छाट्टापलपठ्वत च शमरोग्रामे च गगारके
 बु द्या वीरगति गत कनिपर्यै वर्णेहि भुक्त्वा मयी ॥२८॥

हम्मीरसिहोप्यथ भीमसिहो
 बभूवतुस्तस्य सुतो सुवारो ।
 श्रीरामचद्रस्य कुशो लवश्च
 तथकराडासतुरथ चौभो ॥२९॥

श्रापच गरद क्षोणी भुक्त्वा भूपे दिवगते
 हम्मीरवीरे च ततो भीमसिहो भवन्तुप ॥३०॥

श्रीमानभीमहिमदस्युविनाशभास्व—

दाम्बत्प्रताप उरुबुद्धिविगालभाल ।

व्याहारगत्यमनकीरमरालबाल

स्फूर्ज महाजगति रूपतिभीमसिंह ॥३१॥

स्पर्शाप्रतिम प्रियामु रमिक कामा वपुष्मानिव

दानेनाज्जितवणमोजमहिमा स्वैस्वय आलङ्कल ।

भूर्भुक्ता बहुवत्सर गुणवता जुष्टा पुमयाम्प्रय

प्राप्त येन मुन पत्र च तत्रियद्रक्त क ईष्ट जन ॥३२॥

मदचाप्रहीत्वु भलमरदुग

वेपम्यतोचेष्टतसत्तु रू ग ।

वभज दुष्टदिमराजभीति

क्षत्रस्यचचामिव वै वरद ॥३३॥

तस्यागजातो हि युवानमिहो

यस्याग्र उभोपि युवानसिंह ।

दानेन को या च गुणैश्च यन

सोमगभक्त्वा न समोपि वापि ॥३४॥

वांन कलिकलाकुतूहवरत क्षाणोद्रकयावृत्

गस्थाम्पैरग्रहिष्टता परिजने समविनानुद्धत ।

नानाशत्रुनाश्रिता गुप्ततो सिद्धनुतो धाधित

काप्यामादि युवानमिहृपति श्रीमा गुणोपावृत् ॥३५॥

पुत्र स्माद्य श्रममात्वरितर समोचदमावृत्

इयानाश्च गया व्यदन नयना पीशाष्टनामैवृत्ताम् ।

यनापावरमाममजाप्यसहृष्टिडोपि विष्णोः पद

श्रीमगमगानरिक्मवृता जीरोष उद्धारित ॥३६॥

परिदूत उष्ट उद्धता

शिरिदगददपवत मरम वारदा ।

अनुगतनृगणस्य यस्य कस्य

स इति बभूव युवानसिहभूप ॥३७॥

ब्रह्माडाधिकृतास्त्रयोपि विबुधा ब्रह्मेशनारायणा—

स्तेषा तुष्टिकृतेः क्रमात्क्रमयथा धमायकामाप्तये ।

यात्रा येन हि नक्षशा वितरता स्वकारिता त्रिस्यली

यायोध्यानयनात्पुनस्तनुभृता मोक्षोपि हस्तेष्वित ॥३८॥

तत्स्थाने शरदारसिंह इति यो राजा प्रजा रजयत्

यद्दृष्टयाप्तसमग्रदुष्टजनतागश्वत्स्वधम्मदिर ।

बुद्धिर्वाप्यथ हानिरेव भवनाद्य स्वोक्तनिर्वाहक

सद्बुद्धिर्नितवाक्स्वधम्मनिरतश्चाम तथा नापर ॥३९॥

स चापि यात्रा पितृमुक्तिहेतु

युवानसिहाग्रवृत्तप्रतिष ।

गथाभवा नाप्तभवामकार्षी—

नवाप्तराज्योपि वचोतिदाढर्मात् ॥४०॥

तद्राज्येस्ति सुरुर्षासहनृपनिर्विख्यातकीर्तिगुणे—

यस्यै दाशरथिमनुह्य नुभवे पाथ प्रजापालने ।

दाने चाधिरथिवमुच्य मुच्य धैर्ये बलिभूक्षमो

वनेद्यावधि कोपि मन सदृशो भावी न भक्तो नृप ॥४१॥

इद्र किम्ब्वति चारणैश्च विद्युधैश्च तामणि कामद

कि मर्त्ये किमुक्त्वपवृक्ष इति कि कणश्च भट्टैरिति ।

भोज सत्कविभि विमेवमखिलै श्रीमत्सुरुषा नृपो

हृष्ट सहृदि वन वन समय दानस्य नोत्प्रेक्षित ॥४२॥

रामाय जितदूषण मुमरत सन्नदमणाप्तोनमन्

शत्रुघ्नदवतुरात्ममूर्तिरजित श्रीचित्रकूटस्थिति ।

नून सज्जनकारमजाभिरमितो बद्धप्रकाष्ठागद

वीरान्याप्नवृतावनो विषयत रामायणैकाश्रय ॥४३॥

आजानेयममो विद्याहमनुन वीनि विनीत वर—

मारुह्यात्समुन्नीगणप्रसरणस्पदाकर मुदरम् ।

आचय यजतीति यद्युपवन कृत्वाश्ववारी तदा

सायानग इति प्रतिस्मृतिमुव सनेरत विनर ॥४४॥

मद्य त्याजयनि प्रिय क्षनुमम स्यात्तस्य पुण्य श्रुता—

बुक्त तन्मितिरीगिणा मनुवृषाषान नृणा त्याजित ।

धीराजेंद्रमुष्पमिहविभुना नेवन्नूना चया—

दवेन्द्रम्नु गत्रनुम्नत्रिव मयानास्त्यनतक्रनु ॥४५॥

कृत च धनेव कृत न धन

धनापह दुम्पयजमनदेतत् ।

शृणम्य मद्यम्य च भोगण पुरा

येस्वरुत मुक्तिमव तपा ॥४६॥

प्रतिगा पूव या नरपतियुवानेन हि कृता

मया चचारिगच्छरदुपरिना मध्यपयम ।

न चानाटत्रिगरपरिमिततामु मयवगा—

लृता पूणा धन गितिपतिवरणाद्यृनिना ॥४७॥

मय द्रुमानसिहकारिगदकस्तयप्रमंगोपक्रम

बापनाति युवानमिहृवने राणी समाजापरा

वीनामीव पुरदग्य मुमगा गनीभवानोव या ।

चद्रस्यव च रोहिणी रतिरिव श्रीममयस्यास्य वा

अत्य त हृदयगमा सुचतुरा प्रीत्यास्पद साभवत् ॥४८॥

रीमाराडजयसिंहदेववपुस्दभूता कुमाराश्वरो

राज्ञोढा गुणशीलरूपसुवय सौभाग्यतुल्या यत ।

सीता किं रघुनायकस्य यदुभृत्कृष्णस्य किं हविमणी

विख्याता पनिदेवता मधुरवावसतापितस्वप्रिया ॥४९॥

आवाल्यात्परिचर्यिका कृतवना गोपालनाम्नो हर

शुद्धाचारपरातिवैष्णवजना भक्त यन्ननिष्ठा मदा ।

रूप्यानिमित्तसूपकूप्यतितउ पित्राप्तस भवा

गीताभागवतादिपाठन उर काल निनायानि ॥५०॥

इत्थमच्युतसमर्पित्ता

पानवैष्णवनुर्गर्पित्ता ।

आससाद हरिपादमभोता

तत्र नोत्थक्फवातकपित्ता ॥५१॥

नात्वेत्थ धरणिधरेद्र उतमाता—

मेतस्या गतिमतिविस्मय प्रपन्न ।

तत्याज प्रभृति तत कति प्रियस्य

वैराग्यात्तनुविपये कृतप्रतिप ॥५२॥

वाघेत्या त्ववसानभानसमय वित्त स्वपार्श्वेस्थित

तत्सव हृद्य पिन च कथित राज्ञो मखाग्ने स्फुट ।

राजा तन मुवानसिंह इति योज्जु वातिहृष्य मना

प्रामाण्य रचयाचकार विधिवच्छित्तीश्वरै गोभन ॥५३॥

प्रासाद यमनत्नदत्तविभवमज्जूर्गै शिल्पिभि
 गीघ्र कारयतो महा भवविधामागाम्यमानस्य मत् ।
 स्वीयायु शरणभगुर च विदुष मापुज्यसिद्धिहरे—
 जिताप्राप्तमनारथय नृपतर्देवात्पदाब्जाश्रमे ॥५४॥

तत्पदवाच्छरदारसिंहनृपनिमत्न तथैवाकरोत्
 कालानाप्तविचारित पदमयाच्छीर्षनिगस्य म ।
 तत्पदवाञ्च मुष्पसिंहपृथिवीपान स्वमायाद्भया—
 त्प्रासादे वनदा दधार मतिमासपूजनापात्रिने ॥५५॥

यथा गगाप्राप्त्या श्रहह कृतवतो बहु तपा—
 गुमन्ताद्या भूषास्त्रज्ञि किमयाता मुरसरित् ।
 तथा भागीरथ्य जगदधर सच्यविदित
 तथैव पृष्य महन्नि मुष्पसिद्धिमृत ॥५६॥

पूष्व श्रीचित्रकूटे शिनिविदितगिरा उष्पगोदवय—
 धालीभ मदपाटद्विपदमहधरादुगत भूतभूमौ ।
 मोराराणागिरम्यस्तनु नृपजर्गा महपुष्टयध्वरीत्या
 गार्धे स्व स्यापितासापुत्र्यपुरवर मन्दिरे स्वणट्ट मे ॥५७॥

सागोरद्विजमवन रतुदिन तन्नागभागी ध्यघात्
 मेवाप्रे मनदाप्रवाहमतना त्यागामन्वस्वम ।
 प्रासात् स महन्निवा निजसगोनामप्रभूतोत्य
 प्राणि प्राप जन्धिद्यगमणिरम कान च कचित्मुन ॥५८॥

मन्द्दै च पिष्टायशिलात्यै
 स्वमातृगुणिप्रविशारणीय ।
 उपद्रवम्मादि मात्तुत म—
 मन्वामिनाशय रशोवतिष्ठत ॥५९॥

सुहृत्सिंहोपि निजैकदेव

पूर्व जगत्सिंहकृतप्रतिष्ठ ।

युवानसिंहाभिमत विचाय

समानयत्त पुरुषोत्तम स ॥६०॥

श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभ भवतु ॥

श्रीगोवद्ध नोद्धरणधीरो जयति ॥

श्रीकृष्णाय नम ॥

ॐ नम । अथ प्रथमपट्टिकाशेषमाप्यते ॥

श्रावल्लभावयजनि प्रथितासौ

श्रीगोकुलासव इति प्रकटास्म ।

श्रीपुष्टिमागपुष्टयोत्तमप्रतिष्ठा

स स्वमागविधिना यथाकरोत् ॥६१॥

गोष्ठीशालकृतावटक इति यो गोपालकृष्ण सुधो-

मट्ट सवगुणैकदक्ष उरुधोस्तैलगजाति स्वय ।

नाथद्वारत आदरेण नृपति स्वानाय्य य सोथ य-

च्छीर्षेऽघाद्धि जगच्छिरोमणिममु पुष्ट्यध्वसेवाकृत ॥६२॥

सवत्यब्धिसनदभू १६०४ परिमित सूर्ये वृषे पूषणि

लवत्युत्तरगोलक शुभकरे वैशाखमासे सित ।

पथे द्वादशिसत्तियो रविपुत चद्रे च क यास्थिते

लग्ने सिंहगुभेभिते नृपतिना दवप्रतिष्ठा कृता ॥६३॥

श्रीवृद्धदवलकृतस्थितिरेव वर्णा

श्रीविष्णुदास इति नाम महातपस्वी ।

गायत्र्युपासनपुरस्चरणैकरुद्रा

वाङ्मातुरीजितसमग्रमुघासमुद्र ॥६४॥

नित्य सुरूपनृपसद्वितकृच्छुमाथो

सद्वपकम्बविधिगात्रप्रविधानदश ।

सोत्रोपविन्य विधिपूर्वककम्ब तने

राजापि तद्रचनमेव हित च मेने ॥६५॥

अथ प्रासादवर्णन

गोराभाध्रनिभैरनेकगिखरेषु स्ता प्युभ्र निहै—

नानाशिवपतिदेवतागणकृतप्रत्ययवामैरिह ।

स्त्रीप्राये य इलातून शिववच सय ह्यसम्भर—

मय तन्नूयभावमगुरमना मर्क्षि तिष्ठामन ॥६६॥

चद्राचचदनत पुरदरगजाच्छ्रीचद्रनूबादपि

कनू रात्रिकामताद्भिदरदाकक्षाटिकाताम्भितात् ।

स्वच्छा यद्यप्यश्रीष एव निपुण प्रासादायच्छना—

शिखारघ्रियुगार्घहाटकघट शीषैयमानवन ॥६७॥

अथैवमतमनगजेरपिरथे पात्रानिर्गन्विना

मदह चनुरगिणीश्रवनया मत्पुण्यपुजा मट ।

प्रासादस्य मिदामहाभयचङ्गासोपमावापितु

स्वातन्त्रमितकृष्ण उद्धतभुज मानद उज्जभन ॥६८॥

दने कि किमु न्यप्यप्यग्भव गढे च कि प्रमत्ते

शुद्धैर्वा हिमममये किमपवादा पारानभिने ।

प्रासादाभ्यमनि चनेकरचन ननेव निर्मारितो

दृष्टवागानपि य मनागनिमिष सर्गिखर मानुषा ॥६९॥

पुटोह च जगच्छिरामणिरह चास्यैव दवोस्म्यह
 मा हित्वायमु मदिरे निजजग नाथ समास्थापयत् ।
 इत्यव भृशमोप्यया हरिरभूद्गुप्तोयमद्यावधि
 श्रीमद्भूपगुरुपतिहविभुना स्वस्थोयमध्यासत ॥७०॥

मम गृहमिदमुज्ज्वल तयोच्चै—
 रिति हरिरपि स मुखस्यमीश ।
 विवदिपुरिव माज्जनाय वाश्वे
 स्थियमपि रहितोऽयतो विभक्ति ॥७१॥

अथ प्रमगोशात्तपुच्छिपुत्पयोत्तमतवत्सरोत्सववणन ।

श्रीमद्वलभविद्वलप्रभुवरा रूप न दध्युभु वि
 सनार यदि चेत्तदा हि वसुधा शू येयमास्यास्यति ।
 श्रीमद्गोकुलराजनदनकृता लीलापि जीर्णातरा
 देवाना षव गतिस्तथा षव मुमति प्रीत्यु नतिर्घोपजे ॥७२॥

अथ ज मोत्सव

ज म यस्य महामना परिदत्तौ नदोपि दान मुदा
 गोपा य च विचिक्षुपु प्रमुदिता हैयगवीन मिय ।
 गोपीर्या व्रजतीविरजुरधिक नदालय दगने
 स श्रीकृष्ण उदारचित्रचरित पाया न इ द्रा गवा ॥७३॥

प्रस

श्राप्रेखपत्यक्वरे स्थित हरि
 प्रसाधित मातृपदमु दा भजे ।
 सुभ्रूतटे दृग्धरकृष्णविदु
 कठस्थित याघ्नत्वादिभूष ॥७४॥

वाललीला

मानचन्द्रमम लभेष भटिति क्रीडार्थमानाय मे
 नहि ह्य गुनिमुतिरपि विरदभूमा तुठदर्शयन् ।
 स्थालानिमित्तवारिप्रवितममु वीश्यातिहृष्यत्तनु—
 ह्रीहीत्युत्सुहसन्नतिप्रमुदिता मुग्धो हरि पातु न ॥७५॥

दानलीला

दान यौवनगविना प्रतिष्ठायाः संपित्वा हि नो
 रथं च किं न गारमन भरिता नून वयस्या इमा ।
 श्रुत्वा पशुपालजस्य वचन सन्नतितम्ब्राह्म मा
 लालन् गारम एव कीदृश इति प्राप्यस्त्वया सावतात् ॥७६॥

नेत्रमालनलीला

राधाया गिरमोरमप्रणमतो दान सग्रीना पुर
 सया मुद्रितचक्षुस्तिरयितु य वादिगीक स्वय ।
 चक्षुर्मौलनकनिपु प्रियमग्रीवु श्रेविगायेडित
 कृष्ण मभमता निवृज इव म स्वात तिलीनास्त्वय ॥७७॥

रामलीला

मानशब्धिस्ता वनो हरितनो वृद्धा हि वृ दावने
 रद्धश्वे वन उच्छ्रितचक्षुसया गापोभिरवायत ।
 किञ्चित् प्रमृतामिताद्धरिजनव्युद्धा निपोनावि ते—
 न स्पृष्टा नृविबन्धे श्रुतिरे नूयप्रियेपानिभि ॥७८॥

रामलीला

विभाषा विनमस्तुताकुलतो गोनसहविनी
 पत्रागरमुत्तमवप्रविनतासर्वांगान्तुह ।

घृत्वा रूपमनल्पक गिरिरिवाद्धे द्राय मधु नयन्
शाक पाकमदग्निवेदितमुर गावद्ध नगा वभौ ॥७६॥

दोलोत्सव

वासतीवरजातिघृथितदृणीमलीमतल्लीलता—
ध्रु जे मजुलवजुलै परिवृते दोलाभित श्रीहरिम् ।
आपृक्त पदवासकैदयितया सिक्त तथा रेचकै
पयत्यत्र सखीमिहस्मिमतम्रुव भाग्यै सनाथानर ॥८०॥

रथयात्रा

सुग्रीवादिभिरन्वितं हयवरै सत्स्तभचक्र रथ—
मारुह्य प्रविसत्वर बहुतर सत्त्वुक्कोष्णीपधृक ।
याति श्रीवृषभानुमदिरमसौ प्राणप्रियाहृतये
गापाला मणिमौक्तिकाभरणयुक्त शृ गारधृङ् नोवतु ॥८१॥

हिदोलोत्सव

हिदोले हि विशाखया ललितया पार्श्वद्वयादोलितौ
वर्षाया नभसीडयरत्नखचित श्रीमत्किङ्गारी मुदा ।
राधा वाप्यय कृष्ण उद्धतवपु शृ गारकी दपती
नानाभ्राक्तनडिद्धनाविव महाभाग्यैरिह प्रेक्षितौ ॥८२॥

अष्टदशानानि

आदौ मगलदग्नि तदनु सच्छ गारज ग्वालज
गोपावल्लभनामतत्तदनु यच्छीराजभागोद्भव ।

मन्वाद्यापनभागमाजनिन चागतिजान पुन

सायाह्ने शयन हरेरनुदिन होत्य च दगाष्टकं ॥२३॥

मंगल

वृ दाम्ण्यविहारिणि प्रविलसद्भास्वल्नुतावारिणि

म्नास्पन्गापञ्जुमारिकावरहृतिष्पाजा मनाहारिणि ।

कार्त्तिकदोतटचारिणि तितिनृत शृ गणु गाचारिणि

गु जाहारिणि म मन प्रविगताङ्गोवढ नादारिणि ॥२४॥

उत्सर्गस्य सुस्पर्षिमहत्पति पृथ्वामहेन्द्रा वना

वृष्टि र्भ्यमयोमवपदनुला मदप्रस्त्यणभ्रगा ।

जाती पूष्वेद्वेदाकुर पुनरसी सीष्यैश्चवृणा महा—

पुष्प मद्य एव पुत्रकववाभूपाद्रिजे रक्षित ॥२५॥

तु गावाङ्गिणा ग्यापुनरसी वम्भारिणि चित्राभ्यन

षानुवष्यममाधिताननि मुग्ग यागद्वद्धा नृप ।

मुक्त मृत्तमुत्तमृद्धमिति घो वागा मदवाट्टणा—

घो लाकारिणि त्तिपुरागन दम चित्रेण तुल्याज्जवन् ॥२६॥

ममुद्रवचन यथा भवति वै मणुब्रधना—

त्सुवणकटकप्रपतिगिति यो मृगैवाकरोन् ।

विनापि तदुवादाशान्णितानि नृमस्तदा

मुवणकटकानि वि कययोह गात्र पुन ॥२७॥

मन्मिप्रहि जगात्तिरामाण्यमी मेनुवु हद्रामक

रिगतसागरमनुरदनुततग मिटप्रभनारधर ।

सुष्योपव बुवानमूरज्जिहो नैव राधावर ।

रावेषामनित्रिमुत्तममद शिष्या प्रनिष्ठा ह्यनुत् ॥२८॥

प्रासादस्य पुरोधमा मह विधिग्राहकसवेदिना ।
 सवस्मादमरश्वरेण सुवरेण श्रायुनात नृप
 स्वाराट चित्रशिलडिजेन किमपि प्रष्टु हि विष्णु गत ॥८६॥

तस्याथास्त्वमरश्वरस्य तनयो रामस्य शक्ये पिता
 धीम्या धमतनुद्भवस्य व निभयद्वच्छतानदक ।
 राज्य पीटिकशातिकम्मविधिवच्छशी शुभस्या वह
 स्वच्छात शिवराज इत्यभिधिया राज पुराधा द्विज ॥ ९॥

साचोरद्विजनत्थुरामतनय मुत्य विधायान य—
 स्तत्प्राहित्यकृतिस्थितावनुरत सपद्विपद्वत्तमु ।
 ना यत्किञ्चन विल्लमच्युतममु हित्वेत्थमालोच्च स
 कदारेश्वरक द्विज च कृतवास्तस्मि क्यावाचक ॥९१॥

अ तर्वाशिरमदगुजरदयानदाभिधो ब्राह्मण
 श्रागौडो हि परपरागतपदा राज सुकमा तिव ।
 तेनेद सकल महाविधिविदा प्रासादजोत्सर्गिक
 राजानुग्रह भाजनेन विधिवदृत्विर्गद्विजे कारित ॥९२॥

प्रासाद शुभमदजातिममल शिल्पीशगोवद्ध नो
 भारद्वाज उचेतरामतनय सच्चिद्रूपविधापर ।
 श्राखाताद्रव्याचकार विधिवद्राजाजया सादर
 यस्यमा रत्नना विलोक्य यदधच्छ्रीविश्वकर्मा मुद ॥९३॥

विप्राग्यो व्रजलाल इत्यभिधिया श्रीमेदपाटात्यमा
 भट्टो गौज्जर उत्तमोदयपुरावास्येव पीरालिक ।
 यत्ति प्रकुलोपकारकरणप्रभ्यातकीर्तिग्र ज
 तया लालयतीनि सत्कृतिसतर वयनामाभवत् ॥९४॥

यत्पुत्रं किल कृष्णलाल उग्री कृष्णस्य सलालना—
कृष्णागम्य युवानमिह नृपन मत्पापारायणान् ।

श्रीमद्भागवनाद्भवान्पि तथा विख्यातकीर्तिश्च य—
स्तनेय रचिता प्रगतिगविना विद्वन्मुदस्तात्सदा ॥६५॥

कोश्वरेण लिखिता दगारद्विजजातिना ।
उत्कीर्णा नत्युजीवाभ्या गिपिभ्या पुनरा सदा ॥६६॥

यावत्सूरमुताद्भुता हरिरता यावच्च भागारथी
यावत्सवजगत्प्रकाशनपरी श्रीपुष्पवती स्थिता ।

यावत्सद्व्यभिचि तितितन यावत्सद्वाना जना—
स्तावत्तिष्ठतु सःप्रगतिगवितुना स्पष्टाक्षरय चिर ॥६७॥

श्रीरस्तु ॥ कस्याणमस्तु ॥ पुन नवतु ॥

परिशिष्ट सख्या ३

महाराणा अरिमिह इत रसिकचिमन

(१)

अगम इस्क के चिमन की किसकी आसग होय ।
सिर उतारि पासग करि पहुँचै बिरला कोय ॥

(२)

रे महारब इतै दिनी, खूब दिया दीदार ।
प्यारे तेरे दरस बिन पलकै लगत पहार ॥

(३)

इस्क अखाडा अजब है गजब चोट है धार ।
तन की बिनके सम गिने सा ही पावै पार ॥

(४)

इस्की इस्क सुबाब का जो पावै दुक स्वाद ।
मस्त रहै महबूब सँ खलक लखे सब बाद ॥

(५)

सिर उतार लाहू छिरक, उसही की कर कीच ।
आसिक वपरे पर रहै उसी कीच क बाच ॥

(६)

इस्क जहर की आब का, भरया बहर दरियाव ।
सिर उतारि घबनाव कर तिर जाने ती भाव ॥

(७)

अगम इस्क के पय की सुगम करे जो पार ।
निगम कहत निरघार के, तुरत मिले कस्तार ॥

(८)

घबन गमावे विकल है सबन उमी की दमि ।
फिर उमी के जिकर की, तन मन उम ही भेषि ॥

(९)

इस्क पिपला जिन पिया, सो ही पैले पार ।
इस्क बगर मज नगर है, प्रासिक कहत पुकार ॥

(१०)

कया पैगबर पाग कया, करामान कया हाइ ।
चम्म चाट से कोटि करि, जग में वने न काइ ॥

(११)

इस्क अजर दरियाव है जहे मू मो की चाल ।
नाग क नरना नरे, मिर गिरने का ग्याल ॥

(१२)

कया दरछो कया तीर कया, अजर सल मुमार ।
चम्म चाट की पनम में पुगर गद तगवार ॥

(१३)

इक बाग महबूब का तरवारयो की वार ।
तिछन घार पे पाँव धर, पुरे बिरला पार ॥

(१४)

इस्क नगर के बगर में, महलूवा के खल ।
इस्क उसी की ढाल पे चलै चस्म क सेल ॥

(१५)

इस्क पियाला जहर का, पावै विरला काय ।
पीवै सा जीवै नही जीवै (तो) गू गा हाय ॥

(१६)

जुलफ जँजोरन सँ जकर आत्मिक पकर मगाइ ।
मारि चसम की चोट में, दीने गिरद मिलाइ ॥

(१७)

भाहू कवान चढाय कँ बस मोकँ सिर साधि ।
बस मो कीने आसकन लट तसमा सँ बाधि ॥

(१८)

इस्क उसी म रम रहै, वही इस्क के बीच ।
सिर ऊपर ऋठे रहै तिनसँ निपट नगीच ॥

(१९)

गिर सँ गिरना सहल है तिरना सहल दरियाव ।
इस्क चिमन के गमन में, सिर गिरने का दाव ॥

(२०)

सहल धार तरवार की सहल सुद्धकी बात ।
मुमकल आत्मिक बेचना दिल मासूकी हात ॥

(२१)

इस्क अदालत जुल्म की चलै चस्म के तीर ।
भम्म करै बिछुरै मरै धरै न धीर सरीर ॥

(२२)

इस्क इम्न सब ही कहै इस्क जहर की प्रत ।
घडहि ममारै मिर विगर सा खेनै यह खल ॥

(२३)

इस्क चिमन का दरद यह किससँ बहियै हाय ।
क्या कियै मजनी नही जिन में हूँ जाय ॥

(२४)

इस्क पियाला ना पिया पीकर छत्रया न उवान ।
चम चाट जिनके नही व ही पसू समान ॥

(२५)

इस्क चिमन व महल का नटर भरावा'खान ।
घामक दिल मामूक का बच दिया बिन मान ॥

(२६)

इस्क उसी का नाम है किमकै मुरे न मूर ।
भागै पाछे एक दिल, सो घामिक भरपूर ॥

(२७)

जैसँ दूही जीव बिन, घाव बिना ज्यों मीन ।
त्यों घामिक मामूक बिन रहै होन त त छान ॥

(२८)

घट तैं सोस उतार घर घट पर भाग जनाव ।
फिर उम घट पर पाँव घर, घामिक नाम कहाव ॥

(२९)

मे रूमन विधि बइ सैं बँद गए मुधि भून ।
इस्क दरद व दरद का, दान लग न दून ॥

(३०)

इस्क भ्रपट की लपट में, सिर उतार धर धाड़ ।
जारे अग पतग ज्यौ तब आसिक बहवाड़ ॥

(३१)

इस्क किया मृग राग सैं दिया सीस ततकाल ।
तान मुनत उहिं प्रान की, भूल्या हाल हवाल ॥

(३२)

इस्क जहर की लहर है और न लगे उपाव ।
चस्म लगन की अगन में चस्मौ ही सियराव ॥

(३३)

चम्म तीर की पीर में, कत मीर फरीर ।
हाल मस्त पहुँचै सहा इस्क चिमन के तीर ॥

(३४)

आमिक कौ बकरी करी, लट रसरी सैं बाधि ।
चस्म छुरी गरदन धरी जहर भरी सुधि साधि ॥

(३५)

ले ले ले ले ले लगे दे दे दे जिय जान ।
इस्क चिमन मजनों भरद पहुँचै छैल पठान ॥

(३६)

गदा सब नदा करे बदा पैल पार ।
इस्क चिमन के बीच जह सकल सुधा को सार ॥

(३७)

घायल बिन उस दरद की पीर न बूझे सार ।
प्यारा प्यारा प्यार सैं प्यार ही सौं प्यार ॥

(२८)

चम्म मेल उर भेल कौ, मन सबै जो म्याल ।
इक्क चम्मन महदूब सैं, जाम मित्रै ततकाल ॥

(३०)

इक्क बडा जजाल है, इन्वी के उर सात ।
दीन मीन ज्यौ तरफरौ, जगौ चम्म की मान ॥

(४०)

घर घर घरवै घर परै, घर घर धरके आह ।
इक्क मन की रेत पै उठत कराह कराह ॥

(४१)

रहै इक्क के मत पै चहै चम्म व घाव ।
घरतै मिर उठ उठ परै परै न पोछै पाव ॥

(४२)

इक्क मसन व बसक की हान जहा उपदम ।
पाद परौ ल चन वहाँ, जहा इक्क का दस ॥

(४३)

त्रिमक राजर इक्क का, सटवै पिजर माहि ।
नृप घरसौ उन पार का ये पीरौ गम नाहि ॥

(४४)

इक्कचिम्मन इन्वीन की करुयो नागगीदाम ।
रमिकचिम्मन भरमी नृपति, नानी अधिक प्रवास ॥*

(४५)

जानम है जानम का, मानम को आधार ।
मानम मातौ शाय मै, आ घरमिय उगार ॥*

इति श्री महाराज घटगौ राजाजी वृत्त रमिकचिम्मन मयूग ॥

अन्तिम श्लोक २७ महाराजा हरिबिह के विषय एक प्रमाण २ । १३ ।

अनुक्रमशिका

विनय-माधुरी

छंदों का आदि भाग

	छंद संख्या
आनंद के बंद ब्रजचंद ब्रजपाल तुम	०८
एकलिंगनाथ भूतनाथ शृपानाथ तुम	४
एकनिग मिय सब भजि	३
करनानिधि करना करो	३१
करनानिधान तुम करना करहु मोषे	२५
करे नित पाप ही ता पाप ही ते हूवे तन	००
कसब नरायन गहरध्वज शृपानिधि	१३
कीन क मात पिता मुत बधव	२१
कीन दिसा भूम कहा जाय कीन ठौर परे	०२
कीसलकुमार राम दसरथ तात हू का	११
कीटा मुषल ममान भूत महचर सग साहन	५
गज गोध ग्राह कीर गानम की नार घर	२९
गातम की नार प्राप ग्राह कीर गज वही	०५
पटे चडे नहि तनक हू	३५
दान क दयाम बाज धनुर घनेक हू क	३०
दान सशायक विरग है	१०
	१७

धरम को छाडि अपधरम हू मे चालै नित	३२
पूरन करन सब मन के मनोरथ की	७
बालकपनें मे नित खेल में बिताये दिन	२४
बिघन टरें सब दुख हरें	३४
बिघन-हरन अति आनद-करन नित	१
बिघन-हरन सब सुख-करन	२
बिपति परें दुख कौ हरें	१४
बूढ रह्यो भवसागर मे	२६
भूपन के भूप महि मडल के मडन सु	१२
भोर साभ निस दिवस हू	३८
मास नव मात ही के उदर मे पायो दुख	२३
मूढ मतवादी अत कपटी कुचाल चलयो	४०
मूढ मतवादी क्रूर कपटी कुचाल भरयो	३०
मेरे बिसवास घनस्याम ही को सुनो तुम	१५
मे अनेक औगुन भरयो	३६
मे हीं पापी मूढ मत	१८
माहन गिरधर स्याम छबि	४३
रे मम मूढ अजान अग्यान	१६
रे मन सुनि नित बिसय में	१६
सकट टारन जय करन	६
सकट मट करी नदलाल जु	२७
सतन करत नित प्रति सुख-सपति सु	८
सपत में मिलि हैं सबें	४२
सु दर स्याम सुरूप मनोहर	६
सुख भावो चावो मुनति	२०
सो ब्रजषद किमोर हरी	३७
हानि सु लभ अरु सुख सपत	४१

श्र गार-माधुरी

अटा चनी श्रजनागरी	८६
अति अघान निन प्रत रहै	७३
अघर दग कुच नख लग	४८
अपने तन क रूप का	२४
आज कहा बिलम्पी मनमाहन	४८
आनन पे रद चद करा	२०
आय घनम्याम मर भौन अति प्यार ही सा	४०
आरतवान अघार है	५२
उद्धव आय गय ब्रज में	७
उद्धव तुम आय इहा	११
एक समे जमुना तट पे	१०१
एक समे मनभावन छैन	२७
कब मिनि है माहन अला	१०
कग्न मार अति साग	५
कहन तुमो सो श्रजवधू	१०
कीरत का तनया मनभावन	८४
कु जन बीच सरो मनभावन	२०
कु जबिहारी कु ज मै	३१
कनि क मजन मग निषमी मुजान तिय	४१
काज नही बरने घनम्याम	१८
गजन ग निछ छन तु मान स अपनना न	१५
गजन म अग मोन म	७६
गान पान रूपन बघन	२१
गजन क मित्त मै गद	२
गरत्रि पटा पपना चमकि	

घुमड घुमड घटा बरसत तू देँ तू देँ	४
घोर घटा चिहु आर चली	१
चदकिरन चदन सकल	७५
चदन चद अगार सो लागत	७०
चदमुखी मृगलाचनी	१८
चद ही तै नीकी मुख जीवन है जी की बहि	६८
चद ही सो आनन चपन नैन मोन जैसे	६६
चमकि चमकि चपला चपल	५६
छिनक हि मैं सब नगर के	२७
जमुना की तीर तहा सीतल समोर चले	७८
जा दिन तें प्रान अकुलावत है करी कहा	१००
जा दिन तें विछुरे तुम स्याम	८०
जा दिन तें विछुरे ब्रजराज	६६
जा दिन तें स्याम का वियोग भयो	६४
जीवन है मनमोहन की तुव	८६
जैमें ही मिम बात के	४८
दरग बिना मुनि सावरे	६५
नजरारे बारे घुरे	२१
नित कीकिल भौर सु सोर करे	६१
निम दिन मोहन का चैन हू न परे आली	६६
नीद की उनीदा साय रही रग भौन ही में	७६
नीद हू न आवै नैन चन हू न परे रैन	६७
नैनन जोर मरोरन भौहन	६०
नैनन पे रद कज करा अर	८२
नैनन गिलाय अति जावन जनाय आली	४२
पहने लगाय प्रीत रीत हो बताइ स्याम	१३

पाप ही क पेन मुलि रहे घनस्याम आज	३६
पावस ग्ति है अति मनी	३
प्रगट करै मुख मन हरै	२२
प्रात समै प्रपमान सुना उठि	१०२
प्रात करौ बुरवान मदा	६०
प्रातपनी चित आनद मा मन	२४
प्रातहु तँ अति बलनभ जानत	८५
प्रीतम क पाम जाय निग ही मै सुगपाय	४७
प्रातम मुजान प्रात प्यारे घनस्याम अथ	६
बात घटपटी नह की	५०
विकल करत है काम	७९
विकल भई सब ब्रजवध	६
वीत गई जुग जाम अनी यह रीत नइ	४३
वीत गई जुग जाम अना हठ छोड भद्र	५५
सूमन ही मुन रो सजना	६३
वन का वजाय प्रात मोहै मुनि ए रो भद्र	८१
ब्रजपति बिन छिन पल घरो	६६
ब्रज मै मुनि आगम उद्वन का	८
भून चले घनस्याम अजान	६८
भीहै चाप चणाय कँ	१७
मनमाहन की छवि दगि घरो	५८
मनमोहन क मिनन की	४५
मनमाहन ता भू मग	५२
मार की मुचट सीग पीन पट रात्रै बटि	७२
मोर पत्ता तिर शामिन है गर	८३
मोर पत्ता मिर शामिन है लन	६३

मोहत है सब नगर के	३६
माहत कर मुरली नही	२८
मोहन के मुख लाग रही	२७
मोहन सौ कबहू सजनी	५६
मोहन सौ मान करि बैठी प्राणप्यारी अति	५७
मोहन सुजान घनस्याम हू के चित्त बीच	२३
मोहन स्याम भये जगजीवन	१४
रावरे दरस विनु बिकल बिहाल बाल	६७
रैन दिना हिय ध्यान रहे सब	६२
लाज भरे आलस भरे	१६
श्री घनस्याम सुजान अली डिग	२६
सब ही तिया तें नित मान कौ बढावै अति	७७
सु दर सलीनी गजगौनी अबबेली तिय	८७
सु दर सलीनी गजगौनी अबबेली नारि तौ बिन	६५
सु दर सलीनी गजगौनी अबबेली नारि नेक हि	६१
सु दर सलीनी अति रूप को समुद्र सोहै	२८
सु दर सिगार करे भूपन जराय जरै	८८
सुघर सुजान स्याम नेट के निघान तुम	३२
स्याम बिना तरफै तन प्राण	६२
स्याम सचिक्कन सरल अति	२४
हुक्म अधोन रही नितप्रति मोहन के	८४
हे बडभागिन भामिनो	५१
हे बैरन तुव बसुरिया	२६
हौ जु गई जमुना तट पै	७१

अ लिप्पन में आन परी इह वान	७४
अजय अनीखी है हे गधरानो	१
अत रग भीनी री हे री वा ब्रजपत	११६
अति दुख नाहि न जात कस्यो	१२३
अब सुष लीज्यो मेगी स्याम मुजान	६६
अरज करा छा म्हाग मैल्हा भाज्यो	६
आयै भौन भौर उठ प्रीतम	८४
आया री प्रीतम चित्त वै उछाह छाया	८६
आयो बगी मह त सहेली म्हारो	१०७
आवण बीज्यो पिया मावणी तीज	८०
भावत रग भीनी री-ह री वो गिरधर	१३०
भावे छ आयै छै अलनेली	२४
उदव जानत ही तुम जा की	४५
उपी काह कहुँ बलमाय	५१
ए री कव की कहीं री ती की	२०
ए री मरे उर बिच दरद भयो री	५
ए री में कैंसी करों बसो बाज रही	३८
ए री स्याम बिन तिन कठिन जाय	६७
ए री ही अति आन भयो	१८
ऐगो को चता नहि जानै	११२
बर जोर टाठो बलबीर	१७७
बदना मेगी नाथ मुनाग	१२७
बहाँ राना पिय पाग हो ब्रज में	६३
बहा जाने पर पीर यो	१४०
बाई मांगू मान करी सुगानैणी	६७

काहि करो मनुहार म्हासू	८६
कामण कीधा छै जी नाजक नार	९४
काहे कौं रग डारें है ही	९५
कीनें बलमाय ए री सावर का	२६
केसरियो कु वर मिभमान छै	२
कैसें जाऊ कैसें जाऊ जमुना तीरे	४२
कीन परी बान तरे नैनी की	५८
क्यों डोरी मयनिया मोगी	७६
रोलन का चलिये अब सजनी	६८
खेन रह्यो नदलाल आगनिषा में	६६
गज की साय करी करतार	१००
गिरधर क्यों न गहो कर मेरी	३०
गिरधर दोस नहीं प्रभु तो मैं	८
गिरधारी गापाल मोहन बनमाली	१०५
गिरधारा गाविद गदाधर	१०४
गिरधारीजी काहे जो साह करी	३६
गोकुल आनंद मगल आज	५५
चलि आयो मन भायो मावन	१०
चलिय जु नदलाल कु जन	८३
छदगाली नद को यो छोना	११५
छाने कोठे जावा राज	१३५
जनक दरवार भरियो तहा	१२४
जमुना तट जाय स्याम बामुरी बजाई	४६
जय अबे जननी	८८
जानी मारा राज घारी रीत जानी	१०१
भूख चीन पिय मौल लियो मन	५७

टोना कहा कीनी है	- ३१
धारा मैलहा आवै छै ह व मरियो	२२
धागी धानू आवै छै ह राय प्यारी	२१८
ये म्हासी प्रात निमाज्यो जी	२१२
दरस बिना बहन तिन बीन	८१
दखी मोननी व चानै वाग	२७
नह को मानता साँचा	७०
नह व नहन अनि मुम व महन	२५
नह महर घर बजन बधार्	१७
नदवारी छगारी मापै टोनी कनी है	८३
नेनी नाद भग प्यार	२३८
परा पीर न जानन म्याम	४०
परा तो मै अजब अनोखी आन	५२
पिय साँ कबू मान न करि १।	४६
पिय मा मोन न लीबिय ग गौरो	३५
पागी मेज मुजान विचार	८५
प्याग जा क स्याम मु धीबन कम	७५
प्यागे जी म्है धारा धाबर बगम्यां	६६
प्यारा म्याम अहोर घनाया रा	२३१
प्रगट नह नहन मुन माई	२१८
प्रगटै थो जादवराई रो	२१८
बमो बजे हो जमुना तीर	४४
बगरी काठै का घर धावै	६१
बिननी मुनग्यो म्याम मुजान	२०३
बू दै बगमन मागो गाँवनिघा री	३७
बूहत मिथु गयद बगयो	२६

वैरन पायल रुनभन बाजै	६०
ब्रज तिय फली अग ना समात	५६
ब्रज में आज बधाई बजे है	१२६
ब्रज में प्रगट भयो है कम हू को काल	५६
भला बसोवारे जानी तेरी प्रीत	२६
भूल करे साँस आस	१२०
भूल मत जाज्यो जी हो	१०२
भोर हि आवन पिय इह कीनो	१०६
भोर हि भौन भले बनि आये	१०७
मन बसियो मिजमान	११३
मनमोहन ही सो तू मत कर री मन्	१०६
माने प्यारी लागे है राधे रानी	१४२
भोर पखवारी अत है नखरारो	४३
मोहन की मुरली सुनियत कान	७३
मोहन नदकुमार आजौ म्हारे	१०६
मोहन भूलत रग हिडोरे	१३
माहन मन मोह लियो मुमकाय	१२६
मोहन यो बसो बजावै प्यारी	१४७
म्हारी वैरण माहजी नै कई बस कीनो	१४६
या जग में जीवा सपना सम	५०
या ब्रज में फागन की रत आई	६४
रग हिडोरे वह भूने नदलाल हो	१८
राज कई मानो मारा पीतम प्यारा	१३२
राधारानीजी रा लोयन मन हि हरे	२१
राधेजी रे रूप लुभानो स्याम	११०
राधेजी म्हारी मन बस कीनो हो	१

रावले चरनन हू को चैरो	१२८
रो तर नैनाँ प्यार रो राव	१३६
न्दी मली रलीयावणी जी रे	३२
रे करम मै लिखियो नाहिँ मटै	६
रे मन कौन पिता भ्रम माता	१२१
रे मन बयो विसरै ब्रजराज	६१
लाज मरो रखियो रे प्रभू तुम	१२५
लाज रग्यो भ्रम स्याम बिहारी	१०८
लाही धारै है प्रतिघन मै अनुगाग	२३
सखी रो तू रग महल नलि पात्र	७७
सखी रो वहै धन वृ दादन धाम	७६
सखी विन सावरे मै	४७
सजनी प्रीतम कौ बस कर ल	७१
सजनी रजनी बानी जात	६८
साम्नी पूजन चनो रो सखी	६५
सावरो पोतम प्यारो नपारारो	३३
स्याम तुम घर घर हू ब मोत	३
हमकाँ बिसरि न जावा जोग	७
हरो का नाम जप तूँ रे	१४१
हरो बिनु कौज न पीर हरैगी	६२
हाँ राधेरानीकी रो खान मुहानी	१४३
हीरोरे भूने राधे नकुमार	१२
हे रो भ्रम वरम वरम बरिया	१४
हे बजरारै नैनाँवारी	४१
ह मोरी माद साम्नी ब त्नि घाँही	८७
हे रो ए रो पिय बब भावै रो	३४

हे री तरे गीत याग जाग	1
हे री मा मागो री भीत याग	११
हे री मे गहा गर री घा ती	११
हे री मे गैग गर गिय घटुनाम	११
हे री मे गर जगुता जायो री	७०
हे री मे कैसे जायो री	६६
हे री वह सु दर स्याम सुजान	२०
हे री विन कनी कहा स्याम मलीना	१६
हे री हे री मरी कम रडे री दह	४०
हे री हे री मौकी भूल गये घनस्याम	६२
हे री सुन वयो अब मौन गहोरी	४
हेली तेरी अजब हठीली मान	५४
हेली म्हारा मैल्हा आवसी है	११
हे मनमोहन माखन चोर	८२
हे वसुदेव ता घन तात	६०
हो जी म्हाने प्यारी जी लागे मान	७२
हो नैना कजरारे टरत न टारे	१३३
हो राधेरानीजी ये बोलो क्या ने	१४४

